आओ हिंदी सीखें – 7

(द्वितीय भाषा)

(सातवीं कक्षा के लिए)

C5Q7B7

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण : 2021-22........................ 2,22,900 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

सम्पादक : शशि प्रभा जैन
डॉ॰ सुनील बहल

चित्रकार : गुरदीप सिंह 'दीप'

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबंदी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अंतर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित तथा **मैस: मिकाडो ऑफसैट प्रिंटर्ज़, जालन्धर** द्वारा मुद्रित ।

आओ हिंदी सीखें – 7

(द्‌वितीय भाषा)

(सातवीं कक्षा के लिए)

C5Q7B7

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण : 2021-22........................ 2,22,900 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

सम्पादक : शशि प्रभा जैन
डॉ॰ सुनील बहल

चित्रकार : गुरदीप सिंह 'दीप'

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबंदी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अंतर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

मूल्य : ₹ 64.00

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित तथा **मैसः मिकाडो ऑफसैट प्रिंटर्ज़, जालन्धर** द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल-केंद्रित शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने अपने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी (द्वितीय भाषा) की पाठ्य-पुस्तकों के नवीकरण की योजना प्रवेश वर्ष 2007 से बनाई हुई है। छठी श्रेणी तक पाठ्य-पुस्तकें नवीन दृष्टिकोण के आधार पर तैयार करके लागू की जा चुकी हैं।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक-7 में पाठों का चयन बच्चों के बौद्धिक और मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया गया है। प्रत्येक पाठ किसी न किसी मानवीय मूल्य को विकसित करता है। पाठों के विस्तृत अभ्यास बच्चों की कल्पना-शीलता और सोचने-समझने की शक्ति को विकसित करने में सहायक हैं। भाषा का सम्पूर्ण ज्ञान व्याकरण के बिना अधूरा है। इस पुस्तक में व्याकरण के मूल नियमों को अत्यंत सरल एवं सहज उदाहरणों के द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है। पाठ्य-पुस्तक को आकर्षक रूप देने में चित्रकार गुरदीप सिंह 'दीप' ने अपनी कलात्मक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए खूबसूरत चित्र तैयार किये हैं जो बच्चों में पुस्तक के प्रति रोचकता बढ़ाने में सहायक होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों में हिंदी भाषा का ज्ञान देने में सहायक सिद्ध होगी। फिर भी पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से आये सभी सुझाव बोर्ड द्वारा आदर सहित स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरमैन
पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय - सूची

पाठ संख्या	पाठ	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	भारत के कोने-कोने से	डॉ॰ हरिवंशराय बच्चन	1-4
2.	परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है	संकलित	5-11
3.	रक्तदान-एक बहुमूल्य संस्कार	महेश कुमार शर्मा	12-17
4.	फूल और काँटा	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	18-20
5.	हार की जीत	सुदर्शन	21-27
6.	राष्ट्र के गौरव प्रतीक	सुधा जैन 'सुदीप'	28-34
7.	आ री बरखा	डॉ॰ राकेश कुमार बब्बर	35-38
8.	विजय दिवस	डॉ॰ मीनाक्षी वर्मा	39-44
9.	स्वराज्य की नींव	शिव शंकर	45-51
10.	बढ़े चलो, बढ़े चलो	सोहन लाल द्विवेदी	52-54
11.	धीरा की होशियारी	'कुछ और कहानियाँ' में से	55-59
12.	अशोक का शस्त्र-त्याग	संकलित	60-66
13.	साक्षरता अभियान	डॉ॰ कमलेश बंसल	67-70
14.	गिल्लू	महादेवी वर्मा	71-77
15.	धर्मशाला	डॉ॰ मीनाक्षी वर्मा	78-82
16.	कोई नहीं बेगाना	डॉ॰ योगेन्द्र बख्शी	83-87
17.	अन्याय के विरोध में	एंतन चेखव	88-92
18.	सड़क सुरक्षा-जीवन रक्षा	डॉ॰ सुनील बहल	93-100
19.	दोहावली	संत कबीर	101-102
20.	मैं जीती	'कुछ और कहानियाँ' में से	103-108

पाठ-1

भारत के कोने-कोने से

भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आए हैं।
नई उमंगों-आशाओं का हम संदेशा लाए हैं॥

हम गिरि की ऊँचाई लाए,
हम सागर की गहराई,
हम पूरब से आए, लाए
प्रात: किरण की अरुणाई।

भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आए हैं।
नई उमंगों-आशाओं का हम संदेशा लाए हैं॥

हम पश्चिम से आए, लाए
आग-राग राजस्थानी
हम लाए हैं गंग-जमुन के
संगम का निर्मल पानी।

भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आए हैं।
नई उमंगों-आशाओं का हम संदेशा लाए हैं॥

कल आने वाली दुनिया में
हम कुछ कर दिखलाएँगे,
भारत के ऊँचे माथे को
ऊँचा और उठाएँगे।
भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आए हैं।
नई उमंगों-आशाओं का हम संदेशा लाए हैं॥

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਭਾਰਤ	=	भारत	ਪਾਣੀ	=	पानी
ਬੱਚੇ	=	बच्चे	ਗੰਗਾ	=	गंगा
ਸੰਦੇਸ਼ਾ	=	संदेशा	ਪੂਰਬ	=	पूरब
ਦੁਨੀਆ	=	दुनिया	ਕਿਰਨ	=	किरण

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਸਮੁੰਦਰ	=	सागर	ਲਾਲੀ	=	अरुणाई
ਸਾਫ਼	=	निर्मल	ਅੱਗ	=	आग
ਸਵੇਰਾ	=	प्रात:	ਆਸ	=	आशा
ਪਰਬਤ	=	गिरि	ਮੇਲ	=	संगम

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) गीत गाने वाले बच्चे कहाँ से आये हैं ?
(ख) 'भारत के कोने-कोने से' कविता में बच्चे क्या संदेश लेकर आये हैं ?
(ग) कविता में 'गिरि' और 'सागर' का क्या अर्थ है ?
(घ) बच्चे अपने देश के लिए क्या करना चाहते हैं ?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) 'नई उमंगों-आशाओं' से कवि का क्या भाव है ?
(ख) 'कल आने वाली दुनिया में
हम कुछ कर दिखलायेंगे,
भारत के ऊँचे माथे को
ऊँचा और उठायेंगे।'
इन काव्य-पंक्तियों की प्रसंग सहित व्याख्या करें।

5. भाववाचक संज्ञा बनायें :-

ऊँचा = ऊँचाई

गहरा = ________

अरुण = ________

6. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद करें :-

भारत : भ् + आ + र् + अ + त् + अ

गिरि : -- + -- + -- + --

राजस्थानी : -- + -- + -- + -- + -- + -- + -- + -- + -- + --

दुनिया : -- + -- + -- + -- + -- + --

संदेशा : -- + -- + -- + -- + -- + -- + -- +

निर्मल : -- + -- + -- + -- + -- + -- + -- + --

7. समान अर्थ वाले शब्द लिखें :-

गिरि	=	पर्वत	माथा	=	________
सागर	=	________	किरण	=	________
संदेशा	=	________	पानी	=	________
दुनिया	=	________	प्रातः	=	________

8. बहुवचन रूप लिखें :-

आशा	=	________	ऊँचा	=	________
उमंग	=	________	कोना	=	________
संदेश	=	________	बच्चा	=	________

9. नीचे दी गई पंक्तियों को पूरा करें :-

(1) हम गिरि की ________

(2) हम सागर की ________

(3) हम पश्चिम से आए, लाए

____

(4) हम लाए हैं गंग-जमुन के

____

10. पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण क्षेत्रों में स्थित दो-दो राज्यों के नाम लिखें :-

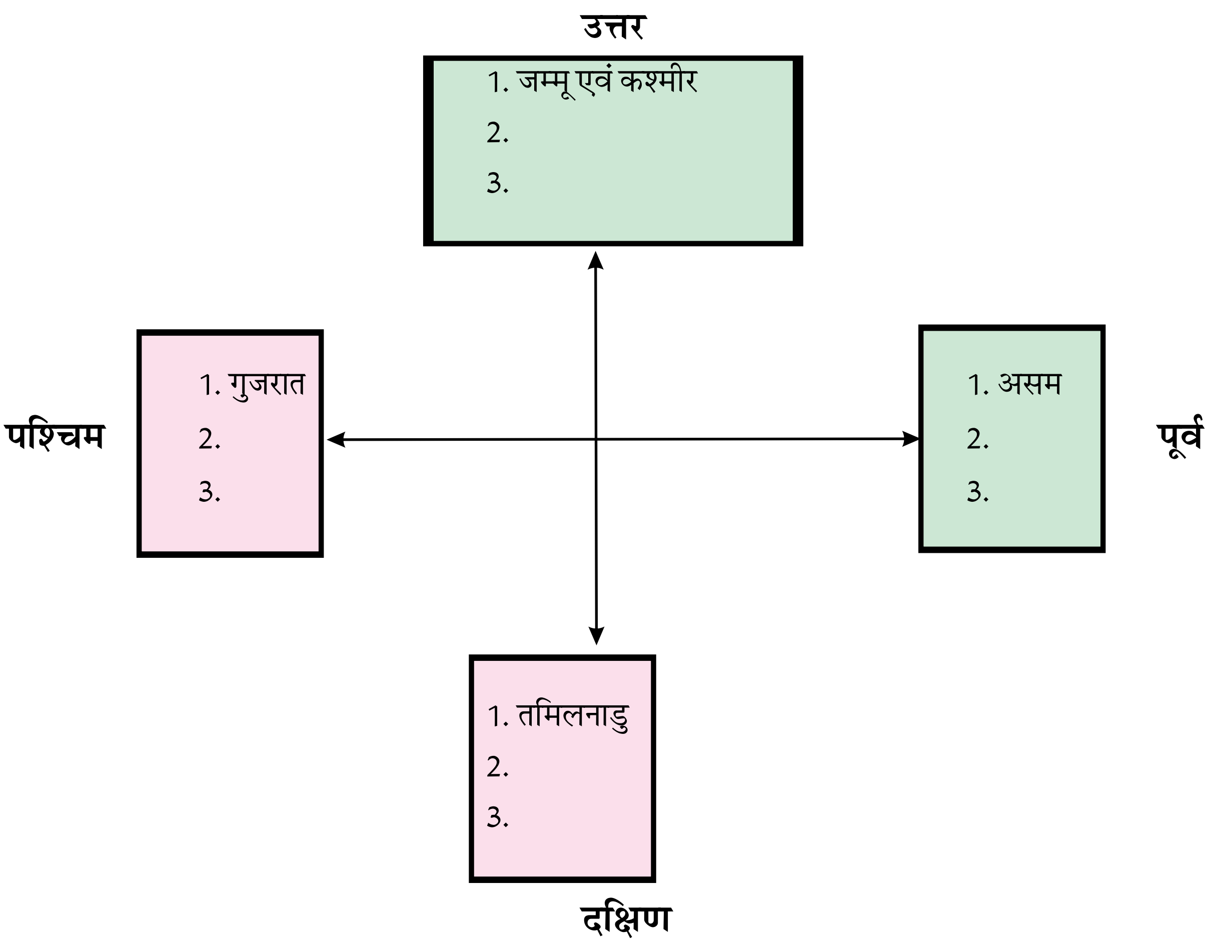

पाठ 2

परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है

किसी समय किसी देश में शूरसेन नामक राजा हुआ करता था। वह अपनी संतान के समान प्रजा का पालन करता था। सुमति नामक उसके मंत्री का परमात्मा पर अटूट विश्वास था। 'परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है' वह ऐसा मानता भी था और इस पर अमल भी करता था। कोई भी बुरी घटना उसको डाँवाडोल नहीं कर सकती थी।

एक बार संयोग से राजा की उँगली पर फोड़ा निकल आया। पीड़ा से बेचैन होकर उसने मंत्री को बुला भेजा। मंत्री ने दर्द से बेहाल राजा को भी 'परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है' यही शब्द कहे। राजा सोचने लगा —यह मंत्री कितना पत्थर-दिल है। इस हालत में भी मुझ पर दया नहीं करता।

कुछ समय बाद रोग के बढ़ जाने पर राजा की उँगली गल गई। उसकी उँगली का गला भाग काटना पड़ा। वह अपने जीवन के बारे में निराश हो गया। उसने फिर मंत्री को बुला भेजा। मंत्री ने इस बार भी वही पुराना विश्वास दोहराया। क्रोध से जलभुन कर राजा ने सोचा- 'अरे यह दुष्ट मंत्री बहुत ही कृतघ्न है। स्वस्थ हो जाने पर मैं अवश्य ही इसको मौत के घाट उतार दूँगा।'

आखिर राजा रोगहीन हो गया और पहले की तरह राज्य का काम-काज करने लगा। एक दिन उसकी शिकार खेलने की इच्छा हुई जिसके प्रबंध के लिए उसने मंत्री को कहा। मंत्री ने भी स्वामी की आज्ञा अनुसार सभी प्रबंध कर दिये।

राजा घोड़े पर सवार होकर मंत्री और बहुत से सेवकों को साथ लेकर जंगल की ओर निकल पड़ा। जब वह घने जंगल में पहुँच गया तो उसने सेवकों को वहीं ठहर जाने का आदेश दिया और मंत्री को साथ लेकर भयानक जंगल के बीचों-बीच चल पड़ा। घूमते-घूमते जब वे एक कुएँ के पास से गुज़रे, राजा अपने मन में विचार करने लगा ----- इससे अच्छा मौका कहाँ मिलेगा? प्यास का बहाना बनाकर इसे कुएँ से जल लाने की आज्ञा देता हूँ और ज्यों ही यह जल निकालने के लिए नीचे की ओर झुकेगा, मैं इसे कुएँ में गिरा दूँगा।

राजा ने जैसा सोचा था वैसा ही कर दिखाया। मंत्री ने गिरते-गिरते भी वही पुराने शब्द दोहराए-'परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है।'

इतने में सूर्य देवता अपनी किरणें समेट कर अस्त हो गए। राजा को जंगल से बाहर निकलने का मार्ग नहीं सूझ रहा था। जंगली जानवर चारों ओर घूमने शुरू हो गए थे। आखिर थका-हारा राजा, डर का मारा, एक वृक्ष पर चढ़ कर जा छिपा। उसने घोड़े को पहले ही वृक्ष के नीचे बाँध दिया था।

अब रात काफी घनी हो चुकी थी। इतने में किसी दूसरे राजा के सैनिकों का एक बहुत बड़ा दल उस भयानक जंगल में घुस आया। घोड़े को वृक्ष के साथ बँधा देखकर उनको विश्वास हो

गया कि इसका सवार भी अवश्य ही आस-पास छिपा बैठा होगा। वे लोग मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे कि यदि कोई मनुष्य उनके हाथ लग जाएगा तो वे उसे प्रात:काल राजा के पास ले जायेंगे। राजा चामुण्डा देवी को उसकी बलि चढ़ा कर अपना संकल्प पूरा कर लेगा और उनके कर्त्तव्य का पालन भी हो जाएगा।

पलभर में उनमें से एक सैनिक वृक्ष पर जा चढ़ा और राजा को बाँध कर नीचे उतार लाया। राजा को घोड़े पर बिठा कर वे सभी लोग विजय के गीत गाते हुए अपने देश की ओर चल पड़े और हाथ लगे शिकार को अपने स्वामी की सेवा में हाज़िर कर दिया।

अब बलि देने की तैयारियाँ शुरू हो गईं। अभी जल्लाद ने तलवार उठाई ही थी कि राजा की नज़र बलि-जीव के कटे हुए अंग पर जा टिकी। राजा हैरान होकर चिल्ला उठा — अरे पापियो ! यह क्या कर डाला? तुम नहीं जानते कि अंगहीन मनुष्य की बलि नहीं दी जाती। तो हटाइए इसे यहाँ से।' फिर क्या था। राजा शूरसेन अपने प्राणों की खैर मनाता हुआ वहाँ से तत्काल निकल भागा।

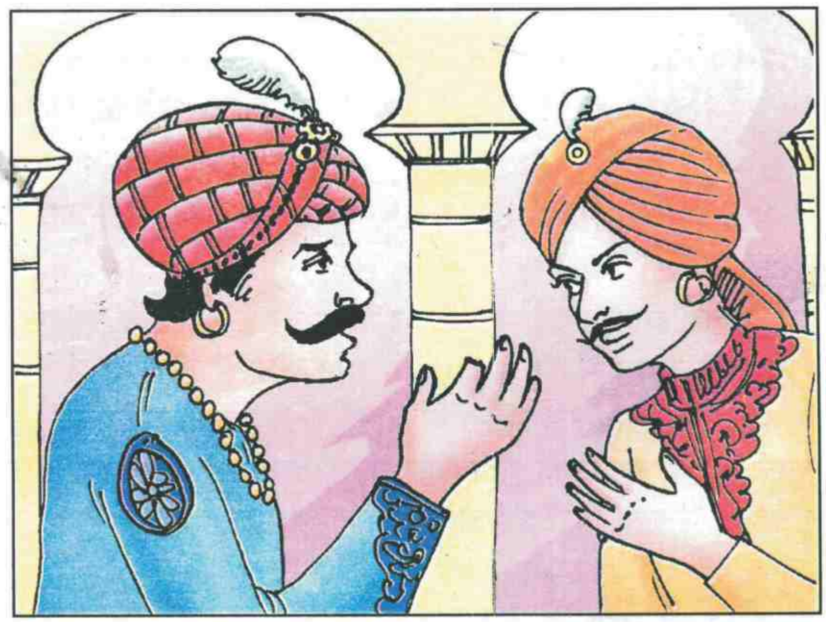

राजधानी लौटते हुए मार्ग में राजा के विचारों ने पलटा खाया। सोचने लगा कि मंत्री के इस विश्वास को कि 'परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है,' मैंने भली-भाँति परख लिया है। अंगहीन होने के कारण ही मेरी जान बची है। अब मैं शीघ्र ही अपने नेकदिल मंत्री के पास जाता हूँ। नाहक उसकी हत्या करके मैंने घोर अपराध किया है। क्या वह अब भी जीवित है? चलकर देखता हूँ।

कुएँ के पास पहुँच कर वह ज़ोर से पुकारने लगा। हे धर्मात्मा बंधुवर! क्या तुम अब भी ज़िंदा हो? राजा के वचन सुनकर मंत्री ने उत्तर दिया-'राजन् ! मैं कुएँ में मृत्यु-तुल्य जीवन बिता रहा हूँ। इच्छा हो तो मुझे निकालिए।'

राजा ने मंत्री को कुएँ से बाहर निकाला। बार-बार अपना दोष स्वीकार करते हुए उससे क्षमा माँगी। मंत्री ने कहा, महाराज! परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है। मेरा कुँए में गिरना भी एक शुभ लक्षण था। अंगहीन होने के कारण आप तो बच जाते परंतु मुझ भले-अच्छे मनुष्य का मौत से छुटकारा पाना संभव न होता।' इसलिए मानना पड़ता है कि यह सब कुछ परमात्मा ने भलाई के लिए ही किया है।

अन्त में प्रसन्नतापूर्वक दोनों राजधानी लौट आये।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਸ਼ੂਰਸੇਨ	=	शूरसेन	ਵਿਸ਼ਵਾਸ	=	विश्वास
ਸੰਤਾਨ	=	संतान	ਘਟਨਾ	=	घटना
ਪਰਮਾਤਮਾ	=	परमात्मा	ਆਗਿਆ	=	आज्ञा
ਪੱਥਰ	=	पत्थर	ਮੰਤਰੀ	=	मंत्री
ਜਲਾਦ	=	जल्लाद	ਅੰਗਹੀਣ	=	अंगहीन

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਨਿਰੋਗ	=	रोगहीन	ਦਰੱਖ਼ਤ	=	वृक्ष
ਕ੍ਰਿਤਘਣ	=	कृतघ्न	ਬਲੀ ਦਾ ਬਕਰਾ	=	बलि-जीव
ਐਂਵੇਂ	=	नाहक	ਮੌਤ ਬਰਾਬਰ	=	मृत्यु-तुल्य
ਖੂਹ	=	कुआँ	ਭਰਾ ਵਰਗਾ	=	बंधुवर
ਛੁਪਣਾ	=	अस्त	ਖਿਮਾ	=	क्षमा

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) सुमति कौन था?

(ख) सुमति किस बात पर विश्वास करता था?

(ग) राजा शूरसेन शिकार खेलने कहाँ गया?

(घ) राजा ने मंत्री से बदला लेने का क्या उपाय सोचा?

(ङ) राजा ने अपने घोड़े का कहाँ बाँधा?

(च) घोड़े को वृक्ष के साथ बँधा देखकर सैनिकों ने क्या सोचा?

(छ) सैनिक राजा शूरसेन को क्यों पकड़ना चाहते थे?

(ज) राजा के प्राण कैसे बचे?

(झ) राजा ने मंत्री को कुँए से कब निकाला?

(ञ) राजा ने किससे क्षमा माँगी और क्यों?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) राजा अपने जीवन से निराश क्यों हो गया था?

(ख) कुँए के पास से गुज़रते हुए राजा ने क्या सोचा?

(ग) राजा की बलि क्यों नहीं दी जा सकती थी?

(घ) 'मुझ भले-अच्छे मनुष्य का मौत से छुटकारा पाना संभव न होता' मंत्री के इस कथन को स्पष्ट करें।

(ङ) इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

5. कहानी में घटी घटनाओं के क्रम बॉक्स में अंकों में लिखो :-

[ ] बार-बार अपना दोष स्वीकार करते हुए राजा ने मंत्री से क्षमा माँगी।

[ ] राजा की उँगली पर फोड़ा निकल आया।

[1.] राजा मंत्री और बहुत-से सेवकों को साथ लेकर जंगल की ओर निकल पड़ा।

[ ] मंत्री ने दर्द से बेहाल राजा को कहा कि परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है।

[ ] राजा ने मंत्री को कुँए से बाहर निकाला।

[ ] दूसरे राजा के सैनिकों ने राजा को पकड़ लिया और अपने स्वामी की सेवा में हाज़िर कर दिया।

[ ] राजा ने अपने मंत्री को कुँए में धक्का दे दिया।

[ ] दूसरे राजा ने अंगहीन होने के कारण राजा की बलि देने से इंकार कर दिया।

[ ] राजा को जंगल से बाहर निकलने का मार्ग नहीं सूझ रहा था।

[ ] राजा शूरसेन अपने प्राणों की खैर मनाता हुआ वहाँ से तत्काल निकल भागा।

6. किसने कहा, किससे कहा?

	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) अरे पापियो! यह क्या कर डाला?	________	________
तुम नहीं जानते कि अंगहीन मनुष्य की बलि नहीं दी जाती।	________	________
(ख) परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है।	________	________
(ग) हे धर्मात्मा बंधुवर ! क्या तुम अब भी ज़िंदा हो?		
(घ) मेरा कुँए में गिरना भी एक शुभ लक्षण था।	________	________

7. इन शब्दों और मुहावरों के अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

पत्थर दिल _______ ____

रोगहीन _______ ____

थका-हारा _______ ____

नेकदिल _______ ____

शुभ लक्षण _______ ____

मौत के घाट उतारना ________ ____
संकल्प पूरा करना ________ ____
प्राणों की खैर मनाना ________ ____
मृत्यु-तुल्य जीवन बिताना ________ ____
जल भुनना ________ ____

8. इन शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें :-

जीवित = **मृत**
भलाई = ______
अस्त = ______
प्रात:काल = ______
कृतघ्न = ______
शुभ = ______
रोगहीन = ______
दोष = ______
स्वामी = ______
इच्छा = ______

9. इन शब्दों के दो-दो समानार्थक शब्द लिखें :-

राजा = **नृप, भूपति**
परमात्मा = ______, ______
घोड़ा = ______, ______
सेवक = ______, ______
रात = ______, ______
जंगल = ______, ______
वृक्ष = ______, ______
तलवार = ______, ______

10. नये शब्द बनायें :-

धर्म + आत्मा = **धर्मात्मा** भला + आई = **भलाई**
परम + आत्मा = ________ अच्छा + आई = ________

11. इन शब्दों के शुद्ध रूप लिखें :-

कृतघन = ________
चूमुण्डा = ________
पतथर = ________

डावाडोल = ________
कुआ = ________
सैनीक = ________

प्रयोगात्मक व्याकरण

1. (क) (i) जल्लाद ने तलवार उठायी।

(ii) सैनिकों ने राजा को पकड़ लिया।

पहले वाक्य में जल्लाद ने क्या उठायी? उत्तर–'तलवार'। 'तलवार' कर्म है। इसलिए यह सकर्मक क्रिया है। इसी तरह दूसरे वाक्य में सैनिकों ने किसे पकड़ लिया? उत्तर–राजा को। 'राजा को' कर्म है। इसलिए यह भी सकर्मक क्रिया हे।

अतएव जिस क्रिया में कर्म होता है, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है।

(ख) (i) राजा चिल्ला रहा था।

(ii) सैनिक चल पड़े।

उपर्युक्त वाक्यों में केवल कर्त्ता (राजा, सैनिक) तथा क्रिया (चिल्ला रहा था, चल पड़े) का, प्रयोग किया गया है। यहाँ कर्म नहीं है। इसलिए यहाँ अकर्मक क्रिया है।

अतएव जिन क्रियाओं में कर्म नहीं होता, वह अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

सकर्मक एवं अकर्मक क्रिया की पहचान

सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया की पहचान करने के लिए वाक्य में आई क्रिया पर 'क्या', 'किसे' या 'किसको' लगाकर प्रश्न किया जाये। **यदि उत्तर में कोई व्यक्ति या वस्तु आए, तो क्रिया सकर्मक होगी अन्यथा क्रिया अकर्मक होगी।** जैसे :-

जल्लाद ने क्या उठायी? उत्तर मिलता है– 'तलवार'। इसी तरह सैनिकों ने किसे पकड़ लिया? उत्तर मिलता है– राजा को। अतएव ये सकर्मक क्रियाएँ हैं किंतु 'ख' भाग के दोनों वाक्यों में प्रश्न करें तो उत्तर नहीं मिलता। जैसे–

राजा क्या चिल्ला रहा था? तथा सैनिक क्या चल पड़े? यहाँ प्रश्न ही अटपटा लगता है। यहाँ 'चिल्ला रहा था' तथा 'चल पड़े' क्रियाएँ कर्म की अपेक्षा नहीं रखतीं, अत: ये अकर्मक क्रियाएँ हैं।

2. (क) सेवक चला गया।

(ख) सेविका चली गयी।

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'क' उदाहरण में क्रिया का कर्त्ता पुल्लिंग (सेवक) है, अत: क्रिया भी पुल्लिंग (चला गया) है जबकि दूसरे वाक्य में 'ख' उदाहरण में क्रिया का कर्त्ता स्त्रीलिंग (सेविका) है अत: क्रिया भी स्त्रीलिंग (चली गयी) है।

अतः लिंग में परिवर्तन के कारण क्रिया में भी परिवर्तन हुआ।

इस प्रकार– संज्ञा शब्दों की तरह क्रिया शब्दों के भी दो लिंग होते हैं। **1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग।**

3. (क) राजा जंगल की ओर निकल पड़ा।

(ख) वे (राजा और मंत्री) जंगल की ओर निकल पड़े।

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'क' उदाहरण में कर्त्ता (राजा) एक वचन है, अतः क्रिया भी एक वचन (निकल पड़ा) प्रयुक्त हुई है तथा दूसरे वाक्य में कर्त्ता 'वे' बहुवचन है, अतः क्रिया भी बहुवचन (निकल पड़े) प्रयुक्त हुई है।

अतः वचन बदलने पर क्रिया का रूप भी बदल जाता है।

इस प्रकार क्रिया शब्दों के दो वचन होते हैं। **1. एकवचन 2. बहुवचन।**

- ***परमात्मा पर विश्वास रखते हुए सभी काम ईमानदारी से करो।***
- ***किसी को धोखा न दो।***
- ***किसी का बुरा मत करो।***

रक्तदान-एक बहुमूल्य संस्कार

भारत की सभ्यता एवं इतिहास इस बात का साक्षी है कि यहाँ के लोगों में दान का संस्कार प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। आज के आधुनिक एवं वैज्ञानिक युग में भी यह संस्कार काफी हद तक विद्‌यमान है। हमें अपने समाज में दान के संकल्प का ज्ञान किसी दरिद्र को भोजन या कुछ धन देने , धार्मिक स्थानों पर चढ़ावा चढ़ाने, धार्मिक समागमों पर पैसे या खाद्‌य-सामग्री आदि देने, कन्या-दान, विद्‌या-दान, किसी समाज-सेवी संस्था को योगदान देने आदि के रूप में दिया जाता है। इस प्रकार के दान देने वाले व्यक्ति को समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इस तथ्य में कोई शंका नहीं कि किसी को दान देने से मन आनंद और शांति से पुलकित हो उठता है। लेकिन किसी को जीवनदान देना ही इस संसार में सर्वोत्तम दान है। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि क्या हम किसी को जीवनदान दे सकते हैं? हाँ, निस्संदेह दे सकते हैं। आवश्यकता के समय किसी को अपना थोड़ा-सा रक्त देकर हम उसके प्राणों की रक्षा कर सकते हैं। सही मायनों में रक्तदान वह बहुमूल्य दान है, जिसके आगे सभी दान तुच्छ पड़ जाते हैं। क्योंकि इस पूरी सृष्टि में मानव ही रक्तदान द्‌वारा दूसरे मानव की जीवन रक्षा करने में सक्षम है।

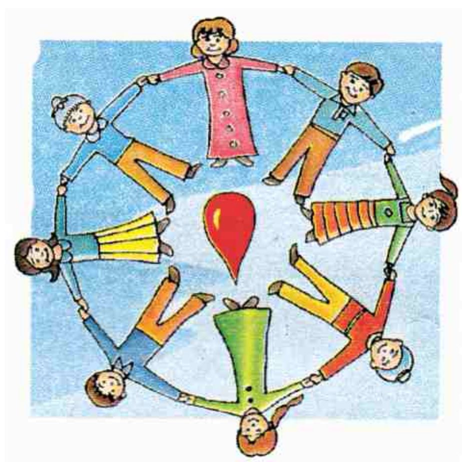

आज के आधुनिक युग ने जहाँ हमारे जीवन को अत्यंत सुखदायी व गतिशील बना दिया है वहीं प्रतिदिन दुर्घटनाएँ न जाने कितनों के प्राण हर लेती हैं और कितने ही अपनी जीवन-रक्षा के लिए अस्पतालों में साँसों से संघर्ष कर रहे होते हैं। दूसरी ओर अनभिज्ञता, प्रदूषण और गिर रहे नैतिक मूल्यों के परिणामस्वरूप एक से बढ़कर एक घातक बीमारी ने लोगों को अपनी चपेट में लेना शुरू कर दिया है। बहुत-सी बीमारियाँ जिनको हमने पहले कभी सुना भी न था, आज विकराल रूप धारण कर चुकी हैं। जैसे-कैंसर, एड्‌स, डेंगू, ड्राप्सी, हैपेटाइटस आदि। इन बीमारियों, दिन-प्रतिदिन की दुर्घटनाओं और बड़े आप्रेशनों के लिए भारत में प्रतिवर्ष लगभग अस्सी लाख यूनिट से भी अधिक रक्त की आवश्यकता पड़ती है जबकि बीस लाख यूनिट रक्त ही जुट पाता है। आप

आसानी से अनुमान लगा सकते हैं कि कितने रोगी प्रतिवर्ष केवल समय पर रक्त न मिलने के कारण ही प्राणों से अकारण हाथ धो बैठते हैं।

हम लोगों में इतनी चेतना और ज्ञान नहीं कि समय पर किसी के लिए रक्तदान करें ताकि उस व्यक्ति की प्राण-रक्षा की जा सके। अगर हम विचार करें कि उचित समय पर हम किसी ज़रूरतमंद को रक्तदान नहीं करते या विपत्ति के समय रक्तदान में पहल नहीं करते तो इसमें केवल हमारा ही दोष नहीं है, क्योंकि हमें अभिभावकों से रक्तदान जैसा बहुमूल्य संस्कार अल्पमात्र ही प्राप्त होता है। इसके विपरीत यदि कोई बच्चा अपने निर्णय या किसी की प्रेरणा से किसी रक्तदान शिविर में रक्तदान कर देता है तो उसे घर जाने पर पारितोषिक या शाबाशी के स्थान पर कटुशब्द और फटकार को ही सुनना पड़ता है। अभिभावक बड़े होने का दावा तो करते हैं, पर अज्ञानतावश किसी भी तर्क संगत विचार को सुनने को तैयार नहीं होते। इसका मुख्य कारण आम लोगों का अशिक्षित होना और उनमें भाँति-भाँति के भ्रमों से युक्त रूढ़िवादी विचारों का होना ही है। हमारे समाज में साधारण क्या, शिक्षित वर्ग का भी काफी बड़ा भाग इस प्रमाणित तथ्य को मानने से आनाकानी करता है कि सुरक्षित रक्तदान करने से हमारे शरीर में न तो कोई कमज़ोरी आती है और न ही कोई बीमारी लगती है। इन हालातों में यह उम्मीद लगाना कि वे अपने बच्चों को रक्तदान जैसे बहुमूल्य संस्कार देंगे, एक व्यर्थ-सी बात लगती है। इसके विपरीत हमें ऐसे महान व्यक्तियों के भी उदाहरण मिलते हैं, जिन्होंने दस, बीस, पचास या फिर सौ से भी अधिक बार स्वैच्छिक रक्तदान किया है। परन्तु ऐसे व्यक्ति हमारे समाज में बहुत कम हैं।

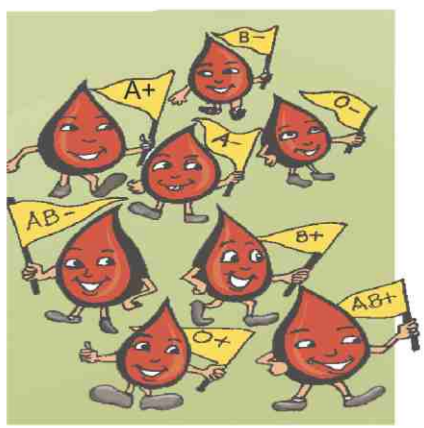

लोगों में रक्तदान एक संस्कार के रूप में न विकसित होने के पीछे उनकी अवैज्ञानिक सोच भी ज़िम्मेवार है। प्रत्येक समय हर ब्लड-ग्रुप की निरंतर आवश्यकता रहती है। ब्लड-ग्रुप (रक्त-समूह) ए-पॉज़िटिव, ए-नेगिटिव, बी-पॉज़िटिव, बी-नेगिटिव, ए-बी-पॉज़िटीव, ए-बी-नेगिटिव, ओ-पॉज़िटिव और ओ-नेगिटिव आठ प्रकार के होते हैं। पॉज़िटिव-ग्रुपों की अपेक्षा नेगिटिव ग्रुप संख्या में बहुत कम होने के कारण उनकी उपलब्धता भी कठिन होती है। यह बात भी नितांत ज़रूरी

है कि हमें अपने ब्लड-ग्रुप की भी जानकारी होनी चाहिए। हमें हमेशा अपने-आप को रक्तदान के लिए तैयार रखना चाहिए, क्योंकि इंसान को केवल इंसान का ही रक्त दिया जा सकता है। एक स्वस्थ व्यक्ति जिसकी आयु 18 वर्ष से 60 वर्ष और वज़न 35 किलोग्राम से कम न हो, प्रत्येक तीन महीने बाद आसानी से स्वैच्छिक रक्तदान कर सकता है। आमतौर पर यह सुनने को मिलता है कि मुझमें तो रक्त की कमी है, मैं कैसे रक्त दे सकता हूँ। रक्तदान करने से पहले डॉक्टर रक्त देने वाले की रक्त-संबंधी जाँच करते हैं और सही पाए जाने पर ही उचित-मात्रा में रक्तदान करवाया जाता है। रक्तदान में केवल पाँच से दस मिनट लगते हैं। इससे शरीर पर किसी प्रकार का कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। हम रक्तदान के पश्चात अपने सारे कार्य दिनचर्या अनुसार पुनः आम दिनों की भाँति ही कर सकते हैं।

यहाँ इस बात का ध्यान रखना अति अनिवार्य है कि किस व्यक्ति को रक्तदान नहीं करना चाहिए। उन व्यक्तियों को रक्तदान नहीं करना चाहिए जो किसी संक्रमित रोग से पीड़ित हों, जिनको पीलिए की बीमारी के बाद कम से कम चार वर्ष न हुए हों, गर्भवती महिलाओं को, जिनकी सर्जरी (शल्य चिकित्सा) को कम से कम एक वर्ष न हुआ हो और जिस व्यक्ति को रक्तदान किए तीन महीने न हुए हों। किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को भी रक्तदान नहीं करना चाहिए। अगर किसी व्यक्ति ने मदिरा का सेवन किया हो तो वह 24 घंटे बाद ही रक्तदान कर सकता है।

बस एक बार अपने मन को तैयार करने की आवश्यकता है, फिर आपका भय दूर हो जाएगा और आप खुद तो रक्तदान करेंगे ही साथ में दूसरों को भी स्वैच्छिक रक्तदान के लिए प्रेरित करेंगे। याद रखें, **सभी दानों में सर्वोत्तम रक्तदान ही है।**

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਸਭਿਅਤਾ	=	सभ्यता	ਦੁਰਘਟਨਾ	=	दुर्घटना
ਇਤਿਹਾਸ	=	इतिहास	ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ	=	प्रदूषण
ਧਾਰਮਿਕ	=	धार्मिक	ਚੇਤਨਾ	=	चेतना

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-

ਗਵਾਹ	=	साक्षी	ਲੋੜਮੰਦ	=	ज़रूरतमंद
ਖੂਨਦਾਨ	=	रक्तदान	ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ	=	अभिभावक
ਕੀਮਤੀ	=	बहुमूल्य	ਇਨਾਮ	=	पारितोषिक
ਸਮਰਥ	=	सक्षम	ਅਣਪੜ੍ਹ	=	अशिक्षित

3. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) आमतौर पर दान का अर्थ किस रूप में लिया जाता है ?

(ख) सर्वोत्तम दान कौन-सा है ?

(ग) एक मानव दूसरे मानव की जीवन रक्षा कैसे कर सकता है ?

(घ) रक्त की ज़रूरत कब पड़ती है ?

(ङ) रक्त समूह कितने प्रकार के होते हैं ?

(च) किन व्यक्तियों को रक्तदान नहीं करना चाहिए ? पाठ के आधार पर उत्तर दें।

(छ) रक्तदान करने से शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

4. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) रक्तदान को एक संस्कार के रूप में क्यों नहीं विकसित किया जा सका ?

(ख) स्वैच्छिक रक्तदान से आप क्या समझते हैं ?

(ग) क्या रक्तदान करने वाले व्यक्ति की आयु, भार और स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा जाता है ? यदि हाँ, तो समस्त बातों को लिखें।

(घ) आपने कई स्थानों पर रक्तदान शिविर लगा देखा होगा। वहाँ पर जाकर डॉक्टर/नर्स से इस प्रक्रिया को समझें और अपनी डायरी में नोट करें।

5. **नये शब्द बनायें :-**

सर्व + उत्तम = सर्वोत्तम   सर्व + ________ = ________

अन + भिज्ञ = ________   अन + ________ = ________

6. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिख कर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें :-**

प्राणों की रक्षा करना ________ ________________________________

तुच्छ पड़ जाना ________ ________________________________

प्राण हर लेना ________ ________________________________

अपनी चपेट में लेना ________ ________________________________

हाथ धो बैठना ________ ________________________________

आनाकानी करना ________ ________________________________

7. **'ता' शब्दांश लगाकर भाववाचक संज्ञा बनायें :-**

आधुनिक + ता = ________   आवश्यक + ता = ________

अनभिज्ञ + ता = ________   अज्ञान + ता = ________

8. **नीचे रक्तदान से जुड़े कुछ वाक्य दिये गये हैं। उन पर सही (✓) या गलत (X) का चिह्न लगायें :-**

(क) कितने रोगी प्रतिवर्ष केवल समय पर रक्त न मिलने के कारण ही प्राणों से अकारण हाथ धो बैठते हैं। ☐

(ख) सभी लोगों को रक्तदान के बारे में पूरी जानकारी होती है। ☐

(ग) प्रत्येक व्यक्ति को अपना ब्लड-ग्रुप पता होना चाहिए। ☐

(घ) इन्सान को केवल इंसान का ही रक्त दिया जा सकता है। ☐

(ङ) स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति पर सुरक्षित रूप से रक्तदान करने पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ☐

9. अंतर समझें :-

खाद	:	सड़ा-गलाकर बनाई गयी गोबर
खाद्य	:	खाने योग्य
सम्मान	:	इज़्ज़त
समान	:	बराबर
सामान	:	वस्तुएँ, सामग्री
जहाँ	:	जिस जगह
जहां (जहान)	:	संसार, लोक
हालत	:	परिस्थिति, वर्तमान स्थिति, अवस्था, दशा
हालात	:	परिस्थितियाँ, स्थितियाँ
दवा	:	दवाई
दावा	:	अधिकार, हक, न्याय हेतु न्यायालय में दिया गया प्रार्थना-पत्र
परितोषक	:	संतुष्ट या खुश करने वाला
पारितोषिक	:	इनाम
कॉफी	:	कहवा, एक पेड़ का बीज जिसे भूनकर दूध, शक्कर मिलाकर पेय पदार्थ बनाया जाता है
काफी	:	बहुत

11. शुद्ध करके लिखें :-

शाबासी	=	________	आपति	=	________	असानी	=	________
उमीद	=	________	उदारण	=	________	जिमेवारी	=	________
कटूशब्द	=	________	अवश्यकता	=	________	सरिष्ट	=	________
अनभिगयता	=	________	बीमारियाँ	=	________	सामगरी	=	________
दुरघटनाएँ	=	________	तुछ	=	________	शान्ती	=	________
भरम	=	________	वियर्थ	=	________	उचीत	=	________

10. 'इक' और 'इत' लगाकर नये शब्द बनायें :-

इक			इत		
धर्म	:	धार्मिक	प्रमाण	:	प्रमाणित
अधुना	:	________	पुलक	:	________
विज्ञान	:	________	सुरक्षा	:	________
स्वेच्छा	:	________	शिक्षा	:	________
नीति	:	________	पीड़ा	:	________
परिवार	:	________	आनंद	:	________
इतिहास	:	________	सम्मान	:	________

12. अपने मित्र/सहेली को रक्तदान का महत्व समझाते हुए पत्र लिखें।

13. 'रक्तदान' पर नारे लिखें।

रक्तदान
- महादान
- रक्षा दान
- जीवनदान
- अमूल्य दान

अध्यापन निर्देश (क) 'इक' प्रत्यय लगने पर शब्द में प्रयुक्त पहले स्वर को वृद्धि अर्थात् 'अ' को 'आ', इ,ई, ए को 'ऐ' तथा उ, ऊ, ओ को औ हो जाता है। जैसे- संसार-सांसारिक (अ को आ),
विवाह-वैवाहिक (इ को ऐ), नीति-नैतिक (ई को ऐ) वेद-वैदिक (ए को ऐ) मुख-मौखिक (उ को औ) मूल-मौलिक (ऊ को औ) योग-यौगिक (ओ को औ)

अपवाद :- कुछ शब्दों में 'इक' प्रत्यय होने पर पहले स्वर को आदि वृद्धि नहीं होती जैसे-प्रशासन-प्रशासनिक, क्रम-क्रमिक आदि

(ख) (1) कुछ संज्ञा शब्दों के अंत में 'आ' स्वर लगा होता है वहाँ 'इत' प्रत्यय होने पर अंतिम आ स्वर का लोप हो जाता है जैसे-पीड़ा-पीड़ित

(2) कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिनके साथ 'इत' प्रत्यय अलग तरह से लगता है, अत: यह अपवाद है। जैसे-विकास-विकसित इसमें मध्य स्वर 'आ' का लोप हुआ है। संक्रमण-संक्रमित (इसमें अंतिम अक्षर का ही लोप हो गया है) प्रेरणा-प्रेरित इसमें मध्य अक्षर 'र' के साथ इत प्रत्यय लगा है और अंतिम अक्षर का लोप हो गया है।

पाठ–4

फूल और काँटा

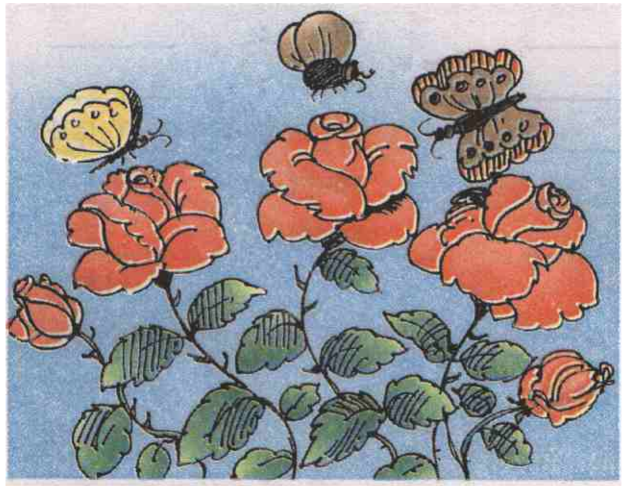

हैं जन्म लेते जगह में एक ही
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी।
एक ही सी चाँदनी है डालता।।

मेह उन पर है बरसता एक–सा।
एक–सी उन पर हवाएँ हैं बहीं ।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें।
ढंग उनके एक से होते नहीं।।

छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ
फाड़ देता है किसी का वर वसन।
प्यार डूबी तितलियों का पर कतर
भौंर का है बेंध देता श्याम तन।।

फूल लेकर तितलियों को गोद में
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगन्ध और निराले रंग से।
है सदा देता कली का जी खिला।।

है खटकता एक सब की आँख में,
दूसरा है सोहता सुर-सीस पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਪੌਦਾ, ਬੂਟਾ	=	पौधा	ਢੰਗ	=	ढंग
ਚੰਨ	=	चाँद	ਵਡਿਆਈ	=	बड़ाई
ਫੁੱਲ	=	फूल	ਵਿੱਨ੍ਹਣਾ	=	बेंधना
ਅੱਖ	=	आँख	ਉਂਗਲੀਆਂ	=	उँगलियाँ
ਹਵਾ	=	हवा	ਗੋਦ	=	गोद

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-

ਕੰਡਾ	=	काँटा	ਖੰਭ	=	पर
ਮੀਂਹ	=	मेह	ਸ਼ਰੀਰ	=	तन
ਵਸਤਰ	=	वसन	ਸਿਰ	=	सीस
ਅਨੋਖਾ	=	अनूठा	ਭੌਰਾ	=	भौंरा

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) फूल और काँटा कहाँ जन्म लेते हैं ?
(ख) काँटे की क्या विशेषता होती है ?
(ग) फूल की क्या विशेषता होती है ?
(घ) फूल और काँटा किस का प्रतीक हैं ?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) फूल और काँटे को कौन-कौन सी समान परिस्थितियाँ प्राप्त होती हैं ?
(ख) फूल और काँटे में स्वभावगत क्या अंतर है ?
(ग) आपकी दृष्टि में कुलवान व्यक्ति महान/बड़ा होता है या गुणवान। अपने विचार लिखें।
(घ) 'किस----बड़प्पन की कसर' काव्य-पंक्ति की सप्रसंग व्याख्या करें।

5. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उनके वाक्य बनायें :-

प्यार में डूबना _______ ______________________________________
पर कतरने _______ ______________________________________

जी खिल उठना ______ ______________________________

आँखों में खटकना ______ ______________________________

कसर होना ______ ______________________________

गोद बिठाना ______ ______________________________

सीस (सिर) पर सोहना ______ ______________________________

6. **इन शब्दों के समानार्थक शब्द लिखें :-**

फूल	=	पुष्प, प्रसून	मेह	=	________, ________
चाँद	=	________, ________	हवा	=	________, ________
चाँदनी	=	________, ________	भौंरा	=	________, ________

7. **बच्चो! कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं। नीचे दिए गए अनेकार्थक शब्दों के अर्थ समझते हुए उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें:**

शब्द		अर्थ	वाक्य
कुल	-	पूरा, सब, सारा	______________________
कुल	-	खानदान, वंश	______________________
सदा	-	हर समय	______________________
सदा	-	आवाज़, पुकार	______________________
वर	-	उत्तम, श्रेष्ठ	______________________
वर	-	देवता से प्रसाद रूप में कुछ माँगना	______________________
वर	-	नव विवाहिता स्त्री का पति	______________________
पर	-	पराया	______________________
पर	-	पंख	______________________
खिलना	-	विकसित होना	______________________
खिलना	-	प्रसन्न होना	______________________
खिलाना	-	खाने में प्रवृत्त करना	______________________
खिलाना	-	खेल खिलाना	______________________

पाठ 5

हार की जीत

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देख कर आता था। वह घोड़ा सुंदर तथा बड़ा बलवान था। बाबा भारती उसे 'सुलतान' कहकर पुकारते, खुद दाना खिलाते और देख-देख कर प्रसन्न होते थे। वे गाँव से बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। सुलतान के बिना जीना उनके लिए बहुत ही कठिन था।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। धीरे-धीरे सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका मन उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

"कहो, इधर कैसे आ गये?"

"सुलतान की चाह खींच लाई।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे, प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है। "

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।"

"कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।"

"क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"

"इच्छा तो बहुत दिनों से थी, लेकिन आज आ सका।"

बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्ग सिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबा जी, इसकी चाल न देखी तो क्या देखा।"

बाबा जी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर ले गए। घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था। जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उस पर वह अपना अधिकार समझता था। जाते-जाते उसने कहा, "बाबा जी यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात को नींद न आती, सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। सहसा एक ओर से आवाज़ आई - "ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।"

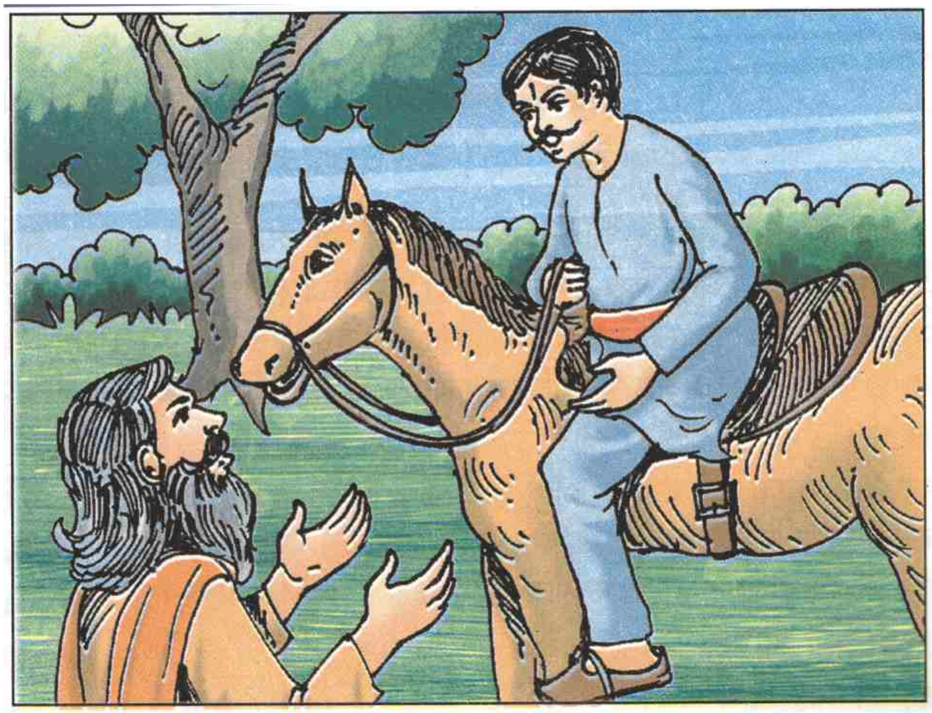

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, ''क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?''

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, ''बाबा, मैं दुःखी हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।''

''वहाँ तुम्हारा कौन है?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतर कर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे। सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम उनके हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तन कर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए जा रहा है। वह खड्गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, ''ज़रा ठहर जाओ।''

खड्गसिंह ने आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, ''बाबा जी, यह घोड़ा अब न दूँगा।''

''परंतु एक बात सुनते जाओ।''

खड्ग सिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, ''यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे इसे वापस करने के

लिए न कहूँगा। परंतु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।''

''बाबा जी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ। केवल यह घोड़ा न दूँगा।''

''अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुम्हें इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।''

खड्गसिंह ने आश्चर्य से पूछा, ''बाबा जी इसमें आपको क्या डर है?''

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, ''लोगों को यदि इस घटना का पता चल गया तो वे किसी ग़रीब पर विश्वास न करेंगे। ''

बाबा भारती चले गए परंतु उनके शब्द खड्ग सिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है, मनुष्य नहीं देवता हैं।

x x x x x

रात के अंधेरे में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। खड्ग सिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकल कर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने घोड़े के गले से लिपट कर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन के बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे संतोष से बोले, ''अब कोई ग़रीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।''

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਲਹਿਲਹਾਂਦੇ	=	लहलहाते	ਕੀਰਤੀ	=	कीर्ति
ਸੁਲਤਾਨ	=	सुलतान	ਛਵੀ	=	छवि
ਘੋੜਾ	=	घोड़ा	ਘਮੰਡ	=	घमंड
ਮੰਦਰ	=	मंदिर	ਅਪਾਹਜ	=	अपाहिज
ਭਗਵਾਨ	=	भगवान	ਲਗਾਮ	=	लगाम

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-**

ਇੱਛਾ	=	चाह	ਬੇਚੈਨ	=	अधीर
ਅਨੋਖਾ	=	विचित्र	ਹਵਾ ਦੀ ਗਤੀ	=	वायु वेग
ਤਬੇਲਾ	=	अस्तबल	ਵਾਂਗ	=	नाईं
ਕੰਗਾਲ	=	कंगले	ਝੂਠ	=	मिथ्या
ਝੌਂਪੜੀ	=	कुटिया	ਮਤਰੇਆ	=	सौतेला

3. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) बाबा भारती के घोड़े का क्या नाम था?

(ख) खड्गसिंह कौन था?

(ग) बाबा भारती अपने घोड़े को देखकर खुश क्यों होते थे?

(घ) ''बाबा जी यह घोड़ा अब न दूँगा।'' यह वाक्य किसने कहा और किसे कहा?

(ङ) ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना'' यह वाक्य किसने कहा, किसे और कब कहा?

4. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) बाबा भारती को अपना घोड़ा क्यों प्रिय था?

(ख) खड्गसिंह ने घोड़े को प्राप्त करने के लिए क्या चाल चली?

(ग) बाबा भारती ने खड्ग सिंह से क्या प्रार्थना की?

(घ) खड्गसिंह ने घोड़ा क्यों लौटा दिया?

(ङ) इस कहानी की महत्वपूर्ण पंक्ति ढूँढ़कर लिखें, जिसने डाकू का हृदय परिवर्तित कर दिया।

5. **इन मुहावरों के अर्थ लिखकर उनको वाक्यों में प्रयोग करें :-**

हृदय अधीर होना _______ ______________________________

शब्द कानों में गूँजना _______ ______________________________

हृदय पर साँप लोटना _______ ______________________________

हाथ से छूटना _______ ______________________________

गले लिपटकर रोना _______ ______________________________

दिल टूटना _______ ______________________________

नेकी के आँसू बहना _______ ______________________________

मुँह मोड़ना _______ ______________________________

पीठ पर हाथ फेरना _______ ______________________________

मन मोह लेना _______ ______________________________

कीर्ति कानों तक पहुँचना _______ ______________________________

चाह खींच लाना	________	________________________________
हृदय पर छवि अंकित हो जाना	________	________________________________
हृदय में हलचल होना	________	________________________________
वायु वेग से उड़ना	________	________________________________
आश्चर्य का ठिकाना न रहना	________	________________________________
तन कर बैठना	________	________________________________

6. लिंग बदलें :-

घोड़ा	=	घोड़ी	बालिका	=	________
बेटा	=	________	पुत्री	=	________
दास	=	________	पिता	=	________
बकरा	=	________	देवी	=	________

7. विपरीत शब्द लिखें :-

सावधान	=	असावधान	ग़रीब	=	अमीर
भय	=	________	सुख	=	________
विश्वास	=	________	संध्या	=	________
संतोष	=	________	छाया	=	________
स्वीकार	=	________	भला	=	________

8. शुद्ध रूप लिखें :-

आननद	=	आनंद	प्रमात्मा	=	________
नमष्कार	=	________	परसन्न	=	________
हिरद्य	=	________	कीरती	=	________

9. इन शब्दों में 'र' पूरा है या आधा, लिखें :-

प्रकट	=	________
आश्चर्य	=	________
कीर्ति	=	________

10. इन अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखें :-

जहाँ पर घोड़े रखे जाते हैं	=	________
जिसका कोई अंग ठीक न हो	=	________

11. इन वाक्यों में विशेषण शब्दों को ढूँढ़कर लिखें :-

(क)	वह घोड़ा सुंदर तथा बड़ा बलवान था।	<u>सुंदर</u>	<u>बड़ा बलवान</u>
(ख)	खड्ग सिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था।	________	____________
(ग)	बाबा, मैं दु:खी हूँ।	________	____________

(घ) मैं उनका सौतेला भाई हूँ। ______ ______

(ङ) चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल, ठंडे जल से स्नान किया। ______ ______

12. इन वाक्यों में रेखाँकित पदों के कारक बतायें :-

(क) वे <u>गाँव से</u> बाहर एक छोटे से <u>मंदिर में</u> रहते थे। ______,______

(ख) <u>उसके</u> <u>हृदय में</u> हलचल होने लगी। ______,______

(ग) उसकी चाल देखकर <u>खड्गसिंह</u> के <u>हृदय पर</u> साँप लोट गया। ______,______

(घ) <u>बाबा ने</u> घोड़े को रोक लिया। ______,______

(ङ) <u>उनके</u> <u>हाथ से</u> लगाम छूट गई। ______,______

(च) वह धीरे-धीरे <u>अस्पताल के</u> <u>फाटक पर</u> पहुँचा। ______,______

(छ) वे <u>घोड़े को</u> खोलकर बाहर ले गये। ______,______

योग्यता विस्तार

* इस कहानी में बाबा भारती और खड्गसिंह के संवाद कहानी को चरम सीमा तक पहुँचाने में सहायक हुए हैं। कक्षा में अध्यापक उन संवादों को उचित भाव-भंगिमा तथा तान-अनुतान के साथ बच्चों को बुलवाये।

** कई बार किसी व्यक्ति के मुख से निकले वचन किसी के जीवन की दिशा बदल देते हैं। बाबा भारती के उन वाक्यों को लिखो जिन्होंने डाकू खड्गसिंह का हृदय परिवर्तित कर दिया।

*** इसी भाव को लेकर लिखी गई एक कहानी है 'अंगुलिमाल' । उस कहानी को पढ़ो।

प्रयोगात्मक व्याकरण

(क) घोड़ा हिनहिनाया।

(ख) घोड़ा हिनहिना रहा है।

(ग) घोड़ा हिनहिनायेगा।

उपर्युक्त वाक्यों में ध्यान से क्रिया को पहचानिए। ध्यान दीजिए कि पहले वाक्य में क्रिया हो गयी है (हिनहिनाया) दूसरे वाक्य में क्रिया हो रही है- (हिनहिना रहा है) तथा तीसरे वाक्य में क्रिया आने वाले समय में अभी होगी (हिनहिनायेगा)। दरअसल क्रिया से यह भी पता चलता है कि काम कब हुआ अर्थात् क्रिया होने का समय। इसे ही क्रिया का काल कहते हैं।

अतएव क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का ज्ञान हो उसे 'काल' कहते हैं।

(क) बाबा ने घोड़े को रोका।

(ख) खड्ग सिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था।

(ग) बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे।

इन वाक्यों में 'रोका', 'था' तथा 'जा रहे थे' क्रियाएँ हैं। इनमें क्रिया का करना या होना बीते हुए समय में हुआ है। **अतः बीते समय को भूतकाल कहते हैं।**

(क) अपाहिज घोड़े को दौड़ाए जा रहा है।

(ख) अपाहिज घोड़े को दौड़ाता है।

(ग) अपाहिज घोड़े को दौड़ाता होगा।

इन वाक्यों में 'दौड़ाए जा रहा है', 'दौड़ाता है', तथा 'दौड़ाता होगा' क्रियाएँ हैं। इनमें क्रिया चल रहे समय अर्थात् वर्तमान काल में हो रही है **अतः चल रहे समय को वर्तमान काल कहते हैं।**

(क) बाबा जी, यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

(ख) उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'रहने दूँगा' तथा 'मोह लेगी' क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं से भविष्य में कार्य के होने का पता चलता है अर्थात् अभी कार्य हुआ नहीं है। **अतः जब क्रिया का करना या होना आने वाले समय में पाया जाता है, उसे भविष्यत काल कहते हैं।**

याद रखें :-

काम का करना या होना- यह बतलाये क्रिया हमें
भूत, वर्तमान है भविष्य-यह बतलाये काल हमें

पाठ 6

राष्ट्र के गौरव प्रतीक

छात्रो! आज हम अपने स्कूल के प्राँगण में लगी राष्ट्र गौरव प्रतीकों की प्रदर्शनी देखेंगे।

(अध्यापक प्रदर्शनी की ओर पंक्ति बनाकर चलने का इशारा करते हैं)

सभी छात्र : (इकट्ठे ही) सर! ये राष्ट्रीय प्रतीक क्या होते हैं?

अध्यापक : बच्चो! यही जानने के लिए तो हम प्रदर्शनी देखने जा रहे हैं।

(अध्यापक की बात सुनते ही उत्साहित हुए छात्र प्रदर्शनी की तरफ पग भरते हुए चलने लगे।)

[हाल के अंदर पहुँच कर]

अध्यापक : बच्चो! प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र अपनी पहचान के प्रतीक निश्चित करता है। जो उसके आत्म सम्मान, स्वाभिमान, एकता एवं गौरव के प्रतीक होते हैं। उन्हें राष्ट्रीय प्रतीक कहा जाता है। जैसे- राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय चिह्न, राष्ट्रीय पशु-पक्षी इत्यादि।

[आगे चलते हुए, राष्ट्रीय ध्वज की ओर इशारा करके]

अध्यापक : बच्चो! यह क्या है?

सभी छात्र : (मिलकर/एक साथ) हमारा राष्ट्रीय ध्वज।

अध्यापक : जैसा कि आपको पता ही है इसमें तीन रंग की पट्टियाँ होती हैं, इसलिए इसे तिरंगा भी कहते हैं। इसे सभी राष्ट्रीय पर्वों और विशेष अवसरों पर स्कूलों, सरकारी कार्यालयों के मुख्य भवनों पर तो इसे लहराया ही जाता है, किंतु 23 जनवरी, 2004 से संविधान द्वारा भारत के सभी नागरिकों को इसे अपने घर, सार्वजनिक पार्क आदि में सम्मान के साथ फहराने का अधिकार दिया है।

नव्या : सर! लाल किले पर इसे कौन फहराता है?

अध्यापक : बच्चो! प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस [15 अगस्त] को देश के प्रधानमंत्री और गणतंत्र दिवस [26 जनवरी] को देश के राष्ट्रपति राजधानी दिल्ली में इसे लालकिले पर फहराते हैं।

जैसमीन : (आगे बढ़कर) सर ! ये तो हमारा राष्ट्रीय गान है, जिसे हम सुबह स्कूल की सभा में गाते हैं।

राष्ट्रीय गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे
भारत भाग्य-विधाता
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा-
द्राविड़-उत्कल-बंग
विन्धय-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष माँगे
गाहे तव जय गाथा
जन-गण-मंगलदायक जय हे
भारत भाग्य-विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे।

रवीन्द्र नाथ टैगोर

उदय : इसके नीचे रवीन्द्रनाथ टैगोर क्यों लिखा है, सर?

अध्यापक : बेटे! यह राष्ट्रीय गान के रचयिता का नाम है। ये भारत के प्रसिद्ध विद्वान एवं कवि थे । इन्होंने 27 दिसंबर 1911 में इसकी रचना की और 24 जनवरी 1950 को इसे राष्ट्रीय गान के रूप में स्वीकार किया गया।

दिव्या : सर ! जब ये गाया जाता है तो हम सावधान क्यों खड़े होते हैं?

अध्यापक : शाबाश दिव्या! आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया। जब राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाये या राष्ट्रीय गान गाया जाये तब हमें इन्हें सम्मान देने के लिए शांति पूर्वक (सावधान) खड़े रहना चाहिए। इसे गाने में मात्र 52 सैकेंड ही तो लगते हैं।

अध्यापक : (आगे चलकर अनुसरण करने का इशारा करते हुए) यह अगला प्रतीक हमारा राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' है।

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम्
शुभ्र ज्योत्स्न पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिनीम्
सुखदां वरदां मातरम्
वन्दे मातरम्

बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय

गुंजन : सर ! इस गीत के रचनाकार कौन हैं ?

अध्यापक : इस गीत की रचना प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने सन् 1874 में की थी। वैसे तो यह गीत बाँग्ला-संस्कृत भाषा को मिलाकर 26 पंक्तियों में लिखा गया है, किंतु इसकी पहली सात पंक्तियाँ ही राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार की गई हैं।

आँचल : (आगे बढ़कर) देखो ! देखो ! ये तीन शेरों वाला चित्र।

अध्यापक : बच्चो ! ये हमारा राष्ट्रीय चिह्न अशोक स्तम्भ है, जिसके शीर्ष पर चार सिंह बने हैं, जो कि शक्ति , साहस एवं आत्मविश्वास के सूचक हैं।

विनय : (कुछ सोचकर) परंतु सर! इसमें तो तीन सिंह ही दिखाई दे रहे हैं।

अध्यापक : बिल्कुल ठीक कह रहे हो। बेटे! चौथा सिंह इनकी ओट में है। इनके ठीक नीचे सम्राट अशोक का वही धर्म-चक्र है, जो तिरंगे में भी है। चक्र के साथ चारों दिशाओं के संरक्षक के रूप में : पूर्व दिशा में हाथी, पश्चिम दिशा में बैल, उत्तर दिशा में सिंह और दक्षिण दिशा में सरपट दौड़ता घोड़ा चिह्नित है। इन्हीं के बीच एक कमल का फूल बना है। इसके नीचे 'सत्यमेव जयते' आदर्श वाक्य लिखा है। जिसका अर्थ है- सत्य की हमेशा जीत होती है।

सत्यमेव जयते

चन्दन : (राष्ट्रीय चिह्न की ओर इशारा करके) सर ये तो रुपयों और सिक्कों पर छपा रहता है।

उदय : हाँ सर ! मेरे पिता जी पुलिस में हैं, उनकी टोपी पर भी यही चिह्न बना है।

अध्यापक : बच्चो ! यह राष्ट्रीय चिह्न भारत सरकार के अधिकारिक लेटरहेड का भाग है। यह राष्ट्रपति व राज्यपालों की सरकारी मोहर है। यह सभी भारतीय मुद्राओं पर अंकित होता है। यह भारत गणराज्य के राजनयिक, पासपोर्ट, पहचान पत्र आदि पर भी छपा होता है। यह राष्ट्रीय चिह्न स्वतंत्र भारत की पहचान तथा सम्प्रभुता का प्रतीक है।

दिव्या : (अगले प्रतीक की ओर इशारा करते हुए) सर! ये चिह्न तो कल हमने दूरदर्शन पर देखा था।

अध्यापक : हाँ बेटे! यह हमारी राष्ट्रीय मुद्रा है। इसे 15 जुलाई, 2010 को ही आधिकारिक रूप में मान्य किया गया है। आई.आई.टी., गुवाहाटी के प्रोफैसर डी. उदय कुमार ने इसको तैयार किया है। इस डिज़ाइन की खास बात यह है कि इसमें देवनागरी लिपि के र और रोमन लिपि के आर (R बगैर डंडे के) दोनों की छवि मिलती है। इससे भारतीय रुपये को पहले अंग्रेज़ी में

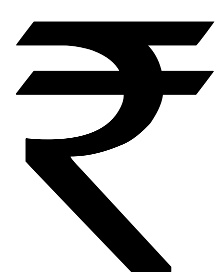

RS. या Re या फिर INR के रूप में दर्शाया जाता था। किंतु अब के बाद रुपया पाँचवीं ऐसी मुद्रा बन गया है, जिसे उसके चिह्न से पहचाना जाएगा। हमारा यह चिह्न भारतीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता का अद्भुत मेल जान पड़ता है।

करिश्मा :- (आगे बढ़ते हुए) सर! ये तो हम सबके प्रिय बापू हैं न?

अध्यापक : हाँ बच्चो! ये हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हैं।

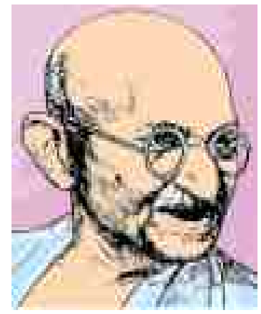

जूही : सर, इन्हें राष्ट्रपिता क्यों कहते हैं?

अध्यापक : महात्मा गाँधी ने भारत को जगाया। अपना काम स्वयं करने, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने की राह दिखाई। सत्याग्रह और असहयोग जैसे आंदोलन चलाकर अंग्रेज़ी शासन की नींव उखाड़ दी। भारत माता को आज़ादी दिलाई और नये राष्ट्र का निर्माण किया। इसलिए हम उन्हें राष्ट्रपिता और बापू कहते हैं। साथ ही तुम्हें बता दूँ कि बापू के जन्मदिन (2 अक्तूबर) को गाँधी जयंती यानि राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है।

नैना : सर! स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) एवं गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) भी तो हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं न?

अध्यापक : बिल्कुल ठीक, शाबाश! याद रखा आपने।

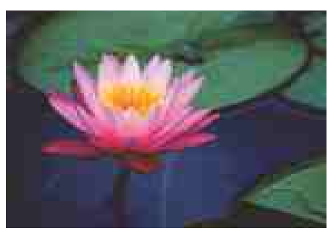

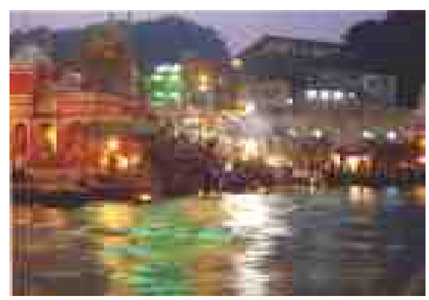

करिश्मा : सर ! ये आम और कमल का फूल-----

जूही : [आगे बढ़कर बीच में टोकते हुए] और ये नदी सर! क्या ये भी हमारे राष्ट्रीय प्रतीक हैं?

अध्यापक : हाँ-हाँ, आम हमारा राष्ट्रीय फल है। कमल हमारा राष्ट्रीय फूल और ये गंगा हमारी राष्ट्रीय नदी है। ये सभी क्रमशः अपने स्वाद, मिठास, सुंदरता, निर्मलता एवं पवित्रता के लिए मशहूर हैं।

रुचिका : (आगे बढ़कर) सर! ये मोर और बाघ।

अध्यापक : तुम सब जानने के लिए कितने उत्सुक हो रहे हो। धीरज रखो बारी-बारी सब

बताता हूँ। बच्चो! मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है, जो अपनी सुंदरता के लिए न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी चर्चित है। (बाघ की ओर इशारा करके) वीरता, दृढ़ता एवं साहस का प्रतीक बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु है। भारत सरकार ने इन दोनों को पकड़ने, मारने और कैद करने पर प्रतिबंध लगाया हुआ है।

अभिषेक : सर! यह आगे हॉकी है, क्रिकेट का बल्ला क्यों नहीं?

अध्यापक : छात्रो ! वास्तव में हॉकी के खेल में खिलाड़ियों ने सन् 1928 से लेकर सन् 1956 तक भारत को छः ओलम्पिक स्वर्ण पदक दिलवाए। इस बीच उन्होंने चौबीस मैच खेले और सभी के सभी जीते। इसलिए इसे हमारा राष्ट्रीय खेल निश्चित किया गया।

उदय : सर! यह कैलेंडर तो हम सबके घर में होता है जी।

अध्यापक : बेटे! यह हमारा राष्ट्रीय कैलेण्डर : शक सम्वत् है। जिसे 22 मार्च 1957 को अपनाया गया था। इससे पहले भारत में ईसा सम्वत् कैलेंडर का उपयोग होता था। शक सम्वत् कैलेंडर में एक वर्ष में 365 दिन और 12 देसी महीने चैत्र से फाल्गुन तक होते हैं। चैत्र की प्रथम तिथि यानि देसी वर्ष का आरंभ सामान्य वर्ष में 22 मार्च और लीप वर्ष में 21 मार्च को होता है। इस कैलेंडर का ग्रेगोरियन कैलेंडर से सटीक मिलान किया होता है।

मुकुल : यह तो हमारे स्कूल के बरगद के वृक्ष जैसा ही है?

अध्यापक : बच्चो! बरगद हमारा राष्ट्रीय वृक्ष है। इस वृक्ष की टहनियाँ अपने तने से लिपट-लिपट कर उसे और मज़बूत कर देती हैं। यह वृक्ष हमें अपनी संस्कृति एवं विरासत से जुड़े रहने का संदेश देता है।

इन सभी राष्ट्रीय प्रतीकों की रक्षा एवं सम्मान के लिए हमें हमेशा तत्पर रहना चाहिए। यही हमारा परम कर्त्तव्य है। (पूरी प्रदर्शनी घूमने के बाद हाल से बाहर आते हुए अध्यापक और अनुसरण करते हुए सभी विद्यार्थी)

सभी बच्चे : सर! हमने ऐसी अनोखी एवं ज्ञान से भरपूर प्रदर्शनी कभी नहीं देखी। हम सब आपके आभारी हैं।

अध्यापक : ठीक है बच्चो! अब तुम सब कक्षा में चलकर सभी राष्ट्रीय प्रतीकों को अपनी-अपनी कॉपी पर लिख लो। कल घर से इनके चित्र ढूँढ़कर कॉपी पर लगाकर लाना। (सभी बच्चे खुशी-खुशी पंक्ति बनाकर अध्यापक का अनुसरण करते हुए प्रस्थान करते हैं।)

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਰਾਸ਼ਟਰ	=	राष्ट्र	ਤਿਰੰਗਾ	=	तिरंगा
ਪ੍ਰਤੀਕ	=	प्रतीक	ਧਰਮ ਚੱਕਰ	=	धर्म चक्र
ਏਕਤਾ	=	एकता	ਸ਼ੇਰ	=	शेर
ਪੱਟੀਆਂ	=	पट्टियाँ	ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ	=	राष्ट्रपति

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਨੁਮਾਇਸ਼	=	प्रदर्शनी	ਸੋਨੇ ਦੇ ਮੈਡਲ	=	स्वर्ण पदक
ਝੰਡਾ	=	ध्वज	ਰੋਕ	=	प्रतिबन्ध
ਚੌਵੀ	=	चौबीस	ਫੁੱਲ	=	पुष्प
ਸ਼ੇਰ	=	बाघ	ਪਿੱਛੇ ਚਲਣਾ	=	अनुसरण करना

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) राष्ट्रीय प्रतीक किसे कहते हैं ?

(ख) हमारे देश के झंडे को क्या कहते हैं ?

(ग) राष्ट्रीय गान के रचयिता का नाम लिखें।

(घ) राष्ट्रीय गीत कौन-सा है ?

(ङ) राष्ट्रीय चिह्न कौन-सा है ?

(च) राष्ट्रीय फल आम किस लिए मशहूर है ?

(छ) गंगा नदी की क्या विशेषता है ?

(ज) भारत सरकार ने किस पशु और पक्षी के शिकार पर रोक लगायी हुई है ? और क्यों ?

(झ) हॉकी को राष्ट्रीय खेल के रूप में क्यों स्वीकार किया गया है?

(ञ) बरगद का वृक्ष हमें क्या संदेश देता है ?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) राष्ट्रीय झंडे के बारे में आप क्या जानते हो?

(ख) राष्ट्रीय चिह्न का प्रयोग कहाँ-कहाँ पर होता है? पता करके लिखें।

5. नये शब्द बनायें :-

राष्ट्र + ईय = ________

भारत + ईय = ________

मानव + ईय = ________

सम्पादक + ईय = ________

सराहना + ईय = ________

देश + ईय = ________

6. पाठ में आये सभी चिह्न/प्रतीकों के चित्र इकट्ठे करें और उन्हें अपनी कॉपी पर चिपका कर प्रत्येक चिह्न पर पाँच-पाँच वाक्य लिखें।

7. राष्ट्रीय-गान, राष्ट्रीय-गीत, जुबानी याद करें।

8. राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय गीत को सुलेख के रूप में चार्ट पर लिखकर कक्षा की दीवार पर लटकायें।

पाठ 7

आ री बरखा !

आ री बरखा!
आ री बरखा!
इस तपती धरा पर
अपना शीतल जल बरसा।

पेड़ सब ठूँठ भए,
पंछी चहकना भूल गए।
कुम्लाह गए हैं पुष्प सारे,
बिखरा दो तुम बादल कारे।
सौंदर्य रहित इस प्रकृति का
शृंगार बन के तू आ,
आ री बरखा!
आ री बरखा!
इस तपती धरा पर
अपना शीतल जल बरसा।

जहाँ कभी बहती थी नदियाँ
सूखे पत्थर दिख रहे
सिंधु दुर्बल हो चला
वियोग तेरा कैसे सहे।
अपने प्रिय के जीवन-हेतु
गीत मिलन के तू गा,
आ री बरखा!
आ री बरखा!
इस तपती धरा पर
अपना शीतल जल बरसा।

कश्तियाँ सब बच्चों की
तैरने को हैं खड़ी हुईं
उधर किसानों की भी आँखें
बस तुझ पर ही हैं गड़ी हुईं
खाली पड़ी कोठरियों में
अन्न के दाने तू भर जा,
आ री बरखा!
आ री बरखा!
इस तपती धरा पर
अपना शीतल जल बरसा।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਪੇੜ	=	पेड़	ਕਿਸ਼ਤੀਆਂ	=	कश्तियाँ
ਪੰਛੀ	=	पंछी	ਕਿਸਾਨ	=	किसान
ਪੱਥਰ	=	पत्थर	ਕੋਠੜੀ	=	कोठरी

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-

ਮੀਂਹ	=	वर्षा/बरखा	ਸਾਗਰ	=	सिंधु
ਪ੍ਰਿਥਵੀ	=	धरा	ਅੱਖਾਂ	=	आँखें
ਫੁੱਲ	=	पुष्प	ਗਰਮ	=	तपती

3. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) वर्षा ऋतु से पूर्व कौन-सी ऋतु होती है ?

(ख) गर्मी के कारण प्रकृति कैसी दिखाई देती है ?

(ग) नदियों में सूखे पत्थर क्यों दिखाई देने लगे हैं ?

(घ) सागर की दुर्बलता का क्या कारण था ?

(ङ) बच्चे वर्षा की प्रतीक्षा क्यों करते हैं ?

(च) किसान वर्षा से क्या माँग रहे हैं ?

4. **इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें :-**

जहाँ कभी बहती थी नदियाँ
सूखे पत्थर दिख रहे,
सिंधु दुर्बल हो चला
वियोग तेरा कैसे सहे।

5. **पर्यायवाची शब्द लिखें :-**

बरखा = ________,________

धरा = ________,________

पेड़ = ________,________

जल = ________,________

पंछी = ________,________

पुष्प = ________,________

बादल = ________,________

नदी = ________,________

सिंधु = ________,________

पत्थर = ________,________

किश्ती = ________,________

6. **विपरीत शब्द लिखें :-**

शीतल = ________

कुम्हलाना = ________

बिखराना = ________

दुर्बल = ________

वियोग = ________

मिलन = ________

7. नीचे दिये गए बॉक्स में 'बरखा' के समानार्थक शब्द दिये गये हैं, उन्हें ढूँढ़िए और लिखिये।

1. मेह
2. ____________
3. ____________
4. ____________
5. ____________
6. ____________
7. ____________
8. ____________
9. ____________

च	धा	पा	छीं	टा	झ
में	ब	व	क	नी	ड़ी
ह	र	स	मे	ह	बूँ
त	खा	सा	क	बा	दा
व	श	त	णी	रि	बाँ
र्षा	श	भ	म	श	दी
ज	ल	वृ	ष्टि	ही	का

8. (क) वर्षा ऋतु का प्रकृति और मानव पर क्या प्रभाव पड़ता है। दस वाक्यों में लिखें।

(ख) वर्षा ऋतु पर कोई गीत लिखने का प्रयास करें।

(ग) कविता को पढ़कर वर्षा से संबंधित चित्र बनायें।

(घ) आप कभी वर्षा में नहाये हैं ? यदि हाँ तो अपने अनुभव को पाँच वाक्यों में लिखें।

9. (क) जानिये : छः ऋतुओं की सूची

क्रम	ऋतु	महीना
1.	बसंत ऋतु	(चैत्र – वैशाख)
2.	ग्रीष्म ऋतु	(ज्येष्ठ – आषाढ़)
3.	वर्षा ऋतु	(श्रावण – भाद्रपद)
4.	शरद ऋतु	(आश्विन – कार्तिक)
5.	हेमंत ऋतु	(मार्गशीर्ष – पौष)
6.	शिशिर ऋतु	(माघ – फाल्गुन)

(ख) वर्षा के सम्बन्ध में यह भी जानिये :-

वर्षा काल	–	बहार, मानसून, सावन का महीना, सावन भादो
वर्षा हीनता	–	अकाल, अनावृष्टि, सूखा
अनवरत (लगातार) वर्षा	–	झड़ी, मूसलाधार
तीव्र वर्षा	–	धुआँधार वर्षा, घनघोर वर्षा
प्रथम वर्षा दिन	–	आषाढ़ का प्रथम दिवस
ओला वर्षा	–	ओलावृष्टि
हिम वर्षा	–	हिम पात
क्षीण वर्षा	–	फुहार, रिमझिम, बूँदाबाँदी

पाठ-8

विजय-दिवस

''हार्दिक बेटा, आधे घंटे तक हमारी ट्रेन चंडीगढ़ रेलवे स्टेशन पर पहुँचने वाली है और वहाँ केवल दस मिनट रुकेगी। आप तैयार रहना, हमें जल्दी से उतरना है।''

खिड़की से बाहर की ओर देखते हुए हार्दिक ने माँ की बात सुनकर हाँ में सिर हिला दिया। माँ उसकी मनः स्थिति समझती थी, इसलिए पुनः बोली,

''देखो हार्दिक, अब हम दोनों पूना में अकेले तो नहीं रह सकते थे न.... रही बात आपके स्कूल और मित्रों की..... दादा जी ने चंडीगढ़ के बहुत अच्छे स्कूल में आपके दाखिले की बात कर ली है और अच्छे मित्र भी आपके बन ही जायेंगे।''

बारह वर्षीय हार्दिक माँ की बात चुपचाप सुन रहा था।

वह केवल दो वर्ष का था, जब उसके पिता कैप्टन वैभव शुक्ला कारगिल युद्ध में शहीद हो गए थे, तब से वह अपनी माँ के साथ पूना में नाना जी के पास ही रह रहा था। चंडीगढ़ से दादा-दादी साल भर में दो तीन बार उसे मिलने आ जाते थे किन्तु वह कभी भी चंडीगढ़ नहीं आया था। अब नाना जी की मृत्यु के बाद हार्दिक और उसके माता जी को दादा-दादी जी ने अपने पास रहने के लिए बुला लिया था, लेकिन हार्दिक को पूना शहर, अपना स्कूल और मित्र छोड़ते हुए अच्छा नहीं लग रहा था।

''चलो बेटा, ट्रेन रुक गई, दादा जी हमें लेने आये होंगे।'' - माँ ने हार्दिक को झकझोरते हुए कहा।

ट्रेन से उतरते ही हार्दिक ने दादा जी को विभिन्न मैडलों से सजी वर्दी में कई पुलिस कर्मियों के साथ देखा तो वह हैरान रह गया। उसे ये तो मालूम था कि दादा जी पुलिस विभाग में हैं, पर उनका इतना रौब-रुतबा है- ये अनुमान नहीं था, क्योंकि दादा जी पूना में तो हमेशा साधारण कपड़ों में एक आम आदमी की तरह ही आते थे।

वह दादा जी के चरण स्पर्श कर लिपटकर मिला। पुलिस कर्मियों ने उनका सामान उठाकर गाड़ी में रखा उनकी गाड़ी अब घर की ओर जा रही थी। रास्ते में चौराहों पर खड़े पुलिस वाले उनकी गाड़ी को देखकर सैल्यूट मारते तो वह यह देखकर अचरज से उछल-सा पड़ता।

घर पहुँचने पर वह दादी जी से बड़े प्यार से मिला। उसे पूरा घर देखने की बड़ी उत्सुकता थी। वह जल्दी से पूरा घर घूम आया और आकर माँ के कान में धीरे से बोला,

''माँ, दादा जी का घर तो बहुत बड़ा है, कितना बड़ा बगीचा है! गेट पर दो-दो पुलिस सुरक्षा कर्मी हैं और घर में नौकर-चाकर हैं।''

''बेटा, दादा जी पुलिस विभाग में एस.एस.पी. हैं। दादा जी ने दो दिन घर पर रहकर हार्दिक के साथ बिताए। हार्दिक अब खुश था।''

आज दादा जी सुबह-सुबह पुलिस वर्दी में तैयार थे। वे अपने ऑफिस जाने से पहले हार्दिक को साथ लेकर स्कूल में उसका दाखिला करवाने गए। प्रिंसिपल के ऑफिस में दादा जी के साथ जाते हुए हार्दिक अपनी पुलिस शान समझ रहा था। दादा जी उसका दाखिला करवाकर चले गए।

कक्षा में सभी लड़के उसे अपना मित्र बनाना चाहते थे लेकिन, पूना के संकोची, शर्मीले हार्दिक के मन में घमंड, अभिमान ने जगह ले ली थी। इसी प्रवृत्ति ने उसे किसी का मित्र नहीं बनने दिया।

उसे स्कूल में आए दो महीने हो गए थे। हालाँकि किसी अध्यापक को उसकी पढ़ाई से शिकायत नहीं थी, लेकिन कक्षा के सभी छात्र उससे तंग थे। उन सब पर हार्दिक का दबदबा था। कोई जल्दी-जल्दी उससे उलझता नहीं था। जो बच्चे उसका रौब मानते, वे तो हार्दिक की शरारतों से बचे हुए थे और जो ज़रा भी उसके सामने सिर उठाते वह उनका नुकसान कर देता। एक दिन उसने रियाज़ की घड़ी तोड़ दी......... तो उसी दिन पलाश की किताब फाड़ दी......... अनुराग के बैठने पर डैस्क खींच लिया और वह गिरते-गिरते बचा। हार्दिक के दादा जी का शहर में नाम होने के कारण कोई भी विद्यार्थी प्रिंसिपल या किसी अध्यापक को शिकायत नहीं करता था। यहाँ तक कि स्कूल की कैंटीन से भी हार्दिक दादा जी के नाम की आड़ में बिना पैसे दिए कुछ न कुछ खा लेता था।

आज जब वह स्कूल से घर पहुँचा तो माँ ने कहा, ''बेटा तैयार हो जाओ हमें दादा जी के साथ एक कार्यक्रम में जाना है।''

हार्दिक दादा जी, दादी जी व माँ के साथ एक स्कूल के बड़े से हॉल में पहुँचा। वहाँ कारगिल

के सैनिकों की स्मृति में दादा जी ने अपना रक्तदान करके रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया।

इसके पश्चात् वे दूसरे बड़े से हॉल में पहुँचे जहाँ बहुत से लोग, सैनिक, नेता व पुलिस अधिकारी उपस्थित थे। यहाँ हर वर्ष की तरह आज भी 26 जुलाई को 'कारगिल विजय दिवस' मनाया जाने वाला था, जिसमें 1999 के कारगिल युद्ध में 'ऑप्रेशन विजय' के दौरान जिन 527 सैनिकों ने अपनी शहादत से जीत प्राप्त की थी, उन शहीदों को श्रद्धाँजलि देने और जीत को मनाने का कार्यक्रम था।

'सर हमारा रहे न रहे......... तेरा माथा चमकता रहे' शीर्षक से वहाँ कारगिल युद्ध के जाबाँजों की बहादुरी के कारनामों की तस्वीरें भी लगाई हुई थीं। उनमें से कुछ तस्वीरों को देखते हुए हार्दिक माँ से कहता है,

''माँ ...... ये तो पिता जी की ....''

''हाँ बेटा, ये आपके पिता जी की ही तस्वीरें हैं......''

'माँ, हमें आज यहाँ क्यों बुलाया गया है?''

''बेटा, इस शहर के शहीद कैप्टन वैभव शुक्ला यानि आपके पिता जी ने अपनी जान देकर कारगिल युद्ध में शत्रुओं के छक्के छुड़ा कर विजय प्राप्त की थी। ऐसे बहादुर बेटे के महान पिता जी यानि आपके दादा जी को सम्मानित करने के लिए हमें यहाँ बुलाया गया है। साथ ही इस स्कूल का नामकरण भी आपके पिता जी के नाम पर किया जा रहा है।''

उधर मंच पर कैप्टन वैभव शुक्ला के 'ऑप्रेशन विजय' के दौरान दिखाए गए अदम्य साहस, वीरता और पराक्रम के बारे में बताया जा रहा था। साथ ही दादा जी को सम्मानित करने के लिए मंच पर बुलाया जा रहा था। दादा जी के मंच पर पहुँचते ही मंच संचालक ने एस.एस.पी. दादा जी की ईमानदारी व मेहनत की प्रशंसा करनी शुरू कर दी – ''इन्होंने कभी किसी निरपराधी को सज़ा नहीं दी तो किसी अपराधी को कभी छोड़ा भी नहीं ..... न ही कभी इन्होंने रिश्वत ली है। इस शहर को गर्व है ऐसे पिता पर और ऐसे बेटे पर जिन्होंने अपना पूरा जीवन कर्त्तव्य–पथ पर लगा दिया।''

मंच संचालक की एक बात से तो हार्दिक के कान ही खड़े हो गए – ''अब भविष्य में इनके पोते हार्दिक शुक्ला से उम्मीद है कि वह अपने पिता जी और दादा जी के पदचिह्नों पर चलेगा और इस शहर और देश का नाम रोशन करेगा।''

यह सुनते ही हार्दिक के शरीर में सिहरन–सी पैदा हुई। उसकी आँखों से आँसू छलछला आए। वह दादी जी व माँ के साथ बैठा सोचने लगा--

''पिता जी ने अपनी बहादुरी से दादा जी का सिर ऊँचा किया है, लेकिन मैं स्कूल में दादा जी की आड़ लेकर कैसी बहादुरी दिखा रहा हूँ! इस सबसे तो दादा जी का सिर नीचा ही हो जाएगा।''

हार्दिक एक ओर अपने पिता के बलिदान और दूसरी ओर दादा जी की ईमानदारी के बीच स्वयं को तोल रहा था। वह इन दो आदर्शों में स्वयं को कहीं भी नहीं पा रहा था और खुद को बौना अनुभव कर रहा था। उसका हृदय ग्लानि और पश्चाताप से भर गया।

उसने वहीं बैठे–बैठे प्रण किया कि वह कल स्कूल जाकर कक्षा के सभी लड़कों से माफी माँगेगा और उन्हें अपना मित्र बनाएगा। अपनी पॉकेटमनी से कैंटीन वाले को कर्ज़ चुकाएगा। साथ ही पिता जी व दादा जी के आदर्शों पर चल कर जीवन में कुछ कर दिखलाएगा।

इसी दृढ़ निश्चय और विश्वास के साथ वह अगले दिन स्कूल जाने की प्रतीक्षा में था । आज सचमुच ही 'विजय दिवस' के अवसर पर हार्दिक ने अपने घमंड पर विजय प्राप्त कर ली थी।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਸ਼ਹੀਦ	=	शहीद	ਜਿੱਤ	=	जीत
ਸਾਲ	=	साल	ਤਸਵੀਰ	=	तस्वीर
ਪੁਲਿਸ	=	पुलिस	ਘੜੀ	=	घड़ी
ਵਰਦੀ	=	वर्दी	ਮਿੱਤਰ	=	मित्र

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-

ਅੰਦਾਜ਼ਾ	=	अनुमान	ਯਾਦ	=	स्मृति
ਦੁਬਾਰਾ	=	पुनः	ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ	=	कार्यक्रम
ਖ਼ੂਨਦਾਨ	=	रक्तदान	ਸਿਰਲੇਖ	=	शीर्षक

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) हार्दिक अपनी माँ के साथ पूना से चंडीगढ़ क्यों जा रहा था?

(ख) हार्दिक को चंडीगढ़ जाना अच्छा क्यों नहीं लग रहा था?

(ग) ट्रेन से उतरते ही दादा जी को देखकर हार्दिक क्यों हैरान हो गया?

(घ) कक्षा के सभी विद्यार्थी हार्दिक से क्यों तंग रहते थे?

(ङ) विजय दिवस क्यों मनाया जाता है?

(च) स्कूल का नाम हार्दिक के पिता के नाम पर क्यों रखा गया?

(छ) हार्दिक ग्लानि और पश्चाताप से क्यों भर गया?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) हार्दिक के हृदय में एकाएक परिवर्तन कैसे हो गया? अपने शब्दों में लिखें।

(ख) 'विजय दिवस' पाठ के नाम की सार्थकता पर प्रकाश डालें।

5. वाक्यों में प्रयोग करें :-

घमंड ________ ______________________________

रक्तदान ________ ______________________________

उद्घाटन ________ ______________________________

महान ________ ______________________________

नामकरण ________ ______________________________

अचरज ________ ______________________________

गर्व ________ ______________________________

पश्चाताप ________ ______________________________

सम्मानित ________ ______________________________

6. इन मुहावरों के वाक्य बनायें :-

छक्के छुड़ाना ________ ____

जान देना ________ ____

सिर ऊँचा करना ________ ____

कान खड़े होना ________ ____

नाम रोशन करना ________ ____

सिर उठाना ________ ____

दबदबा होना ________ ____

7. विपरीत शब्द लिखें :-

साधारण = __________

विश्वास = __________

मित्र = __________

जीवन = __________

विजय = __________

प्रशंसा = __________

अपराधी = __________

8. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

युद्ध = __________, __________

कपड़ा = __________, __________

कान = __________, __________

बगीचा = __________, __________

दिन = __________, __________

घर = __________, __________

माँ = __________, __________

चरण = __________, __________

9. भाववाचक संज्ञा बनायें :-

वीर	=	__________	मित्र	=	__________
लड़का	=	__________	ऊँचा	=	__________
महान	=	__________	अच्छा	=	__________

10. शुद्ध करें :-

चढीगड़ = ______

युध = ______

सैलयूट = ______

आप्रेरशन = ______

प्रसंशा = ______

मालुम = ______

इमानदारी = ______

प्रन = ______

11. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें :-

देश के लिए प्राण न्यौछावर करना = ______

चार रास्तों का समूह = ______

जो अपराध न करे = ______

खून दान करना = ______

संकोच करने वाला = ______

मन की स्थिति = ______

पाठ ९

स्वराज्य की नींव

पात्र-परिचय

रानी :	झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
ताँत्या :	ताँत्या टोपे
जूही मोती बाई : झलकारी	स्त्री सैनिक व रानी की सहेलियाँ।
रघुनाथ : गुल मुहम्मद :	रानी के सैनिक सरदार

दृश्य : एक

(सन् 1857, अंग्रेज़ों की 'फूट डालो और राज करो' नीति सफल हो रही थी। झाँसी में भी वे अपना अधिकार जमाना चाहते थे। उन्होंने रानी के गोद लिए पुत्र को उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया था। रानी अपने सभासदों से विचार-विमर्श कर रही थी। जूही का प्रवेश)

जूही : महारानी की जय हो!

रानी : आओ जूही, क्या समाचार है ?

जूही : समाचार.... शुभ नहीं है।

रानी : एक गोरे, दूसरे स्वार्थी और गद्दार लोग.....ऐसे में शुभ समाचार की आशा करना ही व्यर्थ है....खैर कहो।

जूही : अंग्रेज़ों ने झाँसी को अपने अधिकार में लेने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

ताँत्या : अरे! अभी झाँसी शोक से नहीं उभरी और अंग्रेज़ों की यह चाल...........

रानी : उन्होंने शेरनी के मुँह में हाथ डालने की कोशिश की है.... उन्हें उनके अंजाम तक पहुँचाना होगा।

जूही : हाँ! सुना है कि आपको पाँच हज़ार रुपए पेंशन दी जाएगी।

रानी : हुँ....पेंशन.......मेरे देश, मेरे राज्य में विदेशी मुझे पेंशन देंगे.....मैं पेंशन न लूँगी, न ही अपनी झाँसी इन अंग्रेज़ ज़ालिमों को दूँगी।

रघुनाथ : महारानी धीरज से काम लें। एक तो अंग्रेज़ ताकत में हैं और दूसरे देशद्रोही उनके साथ हैं। ध्यान रहे मनुष्य के साहस और बुद्धि की परीक्षा विपरीत स्थिति में ही होती है।

रानी : तो क्या मैं उन फिरंगियों से हार मान लूँ?

ताँत्या : कदाचित नहीं......स्वराज्य की ज्वाला को सुलगने दो, अवसर आने पर विस्फोट करेंगे। अभी उनकी शक्ति परखते हैं और गुप्त तैयारी करेंगे।

रानी : ठीक है जूही तुम और मोतीबाई गुप्तचर बन अंग्रेज़ सिपाहियों से जानकारी हासिल करो।

जूही : हमारे अहोभाग्य ! हम स्वराज्य के लिए सब कुछ कुर्बान कर देंगे।

रानी : शाबाश सखी! मुझे तुम से यही आशा थी। जाओ और दिखा दो भारतीय नारी शक्ति को!

(जूही का प्रस्थान)

दृश्य : दो

(स्थान : शहर में रानी का महल)

(मोतीबाई का प्रवेश)

मोतीबाई : महारानी की जय हो।

रानी : महारानी नहीं सखी; स्वराज्य संग्राम में हम सभी बराबर हैं। कहो, क्या समाचार है?

मोतीबाई : अंग्रेज़ प्रजा पर अत्याचार कर रहे हैं। प्रजा स्वराज्य चाहती है। वीर-वीराँगनाओं की भुजाएँ अंग्रेज़ों से युद्ध को फड़फड़ा रही हैं।

रानी : आह! मेरी प्रजा पर अत्याचार ......प्रजा ही हमारी शक्ति है, परन्तु ......

मोतीबाई : परन्तु क्या? महारानी हम रणचंडी बनना चाहती हैं।

रानी : समय आने दो सखी! प्रजा में जोश भरो, अंग्रेज़ सेना के हिन्दुस्तानी सिपाहियों को स्वराज्य के लिए प्रेरित करो। देखना, मैं स्वयं प्रजा के आगे स्वराज्य का परचम लहराऊँगी।

ताँत्या : हमें अपनी वीराँगनाओं पर गर्व है।

जूही : अरे ! दुर्गा अवतार हैं हम! दुष्टों पर जब छायेंगी, छठी का दूध याद करायेंगी।

रघुनाथ : धन्य है ! भारत भूमि की नारी। माता का शीतल आँचल, दुष्टों की संहारक भी।

गुल मुहम्मद : अरे! हर हर महादेव का डमरू बाजेगा अंग्रेज़, दुम दबाकर भागेगा......गुलाम बनाएगा फिरंगी हमें, हुँह!

दृश्य : तीन

(मेरठ और दिल्ली में क्रान्ति हो गई। बहादुरशाह जफर सम्राट बन गए। विद्रोही सैनिक किले में प्रवेश कर गए। स्थान : रानी का महल (गुल का प्रवेश)

ताँत्या : आओ गुल, क्या समाचार है?

गुल : विद्रोही सैनिक किले में प्रवेश कर गए हैं। उन्होंने अंग्रेज़ सैनिकों पर धावा बोल दिया है। अंग्रेज़ अपने बाल-बच्चों के लिए पनाह माँग रहे हैं।

रानी : तो क्या आक्रमणकारी स्त्रियों और बच्चों पर भी हमला कर रहे हैं?

गुल : जी महारानी।

रानी : यह तो बहुत बुरा हुआ ..... स्त्रियों-बच्चों को हमारे महल में पनाह दो, मैं देखती हूँ।

रघुनाथ : क्या ......दुश्मन के बच्चों को पनाह!

रानी : हमारा युद्ध अंग्रेज़ों से हैं, निरपराध बच्चों और स्त्रियों से नहीं। शरणागत की रक्षा हमारी संस्कृति है।

(भीषण युद्ध हुआ। अंग्रेज़ परास्त हो गए। रानी ने विद्रोहियों को शाँत कर लौटा दिया। परन्तु स्वार्थी गद्दारों ने अंग्रेज़ों से मिल पुनः हमला कर दिया।)

(रानी अपने महल में)

रानी : रघुनाथ जी स्थिति विकट हो गयी है।

रघु : जी महारानी, एक क्रांति असमय हो गई और आस्तीन के साँपों ने फन दिखाये हैं।

रानी : साँपों के फन कुचलने हैं। सेना तैयार करो।

रघुनाथ : हमारे जाँबाज तैयार हैं।

रानी : ध्यान रहे यदि मैं युद्ध में काम आऊँ तो अंग्रेज़ों के अपवित्र हाथ मेरी देह को छूने न पायें।

सभी सैनिक : हमारे जीते जी आपका बाल भी बाँका न होगा।

रघुनाथ : स्थिति ऐसी है, हमें कालपी प्रस्थान करना होगा।

रानी : हाँ, वहाँ राव साहब व लालकुर्ती सेना में बहादुर सिपाही हैं।

गुल मुहम्मद : पर क्या इस संग्राम में वे हमारा साथ देंगे?

रानी : तुम भूलते हो गुल, स्वराज्य की बलिवेदी पर हिन्दू-मुसलमान सभी मर मिटने को तैयार हैं।

रघुनाथ : परन्तु किले से बाहर निकलना आसान नहीं।

झलकारी : अरे यह नाचीज़ किसलिए है? मैं रानी का वेश बना अंग्रेज़ों को भटकाऊँगी और स्वराज्य के लिए भेंट चढ़ी तो धन्य हो जाऊँगी।

रानी : धन्य हो झलकारी.......ईश्वर रक्षा करे, मेरे दोनों हाथों में तलवार दो.....चलो सैनिको।

(गुप्त स्थान पर)

रानी : वीर सरदारो ! झलकारी व अन्य बहादुर शेर स्वराज्य के लिए शहीद हो गए। जब तक हमारी जान में जान है, स्वराज्य के लिए लड़ेंगे। हमारा एक-एक बहादुर सौ-सौ गोरों पर भारी पड़ रहा है। फिरंगी भयभीत हैं। हाँ, ध्यान रहे अंग्रेज़ मेरी देह न छूने पायें।

गुल : हाथ काट कर चील कौवों को खिला देंगे। हमारी महारानी पर नज़र भी डाली तो।

रानी : चलो आक्रमण करो (रानी रणचंडी बन जाती है। मुँह में लगाम दबाये दोनों हाथों से युद्ध करती है। सबकी तलवारें कहर बरसा रही हैं। तभी एक अंग्रेज़ रानी के संगीन घोंप देता है।)

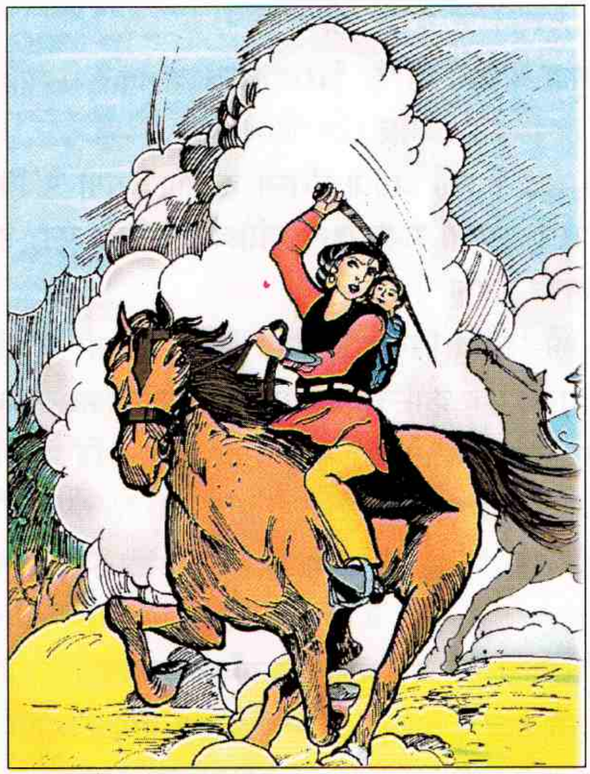

रानी : (घाव की परवाह न करते हुए) शाबाश वीरो, शाबाश! विजय हमारी है, हमारे खून का एक-एक कतरा स्वराज्य की नींव का पत्थर होगा।

रघुनाथ : कुछ ही सैनिक शेष हैं, कोई गोरा बचने न पायें। तभी एक गोली रानी की जाँघ पर लगती है। रानी घोड़े से गिरने लगती है।

रानी : (गिरते-गिरते) रघु.....गोरे मेरी देह को.......

(गुल मुहम्मद और रघुनाथ भागकर रानी को सम्भालते हैं और जंगल की ओर भाग जाते हैं)

दृश्य : चार

स्थान : संन्यासी की कुटिया

संन्यासी : बेटा! कौन हो तुम?

सभी : हम सैनिक हैं, हमारी रानी घायल है।

संन्यासी (पास आकर) : मेरे अहो भाग्य ! साक्षात देवी के दर्शन ! इधर लिटाओ इन्हें।

(साधु रानी के मुँह में गंगाजल डालते हैं।)

रानी : (अर्द्ध चेतना में) बाबा जी प्रणाम!

संन्यासी : स्वराज्य की देवी को मेरा शत-शत नमन!

रानी : बाबा स्वराज्य कब मिलेगा, कैसे....... ?

बाबा : बलिदान से। तुम्हारा बलिदान स्वराज्य की नींव का पत्थर है। इन वीर-वीरांगनाओं का रक्त इस नींव को पूरा करेगा जिस पर स्वराज्य की इमारत चमचमाएगी।

रानी : सच बाबा (फिर बुदबुदाते हुए) स्वराज्य की इमारत चमचमाएगी...... स्वराज्य का परचम लहराएगा (रानी अचेत हो जाती है।)

सभी सैनिक : आह ! अंधेरा..... घोर अंधेरा हो गया।

बाबा : नहीं-नहीं, प्रातः की किरण के साथ क्रान्ति रूपी सूर्य उदय होगा, स्वतंत्रता का प्रकाश लेकर....प्रकाश अनन्त है....प्रकाश अनंत है.....स्वराज्य चमचमाएगा .....चमचमाएगा।

(परदा गिरता है)

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼	=	अंग्रेज़	ਝਾਂਸੀ	=	झाँसी
ਪੈਨਸ਼ਨ	=	पेंशन	ਸਨਿਆਸੀ	=	संन्यासी
ਜ਼ਾਲਮ	=	ज़ालिम	ਪਰਚਮ	=	परचम

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें:-

ਸਵਰਾਜ	=	स्वराज्य	ਲਾਟ	=	ज्वाला
ਨੀਂਹ	=	नींव	ਬਹਾਦਰ ਔਰਤਾਂ	=	वीरांगनाएँ
ਫਜ਼ੂਲ	=	व्यर्थ	ਬੇਕਸੂਰ	=	निरपराध

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) अंग्रेज़ों की नीति क्या थी?

(ख) जूही ने रानी को क्या समाचार सुनाया?

(ग) महारानी के सम्मुख कौन-सी दो मुख्य चुनौतियाँ थीं?

(घ) जूही और मोतीबाई क्या-क्या कहकर रानी का हौसला बढ़ाती हैं?

(ङ) रघुनाथ के पूछने पर कि क्या आप दुश्मन के बच्चों को पनाह देंगी तो रानी क्या उत्तर देती है?

(च) पाठ में आस्तीन के साँप किसे कहा गया है?

(छ) रानी ने अपने सैनिकों से क्या कहा?

(ज) झलकारी स्वराज्य के लिए किस प्रकार समर्पण करना चाहती है?

(झ) घायल होने पर रानी अपने सिपाहियों से क्या कहती है?

(ञ) जब सिपाही रानी को संन्यासी की कुटिया में ले जाते हैं, तब संन्यासी ने क्या कहकर रानी को संबोधित किया?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) आप कैसे कह सकते हैं कि महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान स्वराज्य की नींव बना?

(ख) हमें किस घटना से पता चलता है कि रानी एक वीराँगना होते हुए भी ममतामयी माँ थी?

5. इन मुहावरों को अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

आस्तीन का साँप = ____

छठी का दूध याद आना = ____

बाल भी बाँका न होने देना = ____

6. नये शब्द बनायें :-

स्व + राज्य = स्वराज्य

गुप्त + चर = ________

देश + द्रोही = ________

आक्रमण + कारी = ________

अ + समय = ________

7. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

तलवार = ________, ________ हाथ = ________, ________

रक्त = ________, ________ स्वतंत्रता = ________, ________

घोड़ा = ________, ________ शहीद = ________, ________

इमारत = ________, ________ पत्थर = ________, ________

प्रणाम = ________, ________

8. लिंग जानें :-

वीर = वीराँगना साधु = साध्वी

दास = दासी रानी = राजा

9. विपरीत शब्द लिखें :-

अचेत = ________ स्वतंत्रता = ________ अंधेरा = ________

प्रातः = ________ गुप्त = ________ युद्ध = ________

10. इन वाक्यों में आए सर्वनाम शब्द को रेखाँकित करें तथा उसका भेद बतायें :-

वाक्य	भेद
(क) उन्होंने शेरनी के मुँह में हाथ डालने की कोशिश की है।	**पुरुषवाचक सर्वनाम**
(ख) मैं पेंशन नहीं लूँगी।	__________
(ग) आपको पाँच हज़ार रुपये पेंशन दी जायेगी।	__________
(घ) कोई भी बचने नहीं पाये।	__________
(ङ) बेटा! कौन आया है ?	__________
(च) यह रानी का महल है।	__________

11. (क) महारानी लक्ष्मीबाई की जीवनी पुस्तकालय से लेकर पढ़ें।

(ख) श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखित कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' पढ़ें और याद करें।

(ग) जिस प्रकार महारानी लक्ष्मीबाई ने देश के लिए बलिदान दिया। इसी प्रकार अन्य बलिदान होने वाले वीर-वीराँगनाओं की सूची बनाओ।

(घ) 'भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम' के बारे में जानकारी प्राप्त करो।

(ङ) वीरों के बलिदान से हमें स्वतंत्रता मिली है। इस स्वतंत्रता की रक्षा करना हम सबका कर्त्तव्य है। आप अपने देश की क्या सेवा कर सकते हैं ? सोचिये और लिखिये।

पाठ 10

बढ़े चलो, बढ़े चलो

न हाथ एक शस्त्र हो,
न हाथ एक अस्त्र हो,
न अन्न नीर वस्त्र हो,
हटो नहीं,
डटो वहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो ।।
रहे समक्ष हिम शिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाये तन बिखर,
रुको नहीं,
झुको नहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।

घटा घिरी अटूट हो,
अधर पे कालकूट हो,
वही सुधा का घूँट हो,
जिये चलो,
मरे चलो,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।

गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपना फाग हो,

अड़ो वहीं,
गड़ो वहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।

चलो, नयी मिसाल हो,
जलो, नयी मशाल हो,
बढ़ो, नया कमाल हो,
झुको नहीं,
रुको नहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।

अशेष रक्त तोल दो,
स्वतन्त्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोल दो,
डरो नहीं,
मरो वहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो॥

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਸ਼ਸਤਰ	=	शस्त्र	ਅਤੁੱਟ	=	अटूट
ਅਸਤਰ	=	अस्त्र	ਮਿਸਾਲ, ਉਦਾਹਰਨ	=	मिसाल, उदाहरण

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-**

ਬਰਫ਼ਾਨੀ ਚੋਟੀ	=	हिम शिखर	ਜ਼ਹਿਰ	=	कालकूट
ਹੋਂਠ, ਬੁਲ੍ਹ	=	अधर	ਹੋਲੀ	=	फाग
ਅਮ੍ਰਿਤ	=	सुधा	ਆਜ਼ਾਦੀ	=	स्वतंत्रता

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) कवि किन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा है ? कोष्ठक में दिए संकेतों पर निशान लगाइए।
(बालकों को, युवाओं को, देशवासियों को, स्वतंत्रता सेनानियों को)

(ख) कवि अस्त्र-शस्त्र के बिना लड़ने का सुझाव क्यों देता है ?

(ग) यह कविता देश के आज़ाद होने से पहले लिखी गयी थी अथवा बाद में ?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) कवि अपने पाठकों को मशाल बन कर जलने की प्रेरणा क्यों देता है ?

(ख) जियो चलो, मरे चलो, -कवि जीवन और मृत्यु को साथ लेकर चलता है-क्यों ?

(ग) कविता का सार लिखें।

5. इन शब्दों के अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

समक्ष ______ ______________________________

कालकूट ______ ______________________________

सुधा ______ ______________________________

फाग ______ ______________________________

अशेष ______ ______________________________

6. विपरीतार्थक शब्द लि

स्वतंत्रता = ______ मरण = ______ कालकूट = ______

7. संज्ञा शब्द बनायें :-

रुकना = ______ झुकना = ______ जलना = ______

निखरना = ______ बिखरना = ______

8. इन शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-

वस्त्र = ______, ______

शिखर = ______, ______

अटूट = ______, ______

राग = ______, ______

मशाल = ______, ______

मिसाल = ______, ______

नीर = ______, ______

पाठ 11

धीरा की होशियारी

धीरा जूते पालिश करता था। जब वह बहुत छोटा था तभी उसके पिता का स्वर्गवास हो गया था। अब वह अपनी माँ और बहन के साथ एक पुरानी झुग्गी में रहता था। धीरा बहुत मेहनती लड़का था। स्कूल बंद होने के बाद पैसे कमाने के लिए वह एक सिनेमा हॉल के निकट बैठकर जूते पॉलिश करने का काम करता था।

एक दिन बड़ी गर्मी थी। वह एक पेड़ की छाया में बैठकर अपनी दिन-भर की कमाई गिनता हुआ एक लोकप्रिय धुन गुनगुना रहा था। उसी समय उसने एक राहगीर को कहते सुना, ''एक चोर जौहरी की दुकान से चोरी करके भाग गया है।''

धीरा ने गिनती बंद कर पैसे जेब में डाल लिये और उस आदमी से पूछा, ''कब? कहाँ?''

''बस अभी-अभी। उसने सोने का एक कंठा चुराया और भाग गया। लोग कह रहे थे कि चोर की दाढ़ी थी।'' यह बताकर राहगीर ने अपना रास्ता लिया।

धीरा पूरी बात का पता लगाने जौहरी की दुकान पर जाना चाहता था कि एक ग्राहक आ गया।

ग्राहक ने अपनी कलाई घड़ी की ओर देखते हुए धीरा से कहा, ''अरे लड़के, ज़रा जूता अच्छी तरह से पॉलिश कर दो। मुझे कोई जल्दी नहीं है।'' ग्राहक ने पतलून-कमीज़ पहनी हुई थी और लाल टाई बाँध रखी थी। देखने में वह एक अमीर आदमी लगता था।

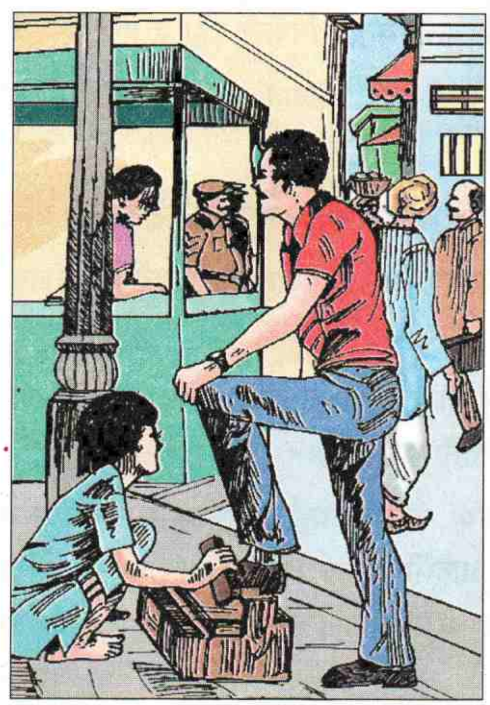

धीरा तुरंत उसका जूता पॉलिश करने बैठ गया, मगर उसका मन चोरी की घटना की ओर ही लगा हुआ था।

ग्राहक ने पहले बायाँ पैर स्टैंड पर रखा। पीला कपड़ा लेकर धीरा ने जूते की धूल पोंछ फिर एक टिन खोलकर पॉलिश निकाली और ब्रुश से जूते पर फैला दी। फिर वह जल्दी-जल्दी उसे चमकाने लगा। थोड़ी देर में जूता चमक उठा।

तभी धीरा ने कनखियों से देखा कि दो सिपाही आ रहे हैं। उनसे वह चोरी के बारे में पूछना चाहता था, लेकिन ग्राहक का मिज़ाज गरम हो रहा था।

''ऐ लड़के, तुम अपना काम ठीक से करो। तुम्हारा ध्यान कहाँ है? मेरा जूता ऐसे रगड़ो कि वह चमक जाये। अभी शो खत्म होने में पाँच मिनट बाकी हैं।''

धीरा घबरा गया। 'यह कोई बड़ा आदमी है। कहीं सिपाही से मेरी शिकायत न कर दे।' उसने स्वयं से कहा। वह अपना पूरा ध्यान लगाकर जूता पॉलिश करने लगा।

बायाँ जूता पॉलिश करने के पश्चात् धीरा बोला, ''हुज़ूर दूसरा पाँव ऊपर रखिए।''

उस आदमी ने दूसरा पैर स्टैंड पर रख दिया।

''ओ लड़के, ज़रा जल्दी करो। शो खत्म होने में केवल दो मिनट बाकी हैं।''

'अजीब आदमी है,' धीरा सोचने लगा, 'अभी तो कह रहा था कि उसे जल्दी नहीं है और अब इतनी जल्दी में है।'

धीरा ने जूते की धूल झाड़ी और पॉलिश लगा दी। जैसे ही वह जूते को कपड़े से चमकाने लगा कि उसने देखा जूते में से कुछ बाहर निकल रहा है।

''यह क्या हो सकता है?'' धीरा सोचने लगा। उसने सिर झुका कर फिर अच्छी तरह से देखा। 'बाप रे.....'

''बस ठीक है। समय हो गया है।'' आदमी ने स्टैंड से पाँव हटा लिया।

धीरा जूते को फिर भी चमकाता रहा। आदमी उसे देने के लिए बटुए में से रेज़गारी निकालने लगा।

धीरा ने चुपचाप उसके दोनों जूतों के फीते एक दूसरे से बाँध दिये और उठ खड़ा हुआ। उसने उसके हाथ से पैसे भी नहीं पकड़े।

वह लपक कर सिपाहियों के पास पहुँचा। पीछे से उसने आदमी को चिल्लाते सुना, ''ओ बदमाश, ज़रा ठहर।'' लेकिन आदमी ने जब चलना चाहा तो मुँह के बल गिर पड़ा। अभी वह उठने की कोशिश कर ही रहा था कि धीरा सिपाहियों को लेकर आ गया। उन्होंने उस आदमी को हिरासत में ले लिया।

हाँ, वही चोर था।

सोने का कंठा उसके जूते में से निकला और उसकी नकली दाढ़ी उसकी जेब में से। सिपाही उसे थाने ले गये।

धीरा की बहुत प्रशंसा हुई। पुलिस और जौहरी दोनों ने उसे इनाम दिया। उसके स्कूल ने भी उसकी होशियारी पर उसे एक पदक प्रदान किया।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਛੋਟਾ	=	छोटा	ਗਾਹਕ	=	ग्राहक
ਪਾਲਸ਼	=	पॉलिश	ਸਟੈਂਡ	=	स्टैंड
ਝੁੱਗੀ	=	झुग्गी	ਇਨਾਮ	=	इनाम

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-**

ਮੌਤ	=	स्वर्गवास	ਧੂੜ	=	धूल
ਭੈਣ	=	बहन	ਭਾਨ	=	रेज़गारी
ਖੱਬਾ	=	बायाँ	ਕੈਦ	=	हिरासत

3. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) धीरा स्कूल के बाद कहाँ और क्या काम करता था?

(ख) धीरा ने राहगीर से क्या सुना?

(ग) ग्राहक की वेशभूषा कैसी थी?

(घ) धीरा को कौन-से पैर के जूते में से कुछ बाहर निकलता हुआ दिखाई दिया?

(ङ) धीरा ने चोर के जूतों के फीते कैसे बाँधे?

(च) चोर कौन था?

(छ) धीरा को किस-किसने इनाम दिया?

4. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) धीरा ने चोर को कैसे पकड़वाया? अपने शब्दों में लिखें।

(ख) 'धीरा एक मेहनती लड़का था।' कहानी के आधार पर लिखें।

5. **इन शब्दों/मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनायें :-**

गुनगुनाना ________ ____

मिज़ाज गरम होना ________ ____

मुँह के बल गिरना ________ ____

6. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

स्वर्गवास = ________, ________
राहगीर = ________, ________
आदमी = ________, ________
हिरासत = ________, ________

7. विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें :-

गर्मी	= ________	दायाँ	= ________
छाया	= ________	नकली	= ________
अमीर	= ________	इनाम	= ________

8. बहुवचन रूप लिखें :-

सिपाही	= ________	आदमी	= ________
झुग्गी	= ________	चोरी	= ________
जौहरी	= ________	घड़ी	= ________

9. अन्तर समझें और वाक्यों में प्रयोग करें :-

(क) धुन = गीत की लय ________________________________
धुन = निश्चय, दृढ़ ________________________________

(ख) सोना = एक धातु,जिसके गहने बनाये जाते हैं। ________________________________
सोना = सोने की क्रिया, नींद में लेटकर सो जाना ________________________________

(ग) ध्यान = तल्लीन होकर काम करना ________________________________
ध्यान = परमात्मा की ओर मन लगाना ________________________________

10. धीरा ने अपनी होशियारी से चोर को पकड़वाया। मान लो आप अपनी बहन/माँ के साथ बाज़ार जा रहे हैं। किसी ने आपकी बहन/माँ का पर्स छीन लिया। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे ? अपने विचार लिखें।

11. इन वाक्यों में क्रिया अकर्मक है अथवा सकर्मक है ? लिखें ।

(क) धीरा जूते पॉलिश करता था। सकर्मक
(ख) धीरा घबरा गया। ________
(ग) वह लपक कर सिपाहियों के पास पहुँचा। ________
(घ) दो सिपाही आ रहे हैं। ________
(ङ) वह एक लोकप्रिय धुन गुनगुना रहा था। ________
(च) धीरा बहुत मेहनती लड़का था। ________
(छ) धीरा ने चुपचाप उसके दोनों जूतों के फीते एक दूसरे से बाँध दिये। ________

1. धीरा जूते पॉलिश करता था।
2. धीरा द्वारा जूते पॉलिश किये जाते थे।
3. धीरा से रहा नहीं गया।

उपर्युक्त पहले वाक्य में क्रिया कर्त्ता (धीरा) के अनुसार है, दूसरे वाक्य में क्रिया कर्म (जूते) के अनुसार है तथा तीसरे वाक्य में कर्म नहीं है अर्थात यहाँ भावों (रहा नहीं गया) की ही प्रधानता है।

अतएव क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाये कि क्रिया कर्त्ता के अनुसार है या कर्म के अनुसार है या भाव के अनुसार है, उस रूप को वाच्य कहते हैं।

इस तरह वाच्य तीन प्रकार के होते हैं :-

1. कर्त्तृवाच्य **2. कर्मवाच्य** **3. भाववाच्य**

(i) **धीरा धुन गुनगुना रहा था।**

(ii) **धीरा द्वारा धुन गुनगुनायी जा रही थी।**

पहले वाक्य में कर्त्ता (धीरा) प्रधान है और क्रिया का लिंग, (गुनगुना रहा था) एवं वचन उसी कर्त्ता के अनुसार है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में कर्त्ता प्रधान हो, उसे कर्त्तृवाच्य कहते हैं।

दूसरे वाक्य में क्रिया (गुनगुनायी जा रही थी) का लिंग एवं वचन कर्त्ता (धीरा) के अनुसार न होकर कर्म (धुन) के अनुसार है, यहाँ क्रिया कर्म वाच्य है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में कर्म प्रधान हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

(iii) **धीरा से रहा नहीं गया।**

तीसरे वाक्य में 'रहा नहीं गया' क्रिया का भाव ही मुख्य है। क्रिया अकर्मक है जो अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में क्रिया के भाव की प्रधानता के कारण अकर्मक क्रिया का प्रयोग हो और जो सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिंग तथा एकवचन में हो, उसे भाव वाच्य कहते हैं।

पाठ 12

अशोक का शस्त्र-त्याग

(पहला दृश्य)

(एक मैदान में मगध के सैनिकों के शिविर लगे हैं। बीच में मगध की पताका फहरा रही है। पताका के पास ही सम्राट अशोक का शिविर है। संध्या बीत चुकी है। आकाश में तारे चमकने लगे हैं। शिविरों में दीपक जल गए हैं। अपने शिविर में अशोक अकेले टहल रहे हैं उनके मुख पर चिंता की छाया है। वे कुछ सोचते हुए आसन पर बैठ जाते हैं।)

अशोक : (स्वत:) आज चार साल से यह युद्ध हो रहा है और कलिंग आज भी जीता नहीं जा सका है। दोनों ओर के लाखों आदमी मारे गए हैं, लाखों घायल हुए हैं, पर हम आज भी असफल हैं। क्या होगा इसका परिणाम?

द्वारपाल : (सिर झुकाकर) राजन्! संवाददाता आना चाहता है।

अशोक : आने दो।

संवाददाता : (प्रवेश कर) महाराज अशोक की जय हो। शुभ समाचार है। गुप्तचर समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गये हैं।

अशोक : (प्रसन्नता पूर्वक) मारे गये हैं! तो मगध की विजय हुई है! कलिंग जीत लिया गया है। (संवाददाता चुप रहता है।)

अशोक : बोलते क्यों नहीं हो तुम? चुप क्यों हो?

संवाददाता : (धीरे से) बोलूँ क्या महाराज! कलिंग-दुर्ग के फाटक आज भी बंद हैं। फिर किस मुँह से कहूँ कि कलिंग जीत लिया गया है?

अशोक : (उत्तेजित होकर) कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं!

संवाददाता : हाँ महाराज! कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं।

अशोक : (उत्तेजित होकर खड़े होते हुए) बंद हैं तो खुल जायेंगे। जाओ, जाकर सेनापति से कह दो कि कल सेना का संचालन मैं स्वयं करूँगा। कल या तो कलिंग के दुर्ग के फाटक खुल जायेंगे या मगध की सेना ही वापस चली जायेगी। जाओ। (हाथ से जाने का संकेत करते हैं।)

(दूसरा दृश्य)

(दूसरे दिन प्रात: काल का समय। शस्त्र-सज्जित अशोक घोड़े पर बैठे हैं। उनके पास उनका सेनापति है। सामने कलिंग-दुर्ग है, जिसके फाटक बंद हैं।)

अशोक : मेरे वीर सैनिको! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम कलिंग को जीत

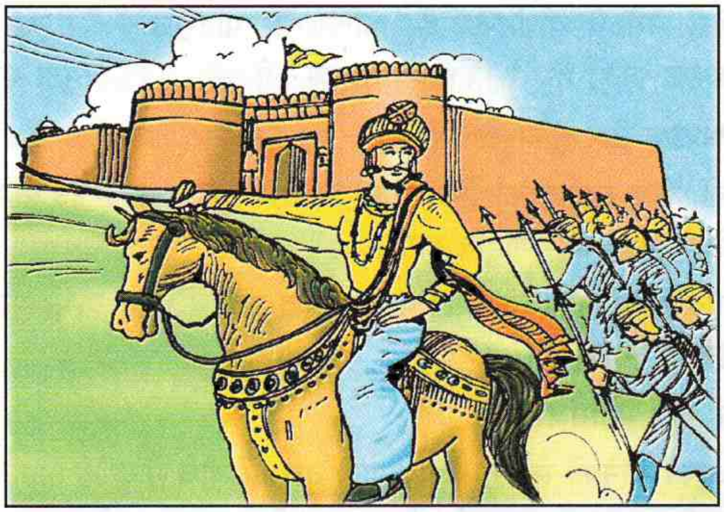

नहीं पाये हैं। उसके किसी दुर्ग पर मगध की पताका नहीं फहरा रही है। कलिंग के महाराज मारे गये हैं। उनके सेनापति पहले ही कैद हो चुके हैं, फिर भी कलिंग आत्मसमर्पण नहीं कर रहा है। आओ, आज हम अपनी मातृभूमि की शपथ लेकर प्रण करें कि या तो हम कलिंग के दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जायेंगे।

सब सैनिक : (तलवार खींचकर) मगध की जय। सम्राट अशोक की जय।

(सहसा दुर्ग का फाटक खुल जाता है। सब आश्चर्य से उधर देखने लगते हैं। उनकी तलवारें खिंची की खींची रह जाती हैं। शस्त्र-सज्जित स्त्रियों की विशाल सेना फाटक के बाहर निकलने लगती है। सेना के आगे पुरुष भेष में एक वीरांगना है, जो सैनिक भेष में साक्षात् चंडी-सी दिखाई देती है। यह कलिंग महाराज की लड़की पद्मा है। स्त्रियों की सेना अशोक की सेना से कुछ दूरी पर रुक जाती है। अशोक के सिपाही मंत्रमुग्ध से देखते रह जाते हैं। अशोक भी चकित रह जाते हैं।)

पद्मा : (आगे बढ़कर अपनी सेना से) बहनो! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो। मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना। जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है, वह तुम्हारे सामने खड़ी है। आज उसी से तुम्हें लोहा लेना है। तुम प्रण करो कि जननी जन्म-भूमि को पराधीन होते देखने से पहले तुम सदा के लिए अपनी आँखें बंद कर लोगी।

अशोक : (स्वत:) यह कौन है? क्या साक्षात दुर्गा कलिंग की रक्षा करने के लिए युद्धभूमि में उतर आई है। शेष सैनिक भी सभी स्त्रियाँ हैं। क्या स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा, क्या अशोक को स्त्रियों का वध करना होगा। ना! ना! मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा। मुझे विजय नहीं चाहिए। मैं यह पाप नहीं करूँगा। मैं शस्त्र नहीं चलाऊँगा। (प्रकट) सैनिको, स्त्रियों पर हाथ न उठाना (आगे बढ़कर) तुम कौन हो देवी?

पद्मा : मैं कलिंग महाराज की कन्या हूँ। मैं हत्यारे अशोक की सेना से लड़ने आई हूँ। जब

तक मैं हूँ, मेरी ये वीरांगनाएँ हैं, कलिंग के भीतर कोई पैर नहीं रख सकता। कहाँ हैं अशोक, कहाँ हैं मेरे पिता का हत्यारा? मैं द्वंद्व-युद्ध करना चाहती हूँ।

(अशोक सिर झुका लेते हैं)

पद्मा : क्यों, सिर क्यों झुका लिया महाराज? मैं युद्ध चाहती हूँ, केवल युद्ध। आज आपके भीषण युद्ध की पूर्णाहुति होगी।

अशोक : बहुत हो चुका राजकुमारी। मैं अब युद्ध नहीं करूँगा। कभी युद्ध नहीं करूँगा। तलवार नीचे फेंक देते हैं।

पद्मा : यह क्या महाराज?

अशोक : (अपने सैनिकों से) तुम भी अपनी तलवारें नीचे फेंक दो। आज से अशोक तुम्हें कभी किसी पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं देगा। फेंक दो अपनी तलवारें। (सभी सैनिक अपनी-अपनी तलवारें फेंक देते हैं।)

पद्मा : (आगे बढ़कर) मैं भुलावे में नहीं आ सकती महाराज। मैं तुमसे युद्ध करूँगी। मुझे अपने पिता का बदला लेना है।

अशोक : (सिर झुकाकर) तो लीजिए बदला, राजकुमारी। मैं अपराधी हूँ। जिस अशोक ने लाखों का सिर काटा है और जिस अशोक का सिर आज तक किसी के आगे नहीं झुका, वह आपके आगे नत है। काट लीजिए इस सिर को। मैं हथियार नहीं उठाऊँगा। मेरी प्रतिज्ञा अटल है।

(अशोक सिर झुकाकर खड़े हो जाते हैं।)

पद्मा : तो जाइये महाराज! स्त्रियाँ भी निहत्थों पर वार नहीं करेंगी। आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिए। (अपनी स्त्रियों की सेना के साथ दुर्ग में चली जाती है।)

(तीसरा दृश्य)

(अशोक और उनके सभी सरदार पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके सामने एक बौद्ध भिक्षु बैठे हुए हैं।)

बौद्ध भिक्षु : (अशोक से) कहो, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि...............

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि ....

बौद्ध भिक्षु : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे...............

अशोक : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे...............

बौद्ध भिक्षु : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

अशोक : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

बौद्ध भिक्षु : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदावर्त आप सबको मिलेगा।

अशोक : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदावर्त आप सबको मिलेगा।

बौद्‌ध भिक्षु : प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहूँगा, अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियों को सुख और शांति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूँगा।

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं जीवनभर आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

बौद्‌ध भिक्षु : बोलो :-

बुद्‌धं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।

सभी : बुद्‌धं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।

(पटाक्षेप)

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਅਸ਼ੋਕ	=	अशोक	ਕਲਿੰਗ	=	कलिंग
ਮਗਧ	=	मगध	ਤਲਵਾਰ	=	तलवार
ਸ਼ਿਵਿਰ	=	शिविर	ਨਿਹੱਥਾ	=	निहत्था

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-

ਸਮਾਚਾਰ ਦੇਣ ਵਾਲਾ	=	संवाददाता	ਭੈਣ	=	बहन
ਸੂਹੀਆ	=	गुप्तचर	ਬਹਾਦਰ ਔਰਤ	=	वीरांगना
ਹੱਤਿਆ	=	वध	ਝੰਡਾ	=	पताका
ਕਿਲ੍ਹਾ	=	दुर्ग			

3. इन शब्दों/मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करें :-

मंत्रमुग्ध होना ________ ______________________________

लोहा लेना ________ ______________________________

सदा के लिए आँखें बंद कर लेना ________ ______________________________

पूर्णाहुति ________ ______________________________

तलवार फेंक देना ________ ______________________________

सिर काटना ________ ______________________________________

सिर न झुकना ________ ______________________________________

सदावर्त ________ ______________________________________

साक्षात् चंडी-सी दिखाई देना ________ ______________________________________

मृत्यु की गोद में सो जाना ________ ______________________________________

मुख पर चिंता की छाया होना ________ ______________________________________

4. उपयुक्त शब्द से रिक्त स्थान भरें :-

(क) अशोक ने स्वयं सेना का------करने का निश्चय किया। (नेतृत्व, संचालन, स्वामित्व)

(ख) कलिंग से युद्ध------चलता रहा। (तीन, पाँच, चार वर्ष)

(ग) कलिंग के महाराजा के मरने का समाचार पाकर अशोक----हुए। (प्रसन्न, विस्मित, स्तब्ध)

(घ) कलिंग के फाटक बंद हैं, यह समाचार सुनकर अशोक------हुए। (लज्जित, दु:खी, उत्तेजित, क्रोधित)

(ङ) पद्मा के सम्मुख अशोक तलवार फेंक देता है क्योंकि वह----। (डर, निराश, नारी वध नहीं करना चाहता था, आत्मग्लानि)

5. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) अशोक अपने शिविर में परेशान क्यों है ?

(ख) संवाददाता ने अशोक को क्या समाचार दिया ?

(ग) मगध की विजय हुई है, पूछने पर संवाददाता चुप क्यों रह जाता है ?

(घ) अशोक ने सेना-संचालन का भार अपने ऊपर क्यों लिया ?

(ङ) अशोक पद्मा के युद्ध के लिए ललकारने पर तलवार क्यों फेंक देता है ?

(च) बदला लेने का अवसर मिलने पर भी पद्मा अशोक को युद्धभूमि से सुरक्षित क्यों जाने देती है ?

6. इन प्रश्नों के उत्तर-चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म क्यों अपनाया ?

(ख) सम्राट अशोक ने बौद्धभिक्षु के सामने क्या-क्या प्रतिज्ञाएँ कीं ?

7. लिंग बदलें :-

सम्राट	=	सम्राज्ञी	देवी	=	________
महाराज	=	________	पुरुष	=	________
प्रात:काल	=	________	पति	=	________

8. **समुचित विराम चिह्न लगायें :-**

यह कौन है क्या साक्षात् दुर्गा कलिंग की रक्षा करने के लिए युद्ध भूमि में उतर आई है शेष सैनिक भी सभी स्त्रियाँ हैं क्या स्त्रियों से युद्ध करना होगा क्या अशोक को स्त्रियों का भी वध करना होगा ना ना मैं स्त्री वध नहीं करूँगा मुझे विजय नहीं चाहिए मैं यह पाप नहीं करूँगा मैं शस्त्र नहीं चलाऊँगा।

चिन्तन

(1) **बुद्धं शरणं गच्छामि।**

अर्थात् बुद्ध की शरण में जाता हूँ।

(2) **संघं शरणं गच्छामि।**

अर्थात् संघ (संस्था) की शरण में जाता हूँ।

(3) **धर्मं शरणं गच्छामि।**

अर्थात् धर्म की शरण में जाता हूँ।

मनन : सर्वप्रथम गुरु की शरण, फिर संस्था, फिर धर्म। गुरु एक व्यक्ति है: व्यक्ति से बड़ी संस्था है, सब से ऊपर धर्म है। यहाँ संस्था का अर्थ संगठन, जमात, मत है। और धर्म का अर्थ मूल सिद्धांत– सत्य, अहिंसा आदि हैं : जिसका स्थान सबसे ऊँचा है।

तुम प्रण करो कि जननी जन्मभूमि को पराधीन होते देखने से पहले तुम सदा के लिए अपनी आँखें बंद कर लोगी।

नारी (पद्मा) की यह घोषणा देश प्रेम का ज्वलंत उदाहरण है। नारियों में वीरता, त्याग व बलिदान की भावना मनुष्यों से कम नहीं, उपरोक्त कथन पर मनन करें। देश प्रेम का व्रत लें। पद्मा जैसी हठव्रती, त्यागमयी, वीर नारी ने ही हिंसक अशोक को अहिंसक और करुणामय बना दिया। इतिहास को नयी दिशा दी।

उन नारियों के नाम पता करो जिन्होंने पद्मा के समान देश के लिए अपने–आप को पूर्ण रूप से समर्पण किया। ऐसी पुस्तकें पुस्तकालय से लेकर पढ़ें और उनकी जीवन से प्रेरणा लें।

प्रयोगात्मक व्याकरण

1. कलिंग के फाटक **आज** बंद हैं।
2. महाराज! आप **यहाँ** बैठिए।
3. सैनिक ने अपनी तलवार **झटपट** संभाल ली।
4. **अधिक** मत बोलो।

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'आज' शब्द क्रिया के काल, दूसरे वाक्य में 'यहाँ' शब्द क्रिया के स्थान, तीसरे वाक्य में 'झटपट' शब्द क्रिया की रीति तथा चौथे वाक्य में 'अधिक' शब्द क्रिया की मात्रा संबंधी विशेषता बता रहे हैं अत: ये क्रिया विशेषण हैं।

अतएव क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं।

1. –मैं युद्ध **कल** करूँगा।

इस वाक्य में 'कल' शब्द से क्रिया के काल (समय) का पता लग रहा है। अत: यह कालवाचक क्रियाविशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया के काल (समय) संबंधी विशेषता बताये, उसे कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

अन्य कालवाचक शब्द :– रोज़, प्रात:, परसों, अभी, सुबह, शाम, रात, कभी, अब, तब, आजकल आदि।

2. सब आश्चर्य से **उधर** देखने लगते हैं।

इस वाक्य में 'उधर' शब्द से क्रिया के स्थान का पता चल रहा है। अत: यह स्थानवाचक क्रियाविशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया की स्थान संबंधी विशेषता बताये, उसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य स्थानवाचक क्रियाविशेषण : यहाँ, वहाँ, इधर, ऊपर, नीचे, भीतर, बाहर, दूर, आगे, पीछे, चारों तरफ आदि।

3. वह **बहुत** बोलता है।

इस वाक्य में 'बहुत' शब्द से क्रिया की मात्रा या परिमाण का पता चल रहा है। अत: यह परिमाणवाचक क्रिया विशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया की परिमाण संबंधी विशेषता बताये, उसे परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य परिमाणवाचक शब्द : थोड़ा, ज्यादा, कम, पर्याप्त, तनिक, इतना, उतना, न्यून, लगभग, काफी आदि।

4. संवाददाता महाराज से **धीरे-से** बोला।

इस वाक्य में 'धीरे-से' शब्द से क्रिया की रीति (ढंग) का पता चल रहा है अत: यह रीतिवाचक क्रिया विशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया की रीति संबंधी विशेषता बताये, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य रीतिवाचक क्रियाविशेषण : ऐसे, कैसे, जैसे, तैसे, वैसे, जल्दी-जल्दी, अकस्मात, अचानक, सहसा, सामान्यत:, साधारणत: आदि।

पाठ 13

साक्षरता अभियान

दूर कहीं जंगल से तिनका,
चिड़िया बीन-बीन कर लाती।
जोड़-जोड़ इन तिनकों को,
लघु अपना वह नीड़ रचाती।

राहगीर पग बढ़ा-बढ़ा कर,
निज पथ पर चलते रहते हैं।
हिम्मत और विश्वास जगाकर,
मंज़िल को पा जाते हैं।

जल की छोटी-छोटी बूँदें,
टपक-टपक घट भर देतीं।
छेद एक यदि उसमें कर दें,
बूँदें घट खाली कर देतीं।

थोड़ा-थोड़ा प्रतिदिन पढ़ कर,
हम ज्ञानी बन सकते हैं।
रोज़ बचाएं यदि इक पैसा,
धन एकत्रित कर सकते हैं।

एक-एक अक्षर भी हर पल,
सीखें और सिखाते जाएँ।
शब्द ज्ञान बढ़ाएँ अपना,
भाषा पर अधिकार जमाएँ।

रखें निरन्तर यह क्रम जारी,
मेहनत लाती है धन मान।
साक्षरता अभियान चलाएँ,
बन जाएँ भारी विद्वान।

देश भारत के हम सब बालक,
आगे बढ़ते जाएँगे।
श्रम करना है धर्म हमारा,
कभी नहीं घबरायेंगे।

पढ़-लिख अपना ज्ञान बढ़ाएँ,
लेकर सबको साथ चलेंगे।
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर,
जीवन अपना कृतार्थ करेंगे।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਚਿੜੀ	=	चिड़िया	ਛੇਕ	=	छेद
ਜੰਗਲ	=	जंगल	ਬੂੰਦਾਂ	=	बूँदें
ਜਲ	=	जल	ਗਿਆਨੀ	=	ज्ञानी
ਸ਼ਬਦ	=	शब्द	ਭਾਸ਼ਾ	=	भाषा
ਧਰਮ	=	धर्म	ਵਿਦਵਾਨ	=	विद्वान

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-

ਸਾਖ਼ਰਤਾ	=	साक्षरता	ਘੜਾ	=	घट
ਅੰਦੋਲਨ	=	अभियान	ਅੱਖਰ	=	अक्षर
ਆਲ੍ਹਣਾ	=	नीड़	ਸਫਲ	=	कृतार्थ
ਲਗਾਤਾਰ	=	निरन्तर	ਮੁਸਾਫ਼ਰ	=	राहगीर

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) साक्षरता का क्या अर्थ है ?

(ख) चिड़िया अपना घोंसला बनाने के लिए क्या करती है ?

(ग) हम अपनी मंज़िल को कैसे पा सकते हैं ?

(घ) हम ज्ञानी कैसे बन सकते हैं ?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) कवयित्री ने साक्षरता अभियान को समझाने के लिए कौन-कौन से उदाहरण दिये हैं ?

(ख) साक्षर बनने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

5. अर्थ लिखते हुए वाक्य बनायें :-

राहगीर ______ ____

नीड़ ______ ____

मंज़िल ______ ____

अभियान ______ ____

कृतार्थ ______ ____

6. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें :-

1. जल की छोटी-छोटी बूँदें
   टपक टपक घट भर देतीं

2. रोज़ बचाएँ यदि इक पैसा
   धन एकत्रित कर सकते हैं।

3. शब्द ज्ञान बढ़ाएँ अपना
   भाषा पर अधिकार जमाएँ।

4. श्रम करना है धर्म हमारा
   कभी नहीं घबरायेंगे।

7. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

जंगल = ________, ________

नीड़ = ________, ________

पग = ________, ________

घट = ________, ________

राहगीर = ________, ________

श्रम = ________, ________

8. बहुवचन रूप लिखें :-

चिड़िया = ________

पैसा = ________

तिनका = ________

भाषा = ________

बूँद = ________

मंज़िल = ________

9. इन अक्षरों को जोड़कर शब्द लिखें :-

अक्षर = अ + क् + ष + र + अ

---- = च् + इ + ड़ + इ + य + आ

---- = स् + आ + क् + ष + र् + अ + त् + आ

----- = अ + भ् + इ + य + आ + न् + अ

10. देश को साक्षर बनाने के लिए आप क्या योगदान दे सकते हैं ? पाँच वाक्य लिखें ।

11. यदि देश के सभी नागरिक पढ़े-लिखे होंगे तो देश को क्या लाभ होगा ?

जानिये :- 1. हमें भविष्य के लिए सदैव कुछ धन बचाकर रखना चाहिए। प्रतिदिन बचाया गया थोड़ा-थोड़ा पैसा हमें जीवन में एकदम आने वाली कठिनाइयों से बचा सकता है।

2. यह भी याद रखें कि जीवन में पैसा बहुत कुछ है, पर सब कुछ नहीं। जीवन में बहुत कुछ ऐसा होता है, जिसे धन-दौलत देकर भी नहीं खरीदा जा सकता। हमें अच्छे व सच्चे मित्र, प्यार करने वाले माँ-बाप भाई-बहन, और ऐसी बहुत सारी चीज़ों के मूल्यों को भी समझना चाहिए।

3. ज्ञान बढ़ाओ और बाँटो। इससे आप किसी के और कोई आपका मित्र बन जायेगा।

पाठ 14

गिल्लू

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कन्धे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघु प्राणी की खोज है।

परंतु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुआ-छुऔवल जैसा खेल खेल रहे हैं। गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई। निकट जाकर देखा, गिलहरी का एक छोटा-सा बच्चा है, जो सम्भवत: घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघु प्राणी के लिए बहुत थे, अत: वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका पड़ा था।

सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अत: इसे ऐसे ही रहने दिया जाये।

परन्तु मन नहीं माना-उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लायी, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया।

रुई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हे-से मुँह में लगायी, पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गयीं।

कई घंटे के उपचार के उपरान्त उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़कर, नीले काँच के मोतियों-जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोयें, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया।

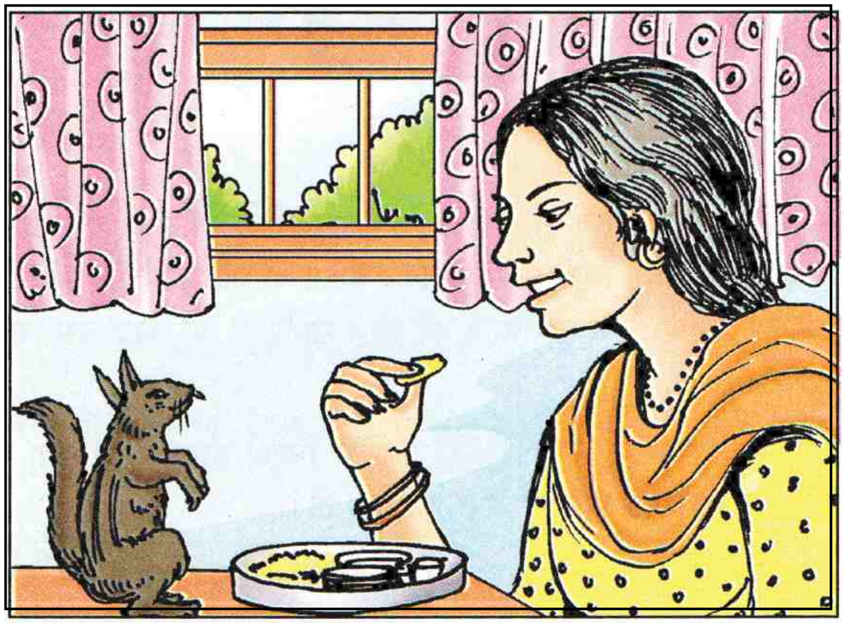

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की के बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था। परन्तु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे तीव्र इच्छा होती थी, जिसका उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला।

वह मेरे पैर तक आकर सर से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेज़ी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती।

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लम्बे लिफ़ाफ़े में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघु गात लिफ़ाफ़े के भीतर बंद रहता। इस अद्‌भुत स्थिति में कभी-कभी घंटों मेज़ पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता।

भूख लगने पर चिक-चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफ़ाफ़े से बाहर वाले पंजों से पकड़ कर उसे कुतरता रहता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया। नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या कहने लगीं।

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते-बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक कागज़-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर वह भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन-भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गयी थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है परन्तु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज़ पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीज़ें या तो लेना बन्द कर देता था या झूले से नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर-दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर तेज़ी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि उन दिनों वह अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हे-नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था।

वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठण्डक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नही होती। अत: गिल्लू की जीवन–यात्रा का अंत आ ही गया। दिनभर उसने न कुछ खाया, न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला उतारकर रख दिया गया और खिड़की की जाली बंद कर दी गयी है, परन्तु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक–चिक करती ही रहती हैं और सोनजुही पर बसंत आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी है–इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी– इसलिए भी कि उस लघु गात का, किसी बासन्ती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे संतोष देता है।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਉਂਗਲੀ	=	उँगली	ਥਾਲੀ	=	थाली
ਪੰਜਾ	=	पंजा	ਹਸਪਤਾਲ	=	अस्पताल
ਜਾਲੀ	=	जाली	ਝੂਲਾ	=	झूला

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-**

ਲੁਕਣ-ਮੀਟੀ	=	छुआ–छुऔवल	ਛੋਟੀ ਟੋਕਰੀ	=	डलिया
ਕਾਂਵਾਂ ਦਾ ਜੋੜਾ	=	काक–द्वय	ਬਿਮਾਰੀ	=	अस्वस्थता
ਚੁੰਝ	=	चोंच	ਸਿਰਹਾਣਾ	=	तकिया
ਕੋਮਲ	=	स्निग्ध	ਸੇਵਾਦਾਰਨੀ	=	परिचारिका
ਗੁੱਛੇਦਾਰ	=	झब्बेदार	ਝੱਜਰ	=	सुराही

3. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) गिल्लू कौन था?

(ख) लेखिका ने उसे स्वस्थ करने के लिए क्या उपचार किया?

(ग) गिल्लू का घर कैसा था ?

(घ) लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था ?

(ङ) लेखिका ने गिल्लू को बाहर झाँकते देखकर क्या किया ?

(च) गिल्लू लेखिका को चौंकाने के लिए क्या करता था ?

(छ) लेखिका के अस्वस्थ होने पर गिल्लू ने क्या-क्या किया ?

(ज) गिल्लू के जीवन का अंत किस प्रकार हुआ ?

4. इन वाक्यों के भाव स्पष्ट करें :-

(क) 'जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया।'

(ख) 'उसका हटना परिचारिका के हटने के समान लगता।'

(ग) 'किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।'

5. इन शब्दों के अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

निश्चेष्ट ________ ______________________________

कार्यकलाप ________ ______________________________

विस्मित ________ ______________________________

आश्वस्त ________ ______________________________

स्निग्ध ________ ______________________________

मरणासन्न ________ ______________________________

6. विपरीत शब्द लिखें :-

लघु = ________

चंचल = ________

सुलभ = ________

मुक्ति = ________

उष्णता = ________

तीव्र = ________

7. विशेषण बनायें :-

चमक = ________

कठिनाई = ________

स्वर्ण = ________

ठंडक = ________

चंचलता = ________

उष्णता = ________

बसंत = ________

विश्वास = ________

8. **'इत' शब्दाँश लगाकर नये शब्द बनायें :-**

विस्मय + इत = **विस्मित**

सम्मान + इत = ________

आकर्षण + इत = ________

परिचय + इत = ________

प्रकाश + इत = ________

फल + इत = ________

9. **निम्नलिखित मुहावरों को इस तरह वाक्य में प्रयोग करें ताकि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाये।**

सिर से पैर तक दौड़ लगाना ____

जीवन यात्रा का अंत होना ____

10. यदि आपको कुत्ते का पिल्ला या बिल्ली का बच्चा मिल जाये तो आप उसकी देखभाल कैसे करेंगे?

प्रयोगात्मक व्याकरण

(i) गिल्लू परदे पर चढ़ा **और** नीचे उतर गया।

(ii) गिल्लू अन्य खाने की चीज़ें लेना बन्द कर देता था **या** झूले से नीचे फेंक देता था।

(iii) उनका मुझसे लगाव कम नहीं है **परन्तु** उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत नहीं हुई।

(iv) भूख लगने पर गिल्लू का चिक-चिक करना ऐसा लगा **मानो** मुझे अपने भूखे होने की सूचना देता हो।

(v) सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी, **क्योंकि** उसे वह लता सबसे प्रिय थी।

(vi) गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, **अत:** गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया।

(vii) गिल्लू को कौवे की चोंच से घाव हो गया था, **इसलिए** वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका पड़ा था।

उपर्युक्त वाक्यों में **'और', 'या', 'परन्तु', 'मानो', 'क्योंकि', 'अतः', तथा 'इसलिए'** शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ रहे हैं। इन शब्दों को योजक या समुच्चयबोधक शब्द कहते हैं।

अतएव दो शब्दों, वाक्य के अंशों और वाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को योजक या समुच्चयबोधक कहते हैं।

अन्य योजक शब्द :- एवं, तथा, किंतु, चाहे, पर, इस कारण, यानि, कि यद्यपि----तथापि, चाहे---- फिर भी आदि।

महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'मेरा परिवार' से उनके पालतू पशु-पक्षी के शब्द चित्रों की जानकारी प्राप्त करें।

प्रस्तुत पाठ एक संस्मरण है। कविता, कहानी, लेख की भाँति यह भी साहित्य की एक विधा है। इसका अर्थ है-स्मृति के आधार पर किसी व्यक्ति विषय या पशु-पक्षी के संबंध में लिखित लेख।

यह पाठ श्रीमती महादेवी वर्मा द्वारा लिखित है। इनकी कुछ रचनाएँ अपने पुस्तकालय से लेकर पढ़ें। इनके द्वारा लिखित अन्य संस्मरण हैं: घीसा, गौरा, नीलकंठ मोर, सोनाहिरणी, नीलू आदि। इन्हें पढ़ें और लेखिका के पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम तथा संवेदनशीलता को अनुभव करें।

पाठ 15

धर्मशाला

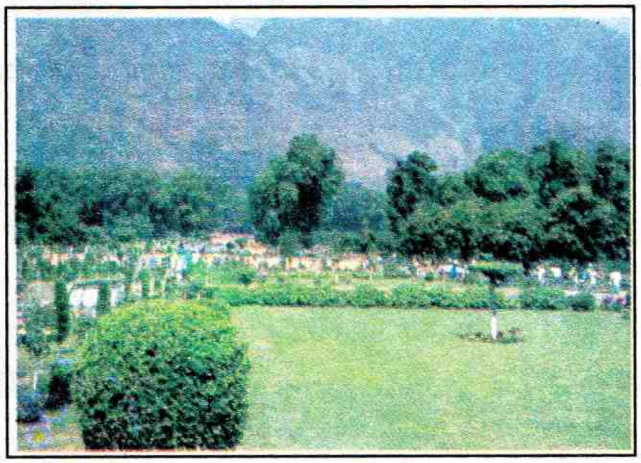

सदैव बर्फ से ढकी रहने वाली धौलाधार पर्वतमाला की गोद में बसी है–काँगड़ा की मनोरम, हरी–भरी घाटी। इसी घाटी का सबसे सुंदर पर्वतीय स्थल है- धर्मशाला। देवभूमि हिमाचल प्रदेश के इसी पर्वतीय स्थान धर्मशाला में सामिषा अपने माता–पिता व भाई साराँश के साथ घूमने के लिए आई हुई है। यहाँ वे हिमाचल पर्यटन के होटल 'धौलाधार' में ठहरे हुए हैं। सामिषा को डायरी लिखने का शौक है। वह यहाँ प्रतिदिन जहाँ–जहाँ भी यात्रा करती है, उसके बारे में रात्रि में सोने से पूर्व अपनी डायरी में लिख देती है।

27 दिसम्बर, 2011

आज सूर्योदय होते ही हम लोग तैयार होकर, अपनी कार में बैठ–धर्मशाला घूमने निकल पड़े। धर्मशाला समुद्र–तल से 4500 फुट की ऊँचाई पर और धौलाधार पर्वत–श्रेणी की तलहटी में बसा खूबसूरत शहर है। यह लोअर धर्मशाला तथा अपर धर्मशाला–दो हिस्सों में बंटा हुआ है। लोअर धर्मशाला में सभी प्रशासनिक इकाइयाँ हैं, तो अपर धर्मशाला में सैनिक छावनी, सेंटजोन की चर्च और मक्लोड़गंज में तिब्बती कालोनी है। हम सबसे पहले यहाँ से 10 कि.मी. दूर मक्लोड़गंज भ्रमण के लिए चल पड़े। मेरे सामने प्रकृति के अद्‌भुत दृश्य थे। मार्ग में हम पहाड़ों का अद्‌भुत सौन्दर्य, गुनगुनाती छोटी–छोटी जलधाराएँ, चीड़ के पेड़ों के झुरमुट, देवदारों के झुंड, सीढ़ीनुमा खेत, वेग से बहती नदी, नदी में विशाल आकर्षक पत्थर और हरी–भरी घाटियाँ–अपलक निहारते जा रहे थे तथा प्रकृति की अद्‌भुत छटा का आनन्द लेते आगे बढ़ रहे थे।

हम 10 बजे मक्लोड़गंज पहुँच गए। सामने हिमाच्छादित पर्वतों को देखकर हमारे मन में उमंगें करवटें लेने लगीं। हमने यहाँ के बाज़ार में घूमते हुए देखा कि यहाँ सभी दुकानें तिब्बतियों की हैं। अधिकतर दुकानें ऊनी वस्त्रों, स्वैटरों, सजावटी वस्तुओं तथा हस्तकला की हैं तो कुछ तिब्बती रेस्तराँ हैं। यहाँ हमें ऐसे प्रतीत हो रहा था मानो हम ल्हासा (तिब्बत की राजधानी) में भ्रमण

कर रहे हों। हमने यहाँ तिब्बतियों द्वारा स्थापित बौद्ध मंदिर के भी दर्शन किए। मन्दिर में महात्मा बुद्ध की विशाल प्रतिमा तथा बुद्ध पोथियाँ संग्रहित हैं।

वास्तव में मक्लोड़गंज तिब्बती शासक दलाई लामा का अस्थाई मुख्यालय है। सन् 1959 ई. में जब चीन ने तिब्बत देश पर आक्रमण द्वारा कब्जा कर लिया था तब दलाईलामा सहित 85,000 निर्वासित बौद्ध तिब्बतियों को भारत ने धर्मशाला में मक्लोड़गंज में शरण दी थी।

इसके बाद हम लोग यहाँ से 1.5 कि.मी. की दूरी पर भागसू नाग का प्राचीन शिव मंदिर, जलाशय व जल प्रपात देखने गए जोकि ऊँचे-ऊँचे देवदार और पलाश के वृक्षों के मध्य स्थित है। कहते हैं प्राचीन काल में छोटी-सी झील का स्वामी नाग था। जिसके नाम पर इस स्थान का नाम भागसू नाग पड़ा। भागसू का अर्थ जल से ही है। शिव मन्दिर यानि भागसू नाग के प्रांगण में पाषाण प्रतिमाएँ पड़ी हैं, जिनमें नागों की मूर्तियाँ उकेरी गई हैं।

यहाँ से हम सीधा पवित्र डल झील गए, जो चारों ओर देवदार के पेड़ों से घिरा पिकनिक स्थल भी है। सूर्यास्त के समय धौलाधार की चोटियाँ सुनहरी रंग में रंगी हुई ऐसे लग रही थीं, मानो पिघले सोने से लिप्त हों। साँझ हो गई थी, हम अपने विश्राम स्थल लौट आए।

28 दिसम्बर, 2011

आज सुबह हम लोग तैयार होकर वार मैमोरियल (युद्ध स्मारक) देखने चल पड़े। इसका निर्माण उन वीर सैनिकों की याद में किया गया है, जिन्होंने 1947-1948, 1962, 1965, 1971 के युद्धों में देश की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। काले संगमरमर की तीन पट्टिकाओं पर शहीद हुए सैनिकों के नाम अंकित हैं। यह स्मारक कर्त्तव्य-पथ पर अपने जीवन का बलिदान करने वाले जवानों को नमन करता है तथा आने वाली पीढ़ी को भी बताता है कि ये वे नाम हैं जिन्हें भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है, कभी भुलाया नहीं जा सकता।

इसके पश्चात् हम कोतवाली बाज़ार में चील गाड़ी की ओर जाते हुए कुछ दूरी पर चट्टान से बना मंदिर देखने गए जो स्थानीय देवी को समर्पित है और जिसे कुणाल पत्थरी कहते हैं।

यहाँ से हमने लगभग 10 कि.मी.दूर चिन्मय तपोवन की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में भेड़-बकरियों के रेवड़ मनभावन लग रहे थे। दोपहर के समय बादलों ने पहाड़ों को अपने आँचल में समेट लिया। धूप और बादलों की आँख मिचौली का अवलोकन करते हुए हम चिन्मय तपोवन पहुँच गए जो 'गीता' के महान् व्याख्याता चिन्मयानन्द द्वारा स्थापित किया गया है। यहाँ हनुमान जी की नौ मीटर ऊँची मूर्ति है, साथ में राम मंदिर, स्कूल है। सूरज डूब चुका था, पहाड़ अंधकार में छिप गए थे। हम भी होटल में आ गए।

29 दिसम्बर, 2011

आज हम लोगों ने पौ फटते ही धर्मशाला से 17 कि.मी दूर प्रसिद्ध पिकनिक व ट्रैकिंग स्थल त्रिपुंड जाने का निर्णय किया, किन्तु वहाँ अधिक बर्फबारी और रास्ता खराब होने के कारण हम वहाँ न जाकर पालमपुर घूमने चल पड़े। पालमपुर धर्मशाला से 38 कि.मी. की दूरी पर स्थित काँगड़ा की मुख्य घाटी है। यह शान्ति और सुंदरता की अनूठी तस्वीर है। यह चीड़ के हरे जंगलों,

देवदार की पंक्तियों, सदाबहार चाय के बाग़ानों, स्वास्थ्यप्रद जलवायु तथा कृषि विश्वविद्यालय के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ घरों के सामने बाँस के वृक्षों के अनगिनत झुरमुट दिखाई देते हैं। हम चाय के बागानों, मकानों और बंगलों के बीच से गुजरती सड़क से न्यूगल कैफेटेरिया पहुँचे। यहाँ से सम्पूर्ण धौलाधार पर्वत की झाँकी दिखाई देती है और साथ ही धौलाधार के कदमों में-पालम की घाटी किसी सुन्दरी की तरह प्रतीत होती है। यहाँ कैफेटेरिया के पीछे न्यूगल नामक बहुत गहरी खड्ड है, जिसमें पहाड़ से टूटकर गिरी बड़ी-बड़ी चट्टानों के टुकड़े हैं। खड्ड में साफ-सुथरा पानी बहता है, जो धौलाधार की बर्फ से पिघलकर आता है।

इसके उपरान्त हम पालमपुर से 13 कि.मी दूर अंदरेटा गाँव की ओर रवाना हुए। अंदरेटा कई एकान्तप्रिय कलाकारों का निवास स्थान रहा है, जिनमें चित्रकार सोभा सिंह तथा नाटककार नोरा रिचर्डस का नाम प्रमुख है। हमने पंजाब के श्रेष्ठ चित्रकार सोभासिंह की कलाकृतियों का संग्रहालय देखा। सोभा सिंह का श्री गुरुनानक का चित्र हर सिक्ख परिवार में तथा सोहनी महीवाल का प्रसिद्ध चित्र उत्तरी भारत के हर कला प्रेमी के पास है। सोभा सिंह द्वारा निर्मित सुंदरियों के चित्र, भारतीय चित्रकला में विशेष महत्व रखते हैं।

पालमपुर का नाम केवल कला प्रेमियों से ही नहीं जुड़ा बल्कि देश के वीर सैनिकों से भी जुड़ा है। कारगिल युद्ध के दौरान जिन जवानों की शहादत से विजय प्राप्त हुई उनमें कैप्टन विक्रम बतरा, मेजर सुधीर वालिया तथा कैप्टन सौरभ कालिया का संबंध पालमपुर से ही है। इनमें कैप्टन विक्रम बतरा को बहादुरी के लिए सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार परमवीर चक्र तथा मेजर सुधीर वालिया को अशोक चक्र से सम्मानित किया गया है।

यहाँ से हम बैजनाथ आ गए और वहाँ प्राचीन शिव मंदिर के दर्शन किए। इस तरह प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हुए हम घर वापिस आ गए।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਬਰਫ਼	=	बर्फ	ਝੀਲ	=	झील
ਘਾਟੀ	=	घाटी	ਸੰਗਮਰਮਰ	=	संगमरमर
ਧਰਮਸ਼ਾਲਾ	=	धर्मशाला	ਪਹਾੜ	=	पहाड़
ਪੋਥੀਆਂ	=	पोथियाँ	ਖੱਡ	=	खड्ड

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਪਹਾੜੀ ਥਾਂ	=	पर्वतीय स्थल	ਹਨੇਰਾ	=	अन्धकार
ਸੈਰ-ਸਪਾਟਾ	=	पर्यटन	ਬਰਫ਼ ਦਾ ਡਿਗਣਾ	=	बर्फबारी
ਸੈਰ	=	भ्रमण	ਸਿਹਤਮੰਦ	=	स्वास्थ्य प्रद
ਮੂਰਤੀ	=	प्रतिमा	ਬਗੀਚੇ	=	बाग़ान
ਹਮਲਾ	=	आक्रमण	ਸ਼ਹੀਦੀ	=	शहादत

3. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) धर्मशाला किस पर्वतमाला की गोद में बसा है ?

(ख) समुद्रतल से धर्मशाला की ऊँचाई कितनी है ?

(ग) मक्लोड़गंज में घूमते हुए लेखिका को ल्हासा की याद क्यों आ गयी ?

(घ) मक्लोड़गंज की मुख्य विशेषता क्या है ?

(ङ) भागसू नाग क्यों प्रसिद्ध है ?

(च) वार मैमोरियल का भारतीय इतिहास में क्या महत्त्व है ?

(छ) चिन्मय तपोवन क्यों प्रसिद्ध है ?

(ज) अंदरेटा में लेखिका को किन कलाकारों के चित्रों ने आकर्षित किया ?

(झ) पालमपुर के किन-किन वीर सैनिकों ने कारगिल युद्ध के दौरान अपनी शहादत दी ?

4. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) मक्लोड़गंज का ऐतिहासिक महत्त्व क्या है ?

(ख) पर्वतीय स्थल हमें क्यों आकर्षित करते हैं ?

5. **इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करें :-**

पर्वतीय ____

हस्तकला ____

अनगिनत ____

निर्वासित ____

शहादत ____

6. **इन शब्दों को जोड़कर नया शब्द लिखें :-**

सूर्य + उदय = ________

सूर्य + अस्त = ________

मुख्य + आलय = ________

स्वर्ण + अक्षर = ________

हिम + आच्छादित = ________

7. **इन शब्दों और शब्दाँशों को मिलाकर नया शब्द लिखें :-**

पर्वत + ईय = ________

निर् + वास + इत = ________

प्र + शासन + इक = ________

प्रकृति + इक = ________

भारत + ईय = ________

अंक + इत = ________

1. सामिषा अपने माता–पिता **के साथ** धर्मशाला गयी।
2. डल झील के **चारों ओर** देखो देवदार के पेड़ हैं।
3. घरों **के सामने** बाँस के अनगिनत वृक्ष हैं।
4. हम बाग़ानों, मकानों और बंगलों **के बीच** से गुजरती सड़क से न्यूगल कैफेटेरिया पहुँचे।
5. कैफेटेरिया **के पीछे** न्यूगल खड्ड है।
6. हम खराब सड़क **के कारण** ट्रैकिंग स्थल त्रिपुंड नहीं जा सके।
7. मेरे **सामने** प्रकृति के अद्भुत दृश्य थे।

उपर्युक्त वाक्यों में **के साथ, के चारों ओर, के सामने, के बीच, के पीछे, के कारण** तथा **सामने** शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ बता रहे हैं। अत: ये संबंध बोधक हैं।

अतएव जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, उन्हें संबंध बोधक कहते हैं।

यदि इन संबंध बोधक अविकारी शब्दों को वाक्य में से निकाल दिया जाये तो वाक्य का अर्थ ही नहीं रहता।

अन्य संबंध बोधक शब्द :- पहले, बाद, आगे, पीछे, बाहर, भीतर, ऊपर, नीचे, पास, अनुसार, तरह, समान, बिना, कारण, तक, भर, संग, साथ, के मारे, बगैर, रहित, सिवाय आदि।

संबंध बोधक का प्रयोग दो प्रकार से होता है :-

1. विभक्तियों के साथ

2. विभक्तियों के बिना

1. विभक्तियों के साथ संबंध बोधक शब्द प्रमुख रूप से निम्नलिखित तरह से प्रयुक्त होते हैं:-

(i) हमने चिन्मय तपोवन **की ओर** प्रस्थान किया।

(ii) वीर सैनिकों ने देश की रक्षा **के लिए** प्राण न्योछावर कर दिये।

(iii) पालम की घाटी सुन्दरी **की तरह** प्रतीत होती है।

2. विभक्तियों के बिना संबंध बोधक शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं:-

(i) मैं जीवन **भर** इस यात्रा को याद रखूँगी

(ii) ज्ञान **बिना** जीवन बेकार है।

(iii) मुझे कई दिनों **तक** घर की याद नहीं आयी।

(iv) सड़क **पर** काली सफेद लकीर लगायी गयी है।

पाठ 16

कोई नहीं बेगाना

आनन्दपुर साहब के बाहर
जब हुआ युद्ध घमसान,
दशमेश गुरु का हर सिख
लड़ा हथेली पर रख जान।

तोपों की गर्जना भयंकर
'सत श्री अकाल' का गान,
अल्ला हू अकबर के नारे
बहरे कर देते थे कान।

वीर बाँकुरे डटकर लड़ते
धरती पर बिछ-बिछ जाते,
गिरते-गिरते फिर उठते
पानी-पानी चिल्लाते।

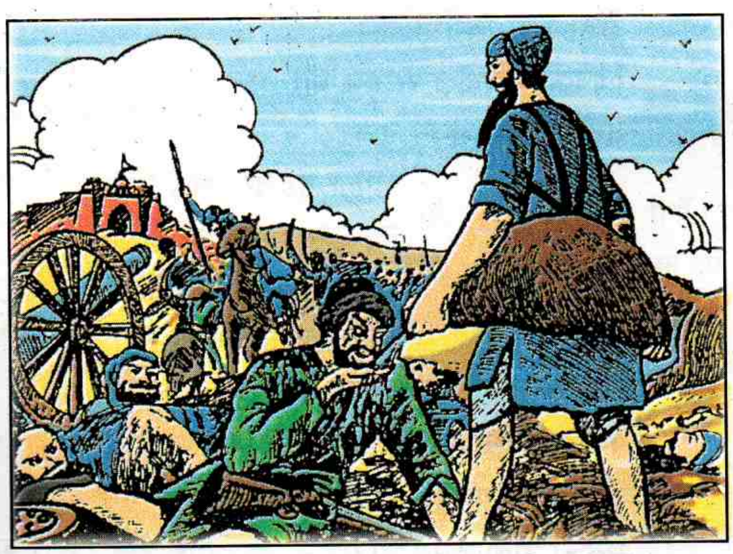

गर्मी का यह कठिन महीना
उन वीरों पर भारी था,
जलते तपते मैदानों में
युद्ध अभी तक जारी था।

जलती-तपती दोपहरी में
गुरु घर का इक सेवादार,
कन्धे पर इक मश्क उठाए
देता पानी का उपहार।

संगत की सेवा करता
भाई कन्हैया उसका नाम,
गुरुवाणी का भक्त अनोखा
करता जनसेवा का काम।

सबमें गुरु का रूप देखता
सबकी सेवा करता था,
हर प्यासे की प्यास बुझाता
दु:ख सभी के हरता था।

समदृष्टि थी शत्रु-मित्र में
दोनों उसको एक समान,
हर घायल को पानी देना
होता उसका पहला काम।

हुई साँझ तो सिख वीरों ने
छेड़ी एक विरोधी तान,
जिनको मुश्किल से हम मारें
उनको देता जीवन दान।

लगता गुरु वर! भाई कन्हैया
का दुश्मन से नाता है,
घायल शत्रु को जल देता,
उसकी जान बचाता है।

हँस कर बोले दशम पिता फिर
क्यों भाई क्या कहते हो,
ठीक शिकायत क्या सिखों की
सबकी सेवा करते हो?

हाथ जोड़ कर चरण छुए
नतमस्तक हो वचन कहे,
गुरु वर! सबको जल देता हूँ
मानो सबमें आप रहे।

गुरुवाणी का मतलब मैंने
केवल बस इतना जाना,
देखूँ हर प्राणी में प्रभुवर
कोई नहीं है बेगाना।

अव्वल अल्ला नूर वही है
कुदरत के सब बन्दे,
सब जग फैला नूर उसी का
कौन भला कौन मन्दे।

दशम पिता गद्‌गद् हो बोले,
सच्चे सिख ! गुरु मेहर करे,
भेदभाव बिन सेवारत जो
उसके सिर प्रभु हाथ धरे।

यह मरहम भी ले लो मुझ से
तुम सबका उपकार करो,
हर घायल में प्रभु को देखो
घावों का उपचार करो।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਘਮਸਾਣ	=	घमासान	ਤੋਪਾਂ	=	तोपों
ਗੁਰੂ	=	गुरु	ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ	=	सत श्री अकाल
ਪਾਣੀ	=	पानी	ਸੇਵਾਦਾਰ	=	सेवादार
ਮਸ਼ਕ	=	मश्क	ਗੁਰੂਬਾਣੀ	=	गुरुवाणी

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-**

ਬਹਾਦਰ ਜਵਾਨ	=	वीर-बाँकुरे	ਰਿਸ਼ਤਾ	=	नाता
ਸਭ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰ ਸਮਝਣ ਵਾਲਾ	=	समदृष्टि	ਸੇਵਾ ਵਿੱਚ ਲੱਗਿਆ ਹੋਇਆ	=	सेवारत

3. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) भाई कन्हैया कौन था ?

(ख) वह घायलों की सेवा किस प्रकार करता था ?

(ग) वह अपने और बेगाने का भेदभाव क्यों नहीं करता था ?

(घ) विरोधियों ने दशमेश पिता से उसकी क्या शिकायत की ?

(ङ) भाई कन्हैया ने गुरु जी को शिकायत का क्या उत्तर दिया ?

(च) गुरु जी ने भाई कन्हैया को मरहम क्यों दी ?

4. इन काव्य-पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें :-

''अव्वल अल्ला नूर वही है
कुदरत के सब बन्दे,
सब जग फैला नूर उसी का
कौन भले कौन मन्दे।''

5. अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

घमसान ______________________________

उपहार ______________________________

समदृष्टि ______________________________

उपकार ______________________________

उपचार ______________________________

दु:ख हरना ______________________________

जीवनदान देना ______________________________

जान बचाना ______________________________

6. 'उप' और 'बे' शब्दाँश लगाकर नये शब्द बनायें :-

उप + हार	=	उपहार	बे + रहम	=	________
उप + वास	=	________	बे + कायदा	=	________
उप + नयन	=	________	बे + कसूर	=	________
उप + हास	=	________	बे + मेल	=	________
उप + कार	=	________	बे + रोक	=	________
उप + चार	=	________	बे + मिसाल	=	________

7. 'गुरु' लगाकर नये शब्द बनायें जैसे-गुरुवाणी ,__________,__________,__________

8. इन शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-

शुत्र = ________,________

युद्ध = ________,________

धरती = ________,________

पानी = ________,________

गर्मी = ________,________

उपहार = ________,________

गुरु = ________, ________

दु:ख = ________, ________

बेगाना = ________, ________

कृपा = ________, ________

हाथ = ________, ________

9. **विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें :-**

शिकायत = ________

धरती = ________

दु:ख = ________

शत्रु = ________

गुरु = ________

प्यास = ________

मुश्किल = ________

10. **इस कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है ? लिखें।**

11. **भाई कन्हैया की जीवनी पढ़ें। वे निःस्वार्थ सेवा की प्रतिमूर्ति थे। ऐसे अन्य महान व्यक्तियों के नाम पता करें, जिन्होंने निःस्वार्थ सेवा को अपनाकर अपने जीवन को सार्थक किया।**

12. **समाज सेविका मदर टेरेसा के बारे में पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़ें।**

पाठ 17

अन्याय के विरोध में

कुछ दिन पहले की बात है। मैंने अपने बच्चों की गवर्नेस जूलिया को अपने पढ़ने के कमरे में बुलाया और कहा, ''बैठो जूलिया। मैं तुम्हारी तनख्वाह का हिसाब करना चाहता हूँ। मेरे ख्याल से तुम्हें पैसों की ज़रूरत होगी और जितना मैं तुम्हें अब तक जान सका हूँ, मुझे लगता है, तुम अपने आप कभी अपने पैसे नहीं माँगोगी। इसलिए मैं खुद ही तुम्हें पैसे देना चाहता हूँ। हाँ, तो तुम्हारी तनख्वाह तीस रूबल महीना तय हुई थी न?''

''जी नहीं, चालीस रूबल,'' जूलिया ने दबे स्वर में कहा।

''नहीं भाई, तीस। मैंने डायरी में नोट कर रखा है। मैं बच्चों की गवर्नेस को हमेशा तीस रूबल महीना ही देता आया हूँ। अच्छा......तो तुम्हें हमारे यहाँ काम करते हुए दो महीने हुए हैं......''

''जी नहीं, दो महीने पाँच दिन।''

''क्या कह रही हो! ठीक दो महीने हुए हैं। भाई, मैंने डायरी में सब नोट कर रखा है। तो दो महीने के बनते हैं साठ रूबल। लेकिन साठ रूबल तभी बनेंगे, जब महीने में एक भी नागा न हुआ हो। तुमने इतवार की छुट्टी मनाई है। उस दिन तुमने काम नहीं किया। कोल्या को सिर्फ़ घुमाने भर तो ले गई हो। इसके अलावा तुमने तीन छुट्टियाँ और ली हैं.....''

जूलिया का चेहरा पीला पड़ गया। वह बार-बार अपनी ड्रेस की सिकुड़नें दूर करने लगी। बोली एक शब्द नहीं।

''हाँ, तो नौ इतवार और तीन छुट्टियाँ......यानी बारह दिन काम नहीं हुआ। मतलब यह कि तुम्हारे बारह रूबल कट गए। उधर कोल्या चार दिन बीमार रहा और तुमने सिर्फ़ वान्या को ही पढ़ाया। पिछले हफ़्ते शायद तीन दिन हमारे दाँतों में दर्द रहा था और मेरी बीवी ने तुम्हें दोपहर के बाद छुट्टी दे दी थी। तो बारह और सात हुए उन्नीस नागे। हाँ, तो भाई घटाओ साठ में से उन्नीस।.....कितने बचे?......इकतालीस।......इकतालीस रूबल। ठीक है न?''

जूलिया की आँखों में आँसू छलक आए। उसने धीरे-से खाँसा। उसके बाद उसने अपनी नाक साफ़ की। बोली एक शब्द भी नहीं।

''हाँ, याद आया,'' मैंने डायरी देखते हुए कहा, ''पहली जनवरी को तुमने चाय की प्लेट और प्याली तोड़ी थी। प्याली बहुत कीमती थी। मगर मेरे भाग्य में तो हमेशा नुकसान उठाना ही बदा है। चलो, मैं उसके दो रूबल ही काटूँगा। अब देखो, उस दिन तुमने ध्यान नहीं रखा और तुम्हारी नज़र बचाकर कोल्या पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ खरोंच लगकर उसकी जैकेट फट गई। दस रूबल उसके कट गए। इसी तरह तुम्हारी लापरवाही के कारण नौकरानी ने वान्या के नए जूते चुरा लिए......अब देखो भाई, तुम्हारा काम बच्चों की देखभाल है। तुम्हें इसी के पैसे मिलते हैं। तुम

अपने काम में ढील दोगी, तो पैसे कटेंगे या नहीं? मैं ठीक कह रहा हूँ न?.....तो जूतों के लिए पाँच रूबल और कट गए।.....और हाँ, दस जनवरी को मैंने तुम्हें दस रूबल दिए थे....."

"जी नहीं, आपने मुझे कुछ नहीं......." जूलिया ने दबी जबान से कहना चाहा।

"अरे! मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ? मैं डायरी में हर चीज़ नोट कर लेता हूँ। तुम्हें यकीन न हो तो दिखाऊँ, डायरी?"

"जी नहीं। आप कह रहे हैं, तो आपने दिए ही होंगे।"

"दिए होंगे नहीं, दिए हैं," मैंने कठोर स्वर में कहा, "तो ठीक है, घटाओ सत्ताईस इकतालीस में से...बचे चौदह.....क्यों हिसाब ठीक है न?"

उसकी आँखें आँसुओं से भर उठीं। उसके तमाम शरीर पर पसीना छलछला आया। काँपती आवाज़ में वह बोली, "मुझे अभी तक एक ही बार कुछ पैसे मिले थे-- और वे भी आपकी पत्नी ने दिए थे। सिर्फ़ तीन रूबल। ज़्यादा नहीं।"

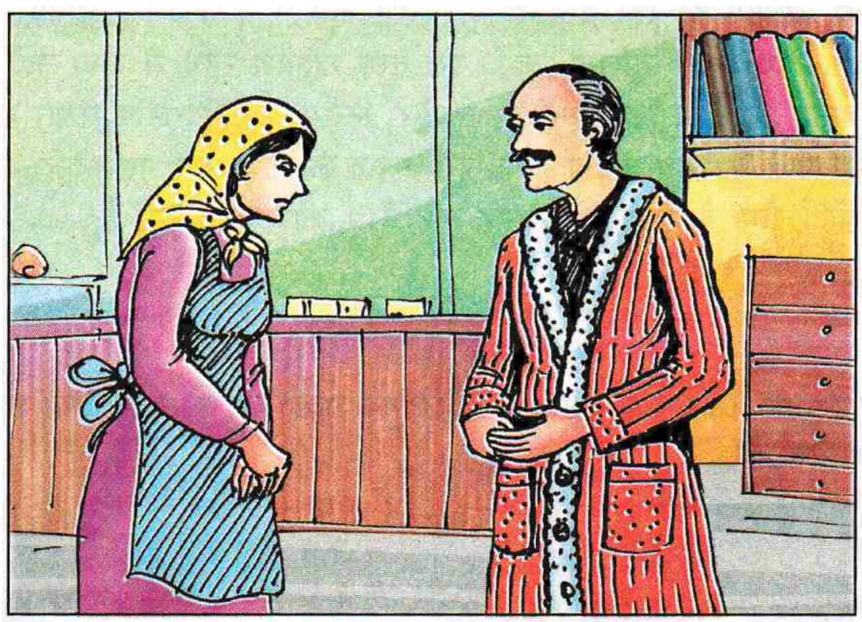

"अच्छा!" मैंने स्वर में आश्चर्य भरकर कहा, "और इतनी बड़ी बात तुम्हारी मालकिन ने मुझे बताई तक नहीं। देखो, हो जाता न अनर्थ! खैर, मैं इसे भी डायरी में नोट कर लेता हूँ। हाँ, तो चौदह में से तीन और घटा दो। बचते हैं ग्यारह रूबल। तो लो भाई, ये रही तुम्हारी तनख्वाह.....ये ग्यारह रूबल। देख लो, ठीक है न?"

उसने काँपते हाथों से ग्यारह रूबल लिए और अपनी जेब टटोलकर किसी तरह उन्हें उसमें ठूँस लिए और धीमे विनीत स्वर में बोली, "जी, धन्यवाद।"

मैं गुस्से से उबलने लगा। कमरे में चक्कर लगाते हुए मैंने क्रुद्ध स्वर में कहा, "धन्यवाद किस बात का?"

"आपने मुझे पैसे दिए---इसके लिए धन्यवाद!"

अब मुझसे नहीं रहा गया। मैंने ऊँचे स्वर में, लगभग चिल्लाते हुए कहा, ''तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो, जबकि तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैंने तुम्हें ठग लिया है। तुम्हें धोखा दिया है। तुम्हारे पैसे हड़प लिए हैं----इसके बावजूद तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो!''

''जी हाँ! इससे पहले मैंने जहाँ-जहाँ काम किया, उन लोगों ने तो मुझे एक पैसा तक नहीं दिया। आप कुछ तो दे रहे हैं।'' उसने मेरे क्रोध पर ठंडे पानी का छींटा-सा मारते हुए कहा।

''उन लोगों ने तुम्हें एक पैसा भी नहीं दिया! जूलिया, मुझे यह बात सुनकर तनिक भी अचरज नहीं हो रहा है,'' मैंने कहा, फिर स्वर धीमा करके मैं बोला, ''जूलिया, मुझे इस बात के लिए माफ़ कर देना कि मैंने तुम्हारे साथ एक छोटा-सा क्रूर मज़ाक किया। पर मैं तुम्हें सबक सिखाना चाहता था। देखो जूलिया, मैं तुम्हारा एक पैसा भी नहीं मारूँगा। देखो, यह तुम्हारे अस्सी रूबल रखे हैं। मैं अभी इन्हें तुम्हें दूँगा। लेकिन उससे पहले मैं तुमसे कुछ पूछना चाहूँगा। जूलिया, क्या ज़रूरी है कि इन्सान भला कहलाए जाने के लिए इतना दब्बू, भीरु और बोदा बन जाए कि उसके साथ जो अन्याय हो रहा है, उसका विरोध तक न करे? बस, खामोश रहे और सारी ज्यादतियाँ सहता जाए? नहीं जूलिया, नहीं। इस तरह खामोश रहने से काम नहीं चलेगा। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए तुम्हें इस कठोर, निर्मम और हृदयहीन संसार से लड़ना होगा। अपने दाँतों और पंजों के साथ लड़ना होगा-पूरी ताकत के साथ। मत भूलो जूलिया कि इस संसार में दब्बू और बोदे लोगों के लिए कोई जगह नहीं है.....कोई जगह नहीं है.......''

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਰੂਬਲ	=	रूबल	ਧੋਖਾ	=	धोखा
ਡਾਇਰੀ	=	डायरी	ਅੱਸੀ	=	अस्सी
ਇਕਤਾਲੀ	=	इकतालीस	ਇਨਸਾਨ	=	इंसान
ਸੱਤਾਈ	=	सत्ताईस	ਬੋਦਾ	=	बोदा

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-**

ਵੱਟ	=	सिकुड़न	ਕੰਬਦੀ	=	काँपती
ਭਾਗ/ਕਿਸਮਤ	=	भाग्य	ਹੰਝੂ	=	आँसू
ਝਰੀਟ	=	खरोंच	ਐਤਵਾਰ	=	रविवार

3. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) जूलिया कौन थी? लेखक ने उसे अपने कमरे में क्यों बुलाया?

(ख) लेखक ने जूलिया को किस काम के लिए रखा था?

(ग) जूलिया को लेखक ने कितने रूबल दिये ?

(घ) तनख्वाह प्राप्त करने पर जूलिया ने लेखक का धन्यवाद क्यों किया ?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) लेखक जूलिया को क्या सबक सिखाना चाहता था ?

(ख) जूलिया द्वारा 'धन्यवाद' कहे जाने पर लेखक गुस्से से क्यों उबल पड़ा ?

(ग) इस कहानी के द्वारा लेखक ने क्या संदेश दिया है ?

5. इन मुहावरों के अर्थ दे दिये हैं। अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

चेहरा पीला पड़ना = मायूस हो जाना = ______________________________

आँसू छलक आना = रोने को होना = ______________________________

गुस्से से उबलना = बहुत अधिक क्रोध आना = ______________________________

क्रोध पर ठंडे पानी के छींटे मारना = क्रोध को शाँत करना = ____________________

दाँतों और पंजों के साथ लड़ना = पूरी ताकत और साधनों के साथ लड़ना = ____________

6. विपरीत शब्द लिखें :-

नुकसान	= ________	अन्याय	= ________
झूठ	= ________	भीरु	= ________
विरोध	= ________	बीमार	= ________

7. समानार्थक शब्द लिखें :-

तनख्वाह	= ________	छुट्टी	= ________
इतवार	= ________	हफ्ता	= ________
अचरज	= ________	नुकसान	= ________
मालकिन	= ________	माफ़	= ________

8. 'अन्याय को चुपचाप सहना भी गलत है।' लेखक के इस विचार से क्या आप सहमत हैं ? समाज में रहते हुए यदि आपके साथ किसी भी क्षेत्र में अन्याय हो रहा हो तो आप उसे स्वीकार कर लेंगे या विरोध करेंगे ? अपने विचार लिखें।

प्रयोगात्मक व्याकरण

अरे! मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ?

शाबाश! मुझे आपसे यही आशा थी।

ना-ना! मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा।

आह! मेरी प्रजा पर अत्याचार हो रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अरे', 'शाबाश', 'ना-ना' तथा 'आह' शब्द क्रमशः विस्मय, हर्ष, घृणा तथा

शोक मनोभावों को व्यक्त कर रहे हैं। ये विस्मयादिबोधक शब्द हैं। इनका प्रयोग प्राय: वाक्य के शुरू में होता है तथा इन शब्दों के बाद जो चिह्न (!) लगता है, उसे विस्मयादि बोधक चिह्न कहते हैं।

अतएव जिन शब्दों से विस्मय, हर्ष, घृणा तथा शोक आदि मन के भाव प्रकट हों वे शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

कुछ मुख्य विस्मयादिबोधक शब्द इस प्रकार हैं:-

1. **हर्ष बोधक** = अहा ! वाह-वाह ! धन्य आदि।
2. **घृणा बोधक** = धिक् ! धत् ! थू-थू ! आदि।
3. **शोकबोधक** = उफ ! बाप रे ! राम-राम ! सी ! त्राहि-त्राहि आदि।
4. **विस्मयादिबोधक** = क्या ! ओहो ! हैं ! अरे !
5. **स्वीकारबोधक** = हाँ-हाँ ! अच्छा ! ठीक ! जी हाँ !
6. **चेतावनी बोधक** = सावधान ! होशियार ! खबरदार !
7. **भयबोधक** = हाय ! हाय राम ! उइ माँ ! बाप रे !
8. **आशीर्वादबोधक** = दीर्घायु हो ! जीते रहो ! खुश रहो !

पाठ 18

सड़क सुरक्षा-जीवन रक्षा

(आज स्कूल की प्रार्थना सभा में सड़क सुरक्षा के बारे में जानकारी देने के लिए प्रधानाचार्य ने ट्रैफिक पुलिस अधिकारी को आमंत्रित किया है। स्टेज पर सड़क यातायात नियमों तथा चिह्नों से संबंधित चार्ट लगे हुए हैं जिन्हें जानने के लिए सभी विद्यार्थी बहुत उत्सुकता से बैठे हुए हैं)

प्रधानाचार्य : बच्चो ! सड़क पर दिनोंदिन दुर्घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं जिसका मुख्य कारण है- सड़क पर लापरवाही से चलना तथा यातायात के नियमों का पालन न करना। आज हमारे बीच ट्रैफिक पुलिस अधिकारी मौजूद हैं। मैं इनका यहाँ पधारने के लिए स्वागत करता हूँ। ये आज आपको यातायात के नियमों के बारे में बतायेंगे।

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : बच्चो ! हमारा आज का विषय है- सड़क सुरक्षा - जीवन रक्षा अर्थात् हमें सड़क पर स्वयं भी सुरक्षित ढंग से चलना चाहिए तथा दूसरे की सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए। तभी हमारा जीवन भी सुरक्षित रहेगा। यही सड़क पर चलने का मूल मंत्र है। बच्चो ! यदि आपके मन में सड़क सुरक्षा से संबंधित कोई प्रश्न हो तो आप पूछ सकते हैं।

विद्यार्थी : सर ! हमें सड़क पर चलते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : हमें हमेशा सड़क के बायीं ओर ही चलना चाहिए। सड़क को भागकर पार नहीं करना चाहिए। बायीं व दायीं दोनों तरफ देखकर बड़ी सावधानी पूर्वक सड़क पार करनी चाहिए। सड़क के किनारे बने फुटपाथ पर ही चलना चाहिए।

विद्यार्थी : वाहन चलाना सीखने के लिए कितनी उम्र होनी चाहिए?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : वाहन चलाना सीखने के लिए कम से कम उम्र 16 साल होनी चाहिए। यदि साइकिल, स्कूटर या कार आदि चलाना सीखना हो तो खाली मैदान में ही सीखना चाहिए। सड़क पर तभी चलायें जब आपको पूरी तरह चलाना आ जाये, अन्यथा स्वयं या दूसरे के लिए यह खतरनाक हो सकता है। हाँ, वाहन तेज़ रफ़्तार से नहीं चलाना चाहिए।

चित्र-1

विद्यार्थी : क्या स्कूटर चालक के पीछे बैठे व्यक्ति के लिए भी हेलमेट पहनना ज़रूरी है ?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : स्कूटर चालक के साथ-साथ पीछे बैठे व्यक्ति के लिए भी हेलमेट पहनना ज़रूरी है।

विद्यार्थी : अक्सर देखा जाता है कि महिलायें हेलमेट नहीं पहनतीं। क्या उन्हें हेलमेट पहनने की छूट है ?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : निस्संदेह महिलाओं के लिए भी हेलमेट पहनना ज़रूरी है किन्तु इस नियम को आज तक अन्य नियमों की अपेक्षा कठोरता से लागू नहीं किया जा सका है। पर मुझे आशा है कि भविष्य में ट्रैफिक पुलिस इसे गंभीरता से लेगी।

विद्यार्थी : वाहन चलाते समय सेफ्टी बेल्ट लगाना क्यों अनिवार्य है ?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : बच्चो ! केवल वाहन चालक को ही नहीं, अपितु वाहन चालक के साथ आगे वाली सीट पर बैठे व्यक्ति को भी सेफ्टी बेल्ट का प्रयोग करना चाहिए, जिससे अचानक झटका लगने से होने वाली दुर्घटना से बचा जा सकता है।

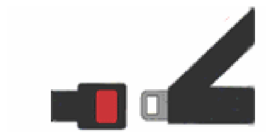

चित्र-2

विद्यार्थी : कौन से वाहनों पर काले रंग के शीशे व लाल रंग की बत्ती लगायी जा सकती है?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : विशेष अधिकार प्राप्त व्यक्ति ही ट्रैफिक विभाग से आज्ञा प्राप्त करके काले रंग के शीशे व वाहनों के ऊपर लाल बत्ती का प्रयोग कर सकते हैं। बिना आज्ञा के किसी को ऐसा नहीं करना चाहिए।

विद्यार्थी : यदि कोई वाहन चला रहा है और एक दम से उसके फोन की घंटी बजती है तो उसे क्या करना चाहिए ?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : वाहन चलाते समय मोबाइल नहीं सुनना चाहिए। यदि आपको सुनना ही है तो वाहन को सावधानीपूर्वक एक किनारे पर ले जाकर और रोककर ही सुनना चाहिए। अन्यथा चलते वाहन पर ऐसा करने से दुर्घटना हो सकती है।

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : अच्छा बच्चो ! क्या आपने कभी सड़क के किनारे लगे कुछ बोर्ड देखे हैं जिन पर कुछ संकेत दर्शाये होते हैं ?

चित्र-3

विद्यार्थी : सर! एक बोर्ड हमारे स्कूल के पास लगा है।

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : बिल्कुल ठीक ! (चित्र नम्बर 3 दिखाते हुए) स्कूल से कुछ कदम पहले बोर्ड पर बैग ले जा रहे बच्चे का चित्र बना होता है। बच्चो! यह चित्र दर्शाता है कि आगे स्कूल है, इसलिए वाहन की गति धीमी रखी जाये, क्योंकि छोटे बच्चे सड़क के नियमों से परिचित नहीं होते।

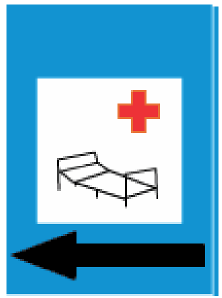

चित्र-4 (क)

चित्र-4 (ख)

विद्यार्थी : सर! अस्पताल तथा डिस्पैंसरी के बाहर भी बोर्ड पर एक चिह्न होता है। कृपया इसके बारे में बताइए।

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : (चित्र 4 दर्शाता हुआ)बच्चो! अस्पताल के पास बोर्ड पर हार्न का निशान बनाकर काटा गया होता है, जिसका अर्थ है कि यहाँ बिना मतलब के हार्न न बजाया जाए, क्योंकि हार्न की तेज़ आवाज़ मरीज़ों के आराम में रुकावट पैदा करती है।

विद्यार्थी : सर! आजकल पार्किंग की बहुत समस्या है। हमें वाहन कहाँ पार्क करना चाहिए?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : बिल्कुल ठीक प्रश्न किया। इसके लिए मैं आपको कुछ चित्र दिखाता हूँ।

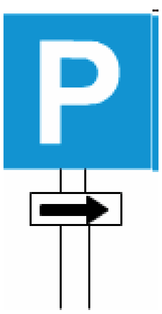

चित्र-5

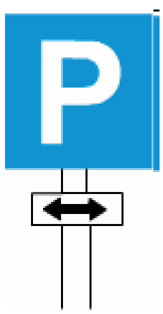

चित्र-6

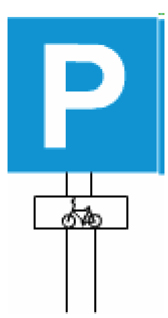

चित्र-7

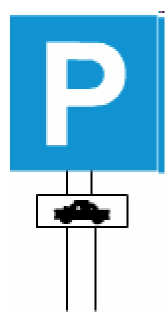

चित्र-8

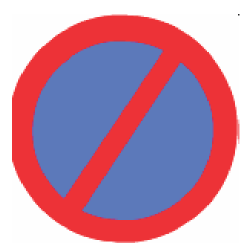

चित्र-9

देखो बच्चो! चित्र नम्बर 5 में 'P' के नीचे दायीं तरफ तीर का निशान दर्शाता है कि वाहन दायीं तरफ खड़ा करें। चित्र नम्बर 6 में 'P' के दोनों तरफ तीर का निशान यह दर्शाता है कि वाहन दोनों तरफ खड़ा किया जा सकता है। चित्र नम्बर 7 में 'P' के नीचे बना साइकिल का चित्र दर्शाता है कि यहाँ केवल

साइकिल खड़ी करें तथा चित्र 8 में 'P' के नीचे कार का चित्र दर्शाता है कि यहाँ केवल कार खड़ी करें। चित्र नम्बर 9 दर्शाता है कि यहाँ वाहन खड़ा न करें। बच्चो! हमें निश्चित स्थान पर ही अपने वाहन को खड़ा करना चाहिए। इससे किसी को भी असुविधा नहीं होती।

विद्यार्थी : सर चित्र नम्बर 10 में चौराहे में लाल-हरी बत्ती के पास सड़क पर बनी काली-सफेद लाइनें क्या दर्शाती हैं?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : (चित्र नम्बर 10 को दर्शाते हुए) बच्चो, इन काली-सफेद लाइनों को

चित्र-10

ज़ेबरा लाइनें कहा जाता है। पैदल चलने वालों को सदा ज़ेबरा लाइनों पर चलते हुए ही सड़क पार करनी चाहिए।

विद्यार्थी : सर! चित्र नम्बर 11 तथा चित्र नम्बर 12 में क्या दर्शाया गया है?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : (चित्र दर्शाते हुए)

बच्चो ! चित्र नंबर 11 में बोर्ड पर बना चिह्न दर्शाता है कि आगे सड़क ऊबड़-खाबड़ है इसलिए हमें ध्यान से चलना चाहिए ताकि कहीं ठोकर न लगे। चित्र नम्बर 12 में बना चिह्न दर्शाता है कि आगे खतरनाक झुकाव या कोई गड्ढा है इसलिए इस रास्ते से बचकर चलें।

चित्र-11

चित्र-12

विद्यार्थी : सर! चित्र 13,14 तथा 15 क्या दर्शाते हैं?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : चित्र 13 में बायीं ओर मुड़े हुए तीर के निशान का मतलब है कि सड़क के बायीं ओर मुड़ें तथा चित्र 14 में दायीं ओर मुड़े हुए तीर के निशान

चित्र-13

चित्र-14

चित्र-15

का मतलब है कि सड़क के दायीं ओर मुड़ें तथा चित्र 15 में गोलाकर में घूमते तीर के निशान दर्शाते हैं कि सामने गोल चक्कर है।

चित्र-16

विद्यार्थी : सर! चित्र 16 में 50 लिखा हुआ है, इसका क्या मतलब है?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : इसका आशय है कि इस सड़क पर वाहन की गति सीमा 50 निर्धारित है। इससे अधिक गति से वाहन यहाँ मत चलायें।

विद्यार्थी : सर! सड़क पर दुर्घटना से बचने के लिए हमें और किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : हमें सड़क पर खेलना अथवा उछलकूद नहीं करनी चाहिए। कूड़ा अथवा फलों के छिलके सड़क पर नहीं फेंकने चाहिए। यदि आप साइकिल चला रहे हैं तो मोड़ लेने से पूर्व हाथ से मुड़ने का संकेत दो। कभी भी दोनों हाथ छोड़कर साइकिल न चलायें। यदि आप एक समूह में साइकिल चला रहे हैं तो सड़क का काफी हिस्सा घेर कर समानांतर न चलें, अपितु एक-दूसरे के पीछे-पीछे चलें। यदि आप गाड़ी में हैं तो दूसरी गाड़ी से आगे केवल दायें हाथ की ओर से निकलें। हमें भारी गाड़ियों के बीच से भी नहीं निकलना चाहिए। अत: बच्चो! इस तरह हम यातायात के नियमों का पालन करते हुए अपने व दूसरे के जीवन की रक्षा सहज ही कर सकेंगे।

विद्यार्थी : धन्यवाद सर! हम सदैव यातायात के नियमों का पालन करेंगे। (इसके बाद सभी विद्यार्थी पंक्ति बनाकर अपनी-अपनी कक्षाओं में चले गये)

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਸੁਰੱਖਿਆ	=	सुरक्षा	ਜ਼ਰੂਰੀ	=	ज़रूरी
ਲਾਪਰਵਾਹੀ	=	लापरवाही	ਅਧਿਕਾਰ	=	अधिकार
ਮੌਜੂਦ	=	मौजूद	ਆਗਿਆ	=	आज्ञा
ਸੁਆਗਤ	=	स्वागत	ਅਵਾਜ਼	=	आवाज़
ਸੰਬੰਧਿਤ	=	संबंधित	ਚਿੰਨ੍ਹ	=	चिह्न
ਧਿਆਨ	=	ध्यान	ਮੰਤਰ	=	मंत्र
ਉਮਰ	=	उम्र	ਵਿਅਕਤੀ	=	व्यक्ति
ਸਿੱਖਣਾ	=	सीखना	ਪਿੱਛੇ	=	पीछे
ਖਤਰਨਾਕ	=	खतरनाक	ਸਮੱਸਿਆ	=	समस्या

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-**

ਖੱਬੇ ਪਾਸੇ	=	बायीं ओर	ਇਸ਼ਾਰਾ	=	संकेत
ਸੱਜੇ ਪਾਸੇ	=	दायीं ओर	ਜ਼ਰੂਰੀ	=	अनिवार्य
ਖੁਦ	=	स्वयं	ਕਤਾਰ	=	पंक्ति
ਬੇਸ਼ਕ	=	निःसंदेह	ਆਵਾਜਾਈ	=	यातायात

3. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) सड़क पर दिनों दिन बढ़ती दुर्घटनाओं का लेखक ने क्या कारण बताया है ?

(ख) सड़क सुरक्षा-जीवन रक्षा से लेखक का क्या अभिप्राय है ?

(ग) वाहन चलाते समय मोबाइल सुनना क्यों खतरनाक हो सकता है ?

(घ) निश्चित स्थान पर वाहन पार्किंग का क्या फायदा है ?

(ङ) चौराहे में लाल-हरी बत्ती के पास सड़क पर काली-सफेद लाइनें क्या दर्शाती हैं ?

4. **इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) वाहन चलाते समय सेफ्टी बेल्ट लगाना क्यों अनिवार्य है ?

(ख) कौन-से व्यक्ति अपने वाहनों पर काले रंग के शीशे व लाल रंग की बत्ती का प्रयोग कर सकते हैं ?

(ग) हमें सड़क पर दुर्घटना से बचने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

5. **शुद्ध करके लिखें :-**

पराथना	=	________	चारट	=	________	टैरेफिक	=	________
दाँयी	=	________	मंतर	=	________	सिखना	=	________
किन्तू	=	________	रफतार	=	________	मोबाईल	=	________

रूकावट = ________ मतबल = ________ निश्चित = ________

उबड़ खबड़= ________ रस्ते = ________ धन्यावाद = ________

6. **रिक्त स्थान में उचित संबंध बोधक शब्द भरें :-**

(क) इसे अन्य नियमों-----कठोरता से लागू नहीं किया जा सका है। (की ओर, की अपेक्षा)

(ख) आज्ञा -----किसी को ऐसा नहीं करना चाहिए। (के लिए, के बिना)

(ग) सड़क---काली-सफेद लाइनें लगायी गयी हैं। (के पास, पर)

(घ) हमें भारी गाड़ियों---से नहीं गुज़रना चाहिए। (के बीच, के बदले)

(ङ) चालक----बैठे व्यक्ति को भी हेलमेट पहनना चाहिए। (के बगैर, के पीछे)

7. **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें :-**

(क) स्कूल का सर्वप्रमुख अध्यापक **मुख्याध्यापक**

(ख) स्कूल में सुबह आयोजित की जाने वाली सभा __________

(ग) स्कूटर चलाने वाला व्यक्ति __________

(घ) विद्या प्राप्त करने वाला __________

(ङ) जो बीमार हो __________

(च) जहाँ बीमारों का इलाज हो __________

(छ) चौराहे में लाल बत्ती के पास सड़क पर लगी काली-सफेद लाइनें __________

8. **एक शब्द में अलग-अलग अक्षरों व मात्राओं के प्रयोग से कई शब्द बन सकते हैं। 'खतरनाक' शब्द से बनने वाले विविध शब्द कैसे बनते हैं। देखो।**

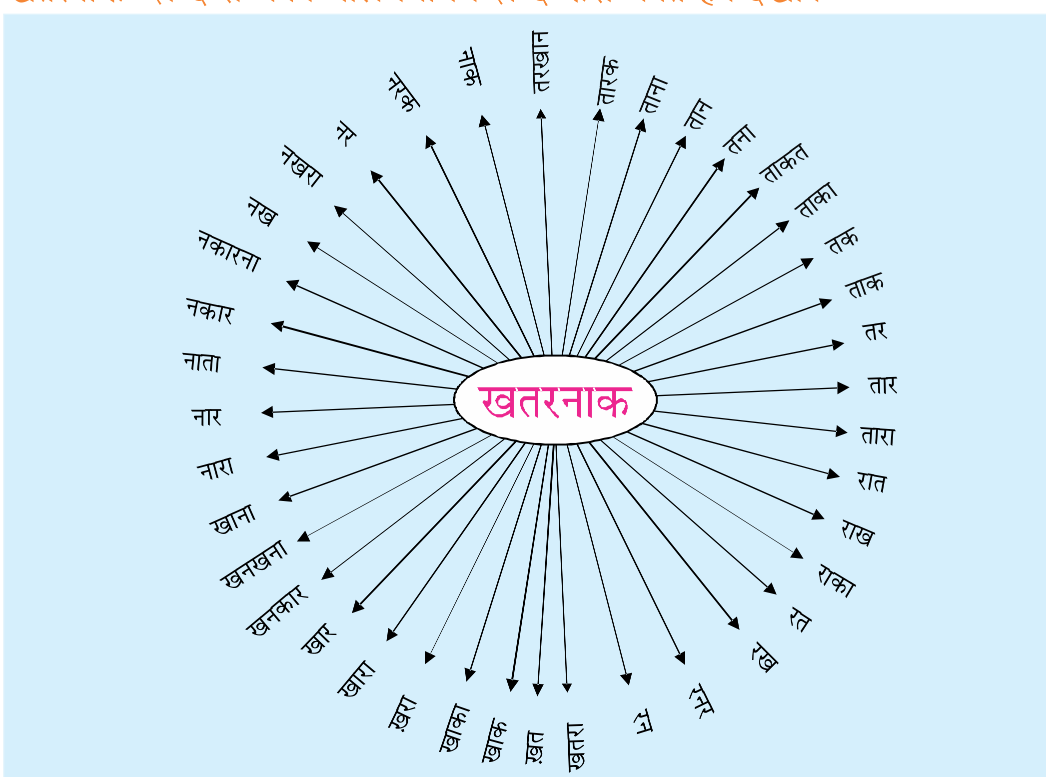

9. इस तरह निम्नलिखित शब्दों में अलग-अलग अक्षरों व मात्राओं के प्रयोग से नए शब्द बनायें :-

अचानक, जानकारी

इन्हें सदैव याद रखिये :

1. स्कूटर चालक के साथ-साथ पीछे बैठे व्यक्ति को भी बढ़िया किस्म का (आई.एस.आई. (ISI) निशान वाला) हेलमेट पहनना चाहिए।
2. महिलाओं को भी अपनी सुरक्षा हेतु हेलमेट पहनना चाहिए।
3. यदि लाल बत्ती हुई हो और उस समय किसी भी तरफ से कोई भी आता-जाता न दिखाई दे तो भी हमें लाल बत्ती पर खड़े रहना चाहिए।
4. केवल हरी बत्ती पर ही चलना चाहिए।
5. हमें हरी बत्ती दिखाई देने पर जल्दी लाँघने के लिए अपने वाहन की गति बढ़ा नहीं देनी चाहिए। इससे जल्दबाज़ी में दुर्घटना हो सकती है।
6. हमें हेलमेट सुरक्षा के लिए पहनना है न कि नियमों का पालन करने केलिए। हेलमेट होते हुए भी उसे सिर पर न पहनकर हाथ में पकड़ना या स्कूटर पर लटका कर रखना नियमों की अवहेलना के साथ-साथ बेवकूफी भी है।
7. हमें सड़क पर अपने वाहन से किसी से रेस नहीं लगानी चाहिए।
8. हमें अपना वाहन निश्चित जगह पर ही खड़ा करना चाहिए।
9. रात में साइकिल या दो पहिया वाहन चलाते समय गाढ़े रंग के कपड़ों का प्रयोग न करें।
10. बस या कार में यात्रा करते समय अपना सिर बाहर न निकालें या अपना हाथ बाहर निकालकर न हिलायें।
11. खड़े हुए या पार्क किए वाहन के पीछे से सड़क क्रॉस न करें।
12. स्कूल बस में चढ़ते हुए अनुशासन बनाये रखें तथा पंक्ति में चढ़ें।
13. सड़क पर नहीं खेलना चाहिए।
14. हमें कभी भी जानबूझ कर ट्रैफिक जाम नहीं करना चाहिए। इसमें अन्य लोगों को असुविधा होती है।
15. यदि सड़क पर हमारे पीछे कोई अम्बुलैंस हार्न बजाती आ रही हो तो उसे सावधानीपूर्वक जल्दी से रास्ता दे देना चाहिए।

पाठ 19

दोहावली

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय॥
काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब॥
विद्‌या धन उद्‌यम बिना, कहो जु पावे कौन।
बिना डुलाये ना मिले, ज्यों पंखे की पौन॥
पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय॥
बोली एक अमोल है, जो कोई बोलै जानि।
हिये तराजू तौलि कै, तब मुख बाहर आनि।।
बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर॥
निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटि छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करे सुभाय॥
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जो दिल खोजा आपनो, मुझसे बुरा न कोय॥
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप॥

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਬਾਣੀ	=	बानी	ਪੋਥੀ	=	पोथी
ਵਿੱਦਿਆ	=	विद्‌या	ਪੰਡਤ	=	पंडित
ਪੱਖਾ	=	पंखा	ਕੁਟੀ	=	कुटी

2. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) हमें कैसी वाणी बोलनी चाहिए ?

(ख) आज का काम कल पर क्यों नहीं टालना चाहिए ?

(ग) विद्या कैसे प्राप्त की जा सकती है ?

(घ) पोथी पढ़कर भी लोग विद्वान क्यों नहीं बन पाते ?

(ङ) हमें किस प्रकार के वचन बोलने चाहिए ?

(च) कवि ने निंदक को अपने समीप रखने के लिए क्यों कहा है ?

(छ) दूसरों में बुराई क्यों नहीं ढूँढ़नी चाहिए ?

(ज) कवि ने संयम बरतने के लिए क्यों कहा है ?

3. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) पठित दोहों में से तुम्हें सबसे अच्छा दोहा कौन-सा लगा ? क्यों ?

(ख) इन दोहों में से आपने जो सीखा, उसे अपने शब्दों में लिखें।

4. इन शब्दों के हिंदी रूप लिखें :-

सीतल	=	________	नियरे	=	________
परलय	=	________	निरमल	=	________
पौन	=	________	सुभाय	=	________
आखर	=	________	चूप	=	________

5. इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें :-

विद्या	=	________, ________
उद्यम	=	________, ________
पोथी	=	________, ________
पंथी	=	________, ________

पाठ 20

मैं जीती

पिताजी का तबादला जबलपुर हो गया था। वहाँ के नए स्कूल में जाने का मेरा पहला दिन था। मैं जाने में हिचक रही थी, क्योंकि वहाँ अभी मेरी कोई सहेली नहीं थी। मैं अभी कलेवे पर जमी थी कि मैंने माँ का चिल्लाना सुना, ''अनु, तुम्हें हुआ क्या है! स्कूल बस निकल जाएगी।''

''माँ-----मेरी टाँग.....''

''अनु, मैं तुम्हारी बात समझती हूँ। लंगड़ाने के कारण तुम्हें हिचक होती है। लेकिन तुम तो बहादुर लड़की हो। मुझे विश्वास है कि तुम्हारी सहपाठिनें तुम्हारी कठिनाई ज़रूर समझेंगी।''

''लेकिन माँ, मैं किसी को भी वहाँ नहीं जानती और वे मेरा मज़ाक बना सकती हैं। आप तो जानती ही हैं कि जब कोई मेरी हँसी उड़ाता है तो मुझे बहुत बुरा लगता है।''

''मेरे ख्याल में स्कूल में इतना बुरा नहीं होगा। यह लो, कुछ काजू की बर्फी। अपनी सहपाठिनों में बाँट कर खाना। अब चलो, पिता जी तुम्हें स्कूल पहुँचा आयेंगे।''

स्कूल पहुँचकर पिता जी मुझे प्रिंसिपल के ऑफिस में ले गये। कुछ देर बाद स्कूल का चपरासी मुझे मेरी कक्षा में पहुँचाने गया। रास्ते में मैंने देखा कि कुछ बच्चे मुझे देखकर हँस रहे हैं। मैं बहुत दु:खी थी। मैं कुछ ज्यादा ही लंगड़ाने लगी थी और मैं घर जाना चाहती थी। लेकिन माँ के शब्द याद कर मैं अपनी कक्षा तक जा पहुँची।

अध्यापिका कक्षा में पहले से ही उपस्थित थीं। उन्होंने सारी कक्षा के साथ मेरा परिचय कराया। ''अनुराधा, पहली पंक्ति में उस कुर्सी पर बैठ जाओ। तुम्हारे साथ बैठी लड़की का नाम माला है।''

''धन्यवाद मैडम,'' कहकर मैं जहाँ अध्यापिका ने कहा था, बैठ गई।

मुझे खुशी थी कि मेरी सीट माला के पास थी। वह सुन्दर थी और मुझे अच्छी लगी थी। जब आधी छुट्टी की घंटी बजी तो मैंने माला से पूछा, ''तुम कहाँ रहती हो?''

माला ने कोई उत्तर न दिया। मैंने सोचा कि उसने मेरा प्रश्न सुना ही नहीं है। मैं अपना प्रश्न दुहराने वाली थी कि लड़कियों का एक झुंड उसके इर्द-गिर्द इकट्ठा हो गया। वे सब बातें कर रही थीं और माला उन्हें बता रही थी कि उसने तैरना कैसे सीखा। मैं उसके ज़रा और पास खिसक आई और पूछा, ''माला, तुम तैरती हो?''

''हाँ।''

''मैं भी तैरना जानती हूँ।''

''अच्छा,'' कहकर वह अपनी सहेलियों की ओर मुड़ गई। वह मेरी उपेक्षा कर रही थी। मैंने अपने को अपमानित महसूस किया। दोपहर को घर पहुँची तो माँ का पहला प्रश्न था, ''अनु, आज स्कूल कैसा रहा?''

बरबस मेरे आँसू टपक पड़े। हिचकियाँ लेते हुए मैंने बताया, ''मैं स्कूल नहीं जाऊँगी। लड़कियाँ बोलती ही नहीं। सुबह कुछ बच्चे मुझे देख कर हँस भी रहे थे। कक्षा में मेरे साथ कोई लड़की नहीं बोली।''

माँ ने मुझे प्यार किया और कहा, ''अनु, रोओ मत! उन्हें कुछ दिन और मौका दो। अपना काम अच्छी तरह करो। सबसे अच्छा और मित्रतापूर्ण व्यवहार रखो और देखना कुछ ही दिनों में सब ठीक हो जायेगा।''

माँ के साथ बातें करके अगली सुबह मैं फिर स्कूल जाने के लिए तैयार हो गई। आज मैं जब कक्षा तक गई तो कोई हँसा नहीं। यह मुझे ज़रा अच्छा लगा।

पिछले दो घंटे खेल के थे। माला और उसकी सहेलियाँ बैडमिंटन खेलने जा रही थीं। मुझे दूसरों को खेलते देखना बड़ा अच्छा लगता है, इसलिये मैंने माला से पूछा, ''क्या मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ?''

''तुम वहाँ क्या करोगी?'' माला ने बड़ी रुखाई से कहा, ''तुम खेल तो सकती नहीं।''

''मैं खेल तो नहीं सकती लेकिन मैं शटलकॉक उठा सकती हूँ,'' मैंने ज़रा जोर देकर कहा।

माला ने एक क्षण सोचा फिर कहा, ''आज नहीं। आज हम मैच खेलने जा रहे हैं, किसी और दिन। अच्छा बॉय!''

वह अपना रैकेट उठाकर चलती बनी। एक-एक करके सब लड़कियाँ कक्षा से चली गयीं। मैं वहाँ अकेली और उदास बैठी रही। मैंने पुस्तक पढ़ने का प्रयत्न किया, लेकिन मन नहीं लगा।

उस रात भोजन के समय, मैं पिता जी को वह सब बता रही थी, जो उस दिन स्कूल में हुआ था।

''अनु, तुम्हारी गेम्स टीचर कैसी हैं?''

''मुझे पता नहीं, क्योंकि मैं खेलों के लिए नहीं जाती।''

''लेकिन तुम तो अच्छी तैराक हो। खेलों के घंटे में तुम तैरने क्यों नहीं जातीं? तुम्हें मज़ा आयेगा। मैं तुम्हारी अध्यापिका से कहूँगी कि वह तुम्हें विशेष अनुमति दे दें,'' माँ बोली।

''यह बड़ा अच्छा होगा। ओह माँ, सच?'' मैं खुश हो गई।

अगले दिन मैं अपने तैरने की पोशाक और माँ का पत्र स्कूल ले गई। जैसे ही मैं कक्षा में पहुँची, मैंने पत्र अपनी अध्यापिका को दे दिया। अध्यापिका इस बात पर तुरंत राज़ी हो गई।

खेल के घंटे में सदा की तरह सब खेलने चले गये। उन्होंने मेरी कोई चिंता नहीं की। मुझे बुरा तो लगा मगर मैंने अपने तैरने की पोशाक उठाई और तरणताल पर चली गई।

पानी को देखने से मुझे शान्ति महसूस होती है। मैं ताल के किनारे जाकर खड़ी हो गई।

मैंने पानी में बुलबुले उठते देखे और सोचने लगी कि क्या हो सकता है। तभी मुझे कुछ बाल नज़र आये। दो हाथ अंधाधुंध पानी में छपा छप कर रहे थे। ''एक लड़की डूब रही है।'' मैं चारों ओर देखकर चिल्लाई। लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया। इसलिए मैं पानी में कूद गई।

मैं उसके पास पहुँची ही थी कि वह पानी में नीचे चली गई। मैं तेज़ी से आगे बढ़ी और उसके बाल पकड़ लिये। लेकिन उसके बाल छोटे-छोटे थे सो मेरे हाथ से निकल गये और वह गायब हो गई।

मैंने डुबकी मारी और हाथ बढ़ाकर उसकी कमीज़ पकड़ ली। तभी उसने मेरा हाथ पकड़ लिया।

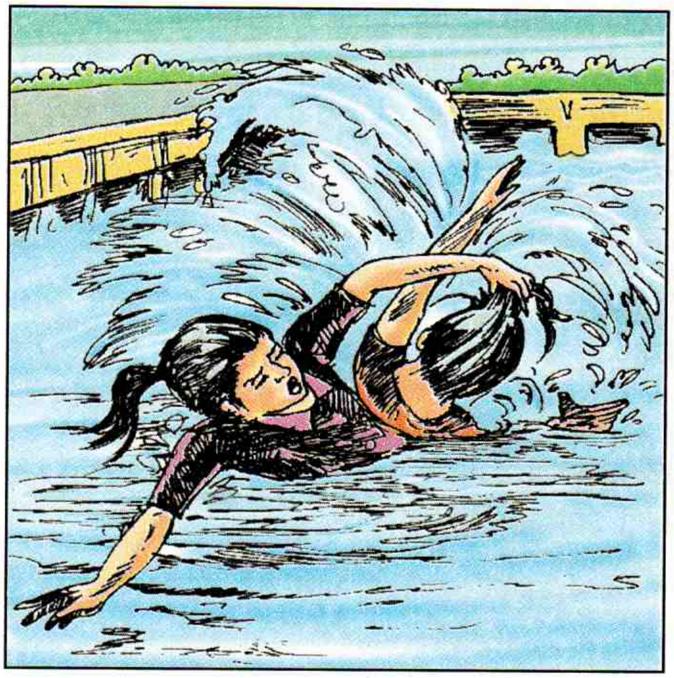

मुझे लगा कि जैसे मुझे भी कोई नीचे खींच रहा है। मैं चिल्लाई, ''मदद, कोई मदद करो!'' और अपना पूरा जोर लगाकर टाँगें मारने लगी। उसकी कमीज़ मेरे हाथ से फिसल गई व उसकी पकड़ भी ढीली हो गई और वह बहती हुई दूर जाने लगी। मैंने तैर कर उसका पीछा किया, फिर उसके बाल पकड़ लिये और तट की ओर खींचने लगी। जब हम पानी फिल्टर करने वाले पाइप के पास पहुँचे तो मैंने अपने खाली हाथ से उसे पकड़ लिया। फिर मैंने डूबती लड़की को खींचकर दीवार के साथ लगा दिया। मैं बची ताकत से चिल्लाई, ''मदद, मदद करो।''

दो लड़कियाँ भागती हुई आयीं। मुझे ताल में देखकर एक ने पूछा, ''अनुराधा, क्या हुआ?''

''माला, इस लड़की को बाहर निकालने में मेरी मदद करो। माला तुरन्त झुकी और अचरज से कहा,''अरे, यह तो मेरी बहन कला है।'' उसने ज़मीन में लेटकर अपना हाथ फैला कर कला को ऊपर खींचना चाहा। लेकिन वह उसे खींच न सकी। मैं भी उसकी कोई खास मदद नहीं कर सकती थी, क्योंकि कला काफी भारी थी। माला ने चिल्लाकर अपनी सखी को बुलाया और कहा, ''नीला, ज़रा मेरी मदद करो।''

माला और नीला ने मिलकर कला को ऊपर खींचा और ज़मीन पर लिटा दिया।

''नीला दौड़कर डॉक्टर को बुला लाओ। जल्दी करो।'' माला चिल्लाई।

जैसे ही मैं ताल से बाहर निकली माला ने मेरी तरफ ऐसे देखा कि जैसे यह मेरा ही कसूर हो, फिर पूछा, ''तुमने कला को धक्का क्यों दिया?''

उसके शब्दों से मुझे बहुत दु:ख हुआ। ''मैंने उसे धक्का नहीं दिया। जब मैं यहाँ पहुँची तो वह डूब रही थी,'' मैंने रुखाई से कहा।

थोड़ी देर में डॉक्टर भी आ गया। उसने कला की प्राथमिक चिकित्सा की और कंबल में लपेट दिया। कुछ देर बाद कला ने आँखें खोलीं। तब तक प्रिंसिपल भी वहाँ आ गई थीं। एक चपरासी कला के लिये एक गिलास गर्म दूध ले आया। प्रिंसिपल ने मेरी ओर मुड़कर पूछा, ''अनुराधा, क्या हुआ था?''

''मैं ताल पर तैरने के लिये पहुँची तो मैंने कला को डूबते देखा।''

''लेकिन मैडम........'' इससे पहले कि माला कुछ कह सकती, कला ने प्रिंसिपल की साड़ी खींचकर मेरी ओर संकेत किया और कमज़ोर आवाज़ में कहा, '' मैडम, इस लड़की ने मुझे बचाया है।''

प्रिंसिपल ने मेरी पीठ थपथपाई । कहा, ''तुमने बहुत बहादुरी दिखाई। जाओ, जाकर अपने कपड़े बदल लो, नहीं तो सर्दी लग जायेगी।''

मैंने कपड़े बदल लिये। मैं आकर कला के पास बैठ गई। मेरी टाँगों में दर्द हो रहा था, इसलिए मैं उन्हें मल रही थी।

माला मेरे पास आई और बोली, ''तुम थक गई होगी। मैं तुम्हारी मदद करूँ,'' यह कहकर वह मेरी टाँगों को मसलने लगी। ''अब तुम्हें ठीक महसूस हो रहा है न?''

''मैं ठीक हूँ और कला भी अब अच्छी है,'' मैंने कहा।

''यदि तुम न होती तो वह डूब ही गई होती,'' माला बोली।

फिर हम सब स्कूल के बाद साथ-साथ घर गये।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਅਧਿਆਪਕਾ	=	अध्यापिका	ਪੱਤਰ	=	पत्र
ਲੜਕੀਆਂ	=	लड़कियाँ	ਤੈਰਾਕ	=	तैराक
ਬੈਡਮਿੰਟਨ	=	बैडमिंटन	ਪੁਸ਼ਾਕ	=	पोशाक
ਸ਼ਟਲ ਕਾਕ	=	शटल कॉक	ਬੁਲਬੁਲੇ	=	बुलबुले

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-**

ਬਦਲੀ	=	स्थानांतरण, तबादला	ਵਤੀਰਾ	=	व्यवहार
ਸੇਵਾਦਾਰ	=	चपरासी	ਅੰਨ੍ਹੇਵਾਹ	=	अन्धाधुन्ध
ਸ਼੍ਰੇਣੀ	=	कक्षा	ਗੁੰਮ	=	गायब

3. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-**

(क) अनुराधा को क्या बुरा लगता था?

(ख) अनुराधा की माँ ने क्या कहकर उसका हौसला बढ़ाया?

(ग) अनु में क्या गुण था?

(घ) अनु ने किसे डूबने से बचाया?

(ङ) माला ने क्या कहकर अनु का धन्यवाद किया?

4. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) अनु को शुरू में माला का व्यवहार कैसा लगा?

(ख) अनु ने कला को कैसे बचाया?

(ग) इस कहानी का शीर्षक है 'मैं जीती'। क्या आपको यह शीर्षक ठीक लगा? क्यों?

5. **इन मुहावरों के अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-**

आँसू टपकाना = रोना ____

मज़ाक बनाना = हँसी उड़ाना ____

पीठ थपथपाना = शाबाशी देना ____

6. **वचन बदल कर वाक्य पुनः लिखें :-**

1. बच्चा मुझे देखकर हँस रहा है।

   ____

2. वह मेरी उपेक्षा कर रही थी।

   ____

3. लड़की भागती हुई आई।

   ____

7. **कहानी में कुछ शब्द अंग्रेज़ी भाषा के हैं। पाँच शब्द चुनकर उन्हें हिंदी में लिखें :-**

__________ __________

__________ __________

____

8. शुद्ध करके लिखें :-

परीचै	=	______	महिसूस	=	______
बहादूर	=	______	चिलाना	=	______
लड़कीयाँ	=	______	जमीन	=	______
अधियापिका	=	______	अनूमली	=	______
अनूमती	=	______	स्कुल	=	______
चिकीत्सा	=	______	आवाज	=	______
कमजोर	=	______	इरद-गिरद	=	______

9.(i) **'इत' शब्दाँश लगाकर नये शब्द बनायें :-**

उपेक्षा + इत = उपेक्षित

परिचय + इत = ______

चिन्ता + इत = ______

(ii) **'तैराक' शब्द के अंत में 'आक' शब्दांश लगा है। इसी प्रकार अंत में 'आक' शब्दांश लगाकर नये शब्द बनायें।**

______ ______

______ ______

______ ______

10. जीवन में कभी हार नहीं माननी चाहिये। कितनी भी विपरीत परिस्थितियाँ आयें उसका सामना अपनी बुद्धिमत्ता, होशियारी, लगन और परिश्रम से करना चाहिये। इस कहानी में ऐसा कौन-सा पात्र है जिसने अनु का विश्वास बढ़ाया है ?

11. क्या आपके जीवन में भी ऐसा कोई व्यक्ति है, जो सदा आपका विश्वास बढ़ाता है ? उस पर चार-पाँच वाक्य लिखें।